यूनियन धारा
Union Dhara

जिल्द. 51, सं. 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2026
VOL.51,No.1,Mumbai,January-March,2026

TAKING STRIDES IN SPORTS

खेल एवं खेल भावना विशेषांक

Special issue on Sports and Sportsmanship

गृह पत्रिका • House Magazine of

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank of India
Good people to bank with

गृह पत्रिका • House Magazine of
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India
अच्छे लोग, अच्छा बैंक Good people to bank with
खेल एवं खेल भावना विशेषांक
Special issue on Sports and Sportsmanship

यूनियन धारा Union Dhara
प्रकाशन तिथि- 14-05-2026
जिल्द. 51, सं. 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2026
VOL. 51, No. 1, Mumbai, January-March, 2026

अनुक्रमणिका

परिदृश्य	01
संपादकीय	03
शिखर की ओर / शुभमस्तु / हमें गर्व है	04
राष्ट्रीय पहचान और एकता पर खेलों का प्रभाव	05
क्रिकेट: भारत में एक उत्सव	07
शारीरिक फिटनेस के लिए खेलकुद	09
यूनियन धारा एवं यूनियन सृजन संवाददाता समीक्षा बैठक सह सम्मेलन	11
खेलों में मानसिक स्वास्थ्य	13
कविता: खेल और खेल भावना	15
टीम स्पिरिट और खेल भावना की शक्ति	16
पैरालंपिक खेल: अदम्य साहस, अस्तित्व और विजय की गाथा	17
अंतर बैंक हिंदी निबंध प्रतियोगिताओं के विजेता	18
खेल और खेल की भावना	19
कविता: खेल में मानसिक स्वास्थ्य	20
सीएसआर एवं इम्पावर हर	21
पैरा-स्पोर्ट्स और समावेशन की ओर यात्रा	23
एक महिला खिलाड़ी के रूप में मेरे अनुभव	25
A Proud Legacy in Motion	26
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के खेल सितारे	29
From Stranger to 'Pappu Bhai': A Cricket Story	32
The Influence of Sports on National Identity and Unity	33
Poem: The Invisible Thief	35
Beyond the Boundary...	36
सेंटर स्प्रेड	39
Rise of Women's Sports	41
Winning Trust Beyond the Playing Field	43
Poem: Ink between the lines	44
Ethics in Sports	45
The Rise of E-Sports	47
प्रतियोगिता- 177	50
Futuristic Sports Experience	51
Poem: An Unforgettable Victory	53
From Playground to Profit	54
Poem: She is Creative; not Created	56
उद्घाटन	57
फेस इन यूबीआई क्राउड	59
Derivatives in Details	61
विभिन्न जागरूकता अभियान	65
कारोबारिक समीक्षा बैठक का आयोजन	66
अतीत के झरोखों से	67
उच्च प्रबंधन द्वारा खेल गतिविधियों को प्रोत्साहन	71
समाचार	72
आपकी पाती	80

ई-मेल E-mail: uniondhara@unionbankofindia.bank.in | gayathri.ravikiran@unionbankofindia.bank.in
Tel.: 022-41829288 | Mob.: 9849615496

यूनियन धारा में प्रकाशित लेख आदि में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं और प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
The views expressed in the articles published in Union Dhara are solely that of the author and do not necessarily reflect the views of the management.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित।
Published by Union Bank of India for internal circulation

गृह पत्रिका • House Magazine of

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया — अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank of India — Good people to bank with

खेल एवं खेल भावना विशेषांक

Special issue on Sports and Sportsmanship

यूनियन धारा
Union Dhara

प्रकाशन तिथि- 14-05-2026

जिल्द. 51, सं. 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2026

VOL.51,No.1,Mumbai,January-March,2026

मुख्य संरक्षक / Chief Patron

आशीष पाण्डेय Asheesh Pandey
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ Managing Director & CEO

संरक्षक / Patrons

नितेश रंजन Nitesh Ranjan
कार्यपालक निदेशक Executive Director

एस. रामसुब्रमणियन S. Ramasubramanian
कार्यपालक निदेशक Executive Director

संजय रुद्र Sanjay Rudra
कार्यपालक निदेशक Executive Director

अमरेश प्रसाद Amresh Prasad
कार्यपालक निदेशक Executive Director

मुख्य संपादक / Chief Editor

सुरेश चन्द्र तेली Suresh Chandra Teli
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं) Chief General Manager (HR)

संपादकीय सलाहकार / Editorial Advisors

ए. के. विनोद A.K. Vinod
मुख्य महाप्रबंधक Chief General Manager

अरुण कुमार Arun Kumar
मुख्य महाप्रबंधक Chief General Manager

संपादकीय सलाहकार / Editorial Advisors

सत्यबान बेहेरा Satyaban Behera
महाप्रबंधक General Manager

अम्बरीष कुमार सिंह Ambarish Kumar Singh
उप महाप्रबंधक Dy. General Manager

विवेकानंद Vivekanand
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.) Asst. General Manager (OL)

संपादक / Editor

गायत्री रवि किरण Gayathri Ravi Kiran
मुख्य प्रबंधक (रा.भा.) Chief Manager (OL)

संपादकीय सहयोग / Editorial Support

जागृति उपाध्याय Jagriti Upadhyay
सहायक प्रबंधक (रा.भा.) Asst. Manager (OL)

मोहित सिंह ठाकुर Mohit Singh Thakur
सहायक प्रबंधक (रा.भा.) Asst. Manager (OL)

परिदृश्य
PERSPECTIVE

प्रिय यूनियनाइट्स,

1. यूनियन धारा के 'खेल एवं खेल भावना' विशेषांक के माध्यम से आप सबके साथ जुड़कर मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। निरंतर परिवर्तनशील और चुनौतीपूर्ण कार्यक्षेत्र में पेशेवर कौशल के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व को भी सुदृढ़ करना आवश्यक हो जाता है।

2. यूनियन धारा के इस अंक को 'खेल एवं खेल भावना' विषय को समर्पित करने हेतु मैं संपादकीय टीम को बधाई देता हूँ। बैंक अपने कर्मचारियों के सर्वांगीण विकास एवं खेल संस्कृति को बढ़ावा देने में विश्वास रखता है। यूनियनाइट्स के रूप में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन से बैंक को ख्याति दिलाने वाले अपने स्टाफ सदस्यों पर हमें गर्व है। खेल प्रतिभा के प्रोत्साहन के माध्यम से बैंक न केवल स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और टीम भावना को सशक्त करता है, बल्कि अपने कर्मचारियों के संतुलित, सकारात्मक और सर्वांगीण विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि भी करता है।

3. मैं पदोन्नति प्राप्त सभी साथियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। यह उपलब्धि आपके निरंतर परिश्रम, समर्पण और उत्कृष्ट कार्य निष्पादन का परिणाम है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी अपनी नई भूमिका में बैंक की अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे और संगठन की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

4. मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु बैंक का कार्यनिष्पादन उत्साहवर्धक रहा है। लेखापरीक्षित वित्तीय परिणाम हमारी विभिन्न टीमों की सामूहिक दक्षता, अनुशासन और प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करते हैं। इस सराहनीय उपलब्धि के लिए मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ। बैंक ने प्रमुख कार्यनिष्पादन मानकों में सकारात्मक परिणामों के साथ ₹18,697 करोड़ का अब तक का सर्वाधिक निवल लाभ अर्जित किया है। विशेष रूप से, सकल एनपीए एवं निवल एनपीए दोनों में कमी दर्ज

Dear Unionites,

1. I am extremely delighted to connect with all of you through this special issue of Union Dhara dedicated to 'Sports and Sportsmanship'. In an increasingly dynamic and challenging work environment, it is essential that we strengthen our professional skills as well as our personality.

2. I congratulate the editorial team for dedicating this issue of Union Dhara to 'Sports and Sportsmanship." Bank believes in promoting sports culture and the holistic development of our employees. As Unionites we take immense pride in our staff members who have brought glory to the Bank by displaying their talent in national and international sports events. By actively encouraging and nurturing sporting talent, the Bank not only strengthens values such as teamwork and healthy competition, but also reaffirms its belief in giving utmost priority to the balanced, positive, and all round development of its employees.

3. I extend my heartfelt congratulations to all the promotees. This achievement is the result of your consistent hard work, dedication, and excellent performance. I am confident that all of you will live up to the expectations of the Bank in your new roles and make a significant contribution to the progress of the organization.

4. I am pleased to share that the Bank has delivered an encouraging performance for the financial year 2025-26. The audited financial results reflect the collective efficiency, discipline, and commitment of our teams across the organization. I extend my sincere appreciation and congratulations to all of you for this commendable achievement. The Bank has reported an all-time high net profit of ₹18,697 crore, supported by positive outcomes across key performance parameters. Notably, both GNPA and NNPA levels have declined, reflecting

हुई है, जो आस्ति गुणवत्ता में सतत सुधार एवं विवेकपूर्ण जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को दर्शाती है।

5. बाजार की धारणाएँ समय-समय पर बदल सकती हैं, अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने कार्यनिष्पादन के वस्तुनिष्ठ आकलन एवं सुदृढ़ीकरण पर केंद्रित रहें। निवल ब्याज आय का सीधा संबंध निधियों के प्रभावी संवितरण एवं प्रबंधन से है। दीर्घकालिक विकास के लिए एक स्वस्थ एवं संवहनीय कारोबारी ढांचा बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारी कार्यनीतिक दिशा के अनुरूप, विभिन्न स्थानों पर इकोसिस्टम बैंकिंग हब स्थापित किए गए हैं। ये हब बैंक के कासा जमा में वृद्धि के साथ-साथ प्रति ग्राहक उत्पाद में बढ़ोत्तरी लाएंगे और हमारे उत्पादों के प्रति विक्रय को बढ़ावा देते हुए ग्राहकों के साथ बैंक के जुड़ाव को और मज़बूत बनाएंगे।

6. बैंकर के रूप में हमें विश्वास अर्जित करते हुए प्रत्येक लेन-देन में लाभप्रदता सुनिश्चित करनी चाहिए। नैतिक आचरण हमारे सभी कार्यों का मार्गदर्शन करे, जिससे पारदर्शिता, निष्पक्षता और ग्राहकों को मूल्य मिले। प्रत्येक कारोबारी निर्णय वाणिज्यिक दृष्टि से व्यवहार्य हो तथा विवेकपूर्ण जोखिम प्रबंधन और जिम्मेदार मूल्य निर्धारण पर आधारित हो। संवहनीय प्रथाओं के माध्यम से हम अच्छे प्रतिफल अर्जित करते हुए दीर्घकालिक विकास सुनिश्चित कर पाएंगे। सुदृढ़ अनुपालन लाभप्रदता का आधार है। नैतिकता, लाभप्रदता, संवहनीयता और अनुपालन के समन्वय से हम अपने बैंक और उसके भविष्य को सशक्त बनाते हैं।

7. मैं आप सभी से यह अपेक्षा करता हूँ कि दैनिक जिम्मेदारियों से आगे बढ़कर हमारे बैंक को और अधिक सशक्त बनाने हेतु कारगर प्रयास करें। प्रत्येक छोटा सुधार, अतिरिक्त प्रयास और ईमानदार निर्णय न केवल हमारे संगठन की नींव को मजबूत करता है, बल्कि देश की आर्थिक प्रगति में भी अपना योगदान देता है। आइए, हम सब मिलकर ऐसे मूल्य और मानक स्थापित करें, जिन पर हमें गर्व हो और आने वाली पीढ़ियाँ भी प्रेरणा प्राप्त करें।

शुभकामनाओं सहित

(आशीष पाण्डेय)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

sustained improvement in asset quality and prudent risk management practices.

5. While market perceptions may fluctuate, it is essential that we remain focused on objectively assessing and strengthening our own performance. Net Interest Income is directly linked to the effective deployment and management of funds. Therefore, maintaining a healthy and sustainable business mix is critical for long-term growth. In line with our strategic direction, ecosystem banking hubs have been established across various locations. These hubs will increase Bank's CASA deposits as well as increase the per customer product and will help in further deepening the Bank's engagement with customers while boosting cross selling of our products.

6. As bankers, we must earn trust while ensuring profitability in every transaction we undertake. Ethical conduct should guide all actions, delivering transparency, fairness, and value to customers. Each business decision must be commercially viable, supported by prudent risk management and responsible pricing. Sustainable practices help us secure long term growth while earning good returns. Strong compliance is the foundation of profitability. By aligning ethics, profitability, sustainability, and compliance, we strengthen our bank and its future.

7. I expect all of you to go beyond routine responsibilities and make tangible efforts to further strengthen our Bank. Every small improvement, extra effort, and honest decision not only reinforces the foundation of our organization but also contributes to the nation's economic progress. Let us all work together to establish such values and standards that we can take pride in, and from which future generations may also draw inspiration.

With best wishes,

(Asheesh Pandey)
Managing Director & CEO

संपादकीय
EDITORIAL

प्रिय पाठकगण,

हमें यूनियन धारा का 'खेल और खेल भावना' विशेषांक प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है।

आधुनिक बैंकिंग परिवेश निरंतर परिवर्तनशील है, जहाँ लक्ष्य-केन्द्रित कार्यप्रणाली, समय-सीमा में कार्य-निष्पादन और बढ़ती प्रतिस्पर्धा प्रमुख विशेषताएँ हैं। ऐसे परिदृश्य में संतुलित और स्वस्थ कार्य-जीवन बनाए रखने का महत्व और भी बढ़ जाता है। खेल एवं फिटनेस मानसिक तनाव कम करने, शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं। ये टीमवर्क, अनुशासन, समन्वय और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना भी विकसित करते हैं, जो संगठन को सुदृढ़ बनाते हैं।

हमारे बैंक में विभिन्न स्तरों और भूमिकाओं में कार्यरत कर्मचारियों को खेल गतिविधियों एवं आयोजनों के माध्यम से आपसी संवाद बढ़ाने, सहयोग सुदृढ़ करने और समेकित कार्यसंस्कृति विकसित करने के अवसर प्राप्त होते हैं। ये पहल कर्मचारी सहभागिता को बढ़ावा देने के साथ-साथ संगठनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होती हैं। समय-समय पर आयोजित खेल प्रतियोगिताएँ, फिटनेस पहल और वेलनेस कार्यक्रम इस प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब हैं, जो कार्यकुशलता बढ़ाने के साथ-साथ सकारात्मक कार्य वातावरण, आपसी विश्वास और सहयोग को भी सुदृढ़ करते हैं। बैंक से जुड़े पूर्व एवं वर्तमान खिलाड़ियों के योगदान को सम्मानित करते हुए 'खेल एवं खेल भावना' विशेषांक प्रस्तुत करना हमारे लिए गौरव का विषय है। हम इस अवसर पर सभी लेखकों तथा संपादकीय समिति के सदस्यों के बहुमूल्य योगदान के प्रति अपनी सराहना व्यक्त करना चाहते हैं, जिनके प्रयास और समर्पण से यह विशेषांक एक सार्थक और समृद्ध संकलन बन सका है।

हम **श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक** के प्रति विशेष आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने लेखों के चयन तथा इस अंक की समग्र विषय-वस्तु को अंतिम रूप देने में अपने अनुभवपूर्ण मार्गदर्शन से महत्वपूर्ण योगदान दिया। हम **सुश्री रूबीना परवीन, मुख्य प्रबंधक तथा श्री रायन एडविन डि'सूजा, वरिष्ठ प्रबंधक** के प्रति भी हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग से इस विशेषांक की विषय-वस्तु समृद्ध हुई है।

हमें विश्वास है कि यह विशेषांक आपको उपयोगी एवं प्रेरणादायी लगेगा। आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीया

(गायत्री रवि किरण)

Dear Readers,

We are delighted to present the 'Sports and Sportsmanship' special issue of Union Dhara.

The modern banking environment is rapidly evolving, driven by targets, deadlines, and rising competition. In this context, maintaining a healthy work-life balance is increasingly important. Sports and fitness help manage stress, promote physical health, and maintain mental balance. They also build teamwork, discipline, coordination, and a spirit of healthy competition, all vital for a strong organization.

At our Bank, employees across various levels and roles gain valuable opportunities through sports activities and events to enhance interaction, strengthen collaboration, and build an integrated work culture. These initiatives promote employee engagement and contribute to achieving organizational objectives. The sports competitions, fitness initiatives, and wellness programs organized from time to time reflect this commitment, enhancing efficiency while fostering a positive work environment, mutual trust, and teamwork. It is a matter of pride for us to present this special issue on 'Sports and Sportsmanship' in recognition of the contributions of both past and present sportspersons associated with the Bank. We also take this opportunity to acknowledge with appreciation the valuable contributions of all writers and members of the Editorial Committee, whose efforts and dedication have made this special issue a meaningful and enriching compilation.

We extend our special thanks to **Shri Ambarish Kumar Singh, DGM**, for his insightful guidance in the selection of articles and in shaping the overall content of this edition. We would also like to express our sincere thanks to **Ms. Rubeena Parveen, Chief Manager and Shri Ryan Edwin D'Souza** for their support, which has enriched the content of this special issue.

We are confident that you will find this special issue both informative and inspiring. We look forward to receiving your valuable suggestions.

Yours sincerely,

(Gayathri Ravi Kiran)

शिखर की ओर

मुख्य महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई

सर्वेश रंजन

महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई

सी. विकास बाबू

प्रांजल बाजपेयी

उप महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई

अमरनाथ गुप्ता

के. बैरेगौडा

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं

शुभमस्तु

के. भास्कर राव
मुख्य महाप्रबंधक

एस. श्रीनिवास
उप महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं

हमें गर्व है

श्री प्रभात कुमार अम्बस्ता, मुख्य प्रबंधक, एसएएमबी मुंबई को सीबीआई में प्रतिनियुक्ति के दौरान जांच कार्य में उनके विशिष्ट एवं सराहनीय योगदान के लिए केंद्रीय गृह मंत्री दक्षता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। श्री अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार के कर कमलों से श्री प्रभात कुमार अम्बस्ता ने पुरस्कार प्राप्त किया। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को उनकी इस उपलब्धि पर गर्व है और हम उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं।

सीमाओं से परे साहस, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास की जीवंत मिसाल कायम करते हुए सुश्री छोंजिन आंगमो ने अर्जेंटीना के माउंट अकेनकागुआ, सियाचिन कुमार पोस्ट, माउंट एवरेस्ट और माउंट किलिमंजारो जैसी विश्व की सबसे ऊँची एवं चुनौतीपूर्ण चोटियों को फतह किया। वे इन चारों दुर्गम शिखरों पर पहुँचने वाली एकमात्र दृष्टिबाधित महिला हैं। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को उनकी इस असाधारण यात्रा और हर उस सपने का समर्थन करने पर गर्व है।

राष्ट्रीय पहचान और एकता पर खेलों का प्रभाव

खेल केवल शारीरिक गतिविधि या मनोरंजन नहीं हैं। वे एक शक्तिशाली सामाजिक माध्यम हैं, जो किसी राष्ट्र की पहचान को जीवंत बनाते हैं और लोगों में गहरी एकता की भावना जगाते हैं। प्राचीन काल से ही खेल मानव समाज का अभिन्न हिस्सा रहा है। ग्रीस में 776 ईसा पूर्व शुरू हुए ओलंपिक खेल विभिन्न देशों-प्रान्तों को एक मंच पर लाते हैं, जहां प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी होता है। आधुनिक युग में खेल राष्ट्रों की पहचान का प्रतीक बन गए हैं। ब्राजील की फुटबॉल, अमेरिका की बास्केटबॉल या जापान की जूडो – जैसे खेल उस देश की राष्ट्रीय छवि को परिभाषित करते हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में खेल एकता का सबसे मजबूत सूत्र साबित हुए हैं। खेल के मैदान पर भाषा, धर्म, जाति और क्षेत्र आदि की दीवारें आसानी से गिर जाती हैं। जब 1983 में भारत ने क्रिकेट विश्व कप जीता तो भारत के लिए वह मात्र एक खेल में जीत नहीं था, बल्कि खेल के क्षेत्र में एक राष्ट्रीय जागरण था। उस समय देश आर्थिक संकट, साम्प्रदायिक तनाव और राजनीतिक अस्थिरता से गुजर रहा था। कपिल देव की अगुवाई वाली टीम की जीत ने पूरे देश को एक सूत्र में पिरो दिया। लाखों लोग उस जीत का जश्न मनाने के लिए सड़कों पर उतर आए। इसी तरह 2011 विश्व कप की जीत और 2023 विश्व कप की मेजबानी ने भी राष्ट्रीय गर्व को नई ऊंचाई दी।

खेल राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करते हैं क्योंकि वे समान मूल्यों – संघर्षों, अनुशासन, और टीम वर्क को बढ़ावा देते हैं। जब कोई भारतीय खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय मंच पर राष्ट्रगान के साथ खड़ा होता है, तो हर भारतीय का सीना गर्व से फूल जाता है। 2024 पेरिस ओलंपिक में भारत ने एक रजत (नीरज चोपड़ा) और पांच कांस्य (मनु भाकर की दो, स्वप्नील कुसाले, अमन सहरावत और हॉकी टीम) सहित कुल 6 पदक जीते। भारत से मनु भाकर पहली भारतीय महिला बनीं जिन्होंने एक ही ओलंपिक में दो पदक जीते। भारतीय एथलीटों की इन सफलताओं ने देश के युवाओं में राष्ट्रीय गर्व का भाव जगाया। खेल न केवल व्यक्तिगत उपलब्धि हैं, बल्कि सामूहिक राष्ट्र-निर्माण का माध्यम हैं। राष्ट्रीय पहचान से तात्पर्य एक राष्ट्र के नागरिकों के इतिहास, मूल्य, संस्कृति और गौरव की भावना से है। खेल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस पहचान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब खिलाड़ी अपने देश के राष्ट्र ध्वज के साथ मैदान पर उतरते हैं, तो वे पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्टेडियम में उस देश के सम्मान में राष्ट्रगान गूंजता है, ध्वज लहराता है और करोड़ों लोगों के दिल एक साथ धड़कते हैं।

स्वतंत्रता के बाद खेलों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की राष्ट्रीय पहचान को मजबूत किया। 1951 और 1982 के दिल्ली एशियाई खेलों ने युवा भारत को विश्व पटल पर प्रस्तुत किया। महात्मा गांधी ने खेलों को महत्व देते हुए कहा था कि "खेल जीवन का सार है।" स्वतन्त्रता के बाद भारतीय हॉकी टीम ने 1948, 1952, 1956, 1964 और 1980 में ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतकर देश और देशवाशियों को गौरवान्वित किया। साथ ही समय-समय पर ओलंपिक खेलों में भारत के प्रदर्शन और जीत ने साबित किया कि नया भारत शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बन रहा है।

क्रिकेट भारतीय खेल न होते हुए भी आधुनिक समय में भारत की राष्ट्रीय पहचान का सबसे बड़ा प्रतीक बन गया है। सुनील गावस्कर, कपिल देव, सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली, रोहित शर्मा, अनिल कुंबले, ज़हीर खान जैसे खिलाड़ी वर्तमान समय में केवल क्षेत्रीय ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेलिब्रिटी बन चुके हैं। 2007 टी-20 विश्व कप और 2011 विश्व कप की जीत ने युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास भरने के साथ-साथ उन्हें खेलों और विशेषतः क्रिकेट के प्रति आकर्षित किया है। केवल क्रिकेट ही नहीं अपितु अन्य खेलों ने भी राष्ट्रीय छवि निर्माण में उल्लेखनीय योगदान दिया है। बैडमिंटन में पी.वी. सिंधु, साइना नेहवाल, लक्ष्य सेन एवं के. श्रीकांत आदि, कुश्ती में साक्षी मलिक, विनेश फोगाट, सुनील कुमार, रवि कुमार दहिया और बजरंग पूनिया आदि, जेवलिन थ्रो में नीरज चोपड़ा, सुमित अंतिल आदि, बॉक्सिंग में विजेंदर सिंह, एम. सी. मेरी कॉम एवं लवलीना बोरगोहेन आदि ने भारत की राष्ट्रीय पहचान के परचम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लहराया है एवं साथ ही देशवासियों एवं युवाओं को खेल के प्रति जागरूक करते हुए एकता के सूत्र में जोड़ने का कार्य किया है।

वर्ष 2017 से शुरू हुए खेलो इंडिया अभियान ने इस प्रक्रिया को और गति प्रदान की है। यह योजना ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में प्रतिभावन खिलाड़ियों को निखारने और उनको आगे लाने का कार्य कर रही है। देश

में अब हजारों 'खेलो इंडिया' केंद्र स्थापित हो चुके हैं, जहां लाखों बच्चे प्रशिक्षण ले रहे हैं। यह अभियान देश की युवा पीढ़ी को खेल के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता और फिटनेस को भी बढ़ावा देता है। भारत की सबसे बड़ी ताकत और चुनौती उसकी विविधता है। 28 राज्य, 8 संघ शासित क्षेत्र, 22 आधिकारिक भाषाएं, सैकड़ों जातियां और धर्म – खेल इस विविधता में एकता का दर्शन करवाते हैं। अलग-अलग पृष्ठभूमि से आए हुए खिलाड़ी जब राष्ट्रीय ध्वज के साथ मैदान पर उतरते हैं, तो वे एक टीम होते हैं और उनका एक ही लक्ष्य होता है कि देश के ध्वज को ऊंचा फहराया जाए।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने हॉकी में पाँच ओलंपिक स्वर्ण पदक जीते और राष्ट्र निर्माण में अहम योगदान दिया। 2020 टोक्यो और 2024 पेरिस में हॉकी टीम के कांस्य पदक ने पूरे देश को गौरवान्वित किया। क्रिकेट, फुटबाल या हॉकी टीम में भारत के विभिन्न प्रान्तों के खिलाड़ी शामिल हैं और एक ही जोश तथा लगन से देश के लिए जीतने का प्रयास करते है, जो भारत की एकता का जीवंत प्रमाण है।

महिलाओं के खेलों ने लिंग-आधारित एकता को बढ़ावा दिया। 2022 कॉमनवेल्थ गेम्स में मीराबाई चानू (मणिपुर), पीवी सिंधु (तेलंगाना), लवलीना बोरगोहांइन (असम) जैसी खिलाड़ियों की सफलता ने देश भर की महिलाओं को प्रेरित किया। यह दिखाता है कि खेल को लिंग, जाति या क्षेत्र की सीमाओं में बांधकर नहीं रखा जा सकता है। वैश्विक स्तर पर भी खेल दो देशों के बीच एकता और भाईचारा बढ़ाने का कार्य करते हैं। फीफा विश्व कप दक्षिण अफ्रीका (2010) नस्ली विभेद के खिलाफ एकता की सशक्त अभिव्यक्ति साबित हुआ। 2002 विश्व कप को जापान और दक्षिण कोरिया ने संयुक्त रूप से आयोजित किया, जिसने पूर्वी एशिया में सहयोग का संदेश दिया।

ई-स्पोर्ट्स और पैरालंपिक खेलों ने समावेशी एकता को बढ़ावा दिया। दिव्यांग खिलाड़ी जैसे अवनि लेखारा (निशानेबाजी) या सुमित अंतिल (भाला फेंक) राष्ट्रीय गर्व बढ़ाते हैं। इससे समाज में दिव्यांगजन के प्रति दृष्टिकोण बदलता है।

खेलों का प्रभाव केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक भी है। आर्थिक रूप से खेल पर्यटन, मीडिया अधिकार, स्पॉन्सरशिप और इंफ्रास्ट्रक्चर विकास को बढ़ावा देते हैं। "खेलो इंडिया" और "फिट इंडिया" अभियान ने खेल को राष्ट्रीय विकास का हिस्सा बनाया है। सांस्कृतिक रूप से खेल लोक संस्कृति का अंग बन गए हैं। क्रिकेट मैच के दौरान पूरे देश में उत्सव का माहौल होता है – सड़कों पर भीड़, मंदिरों में प्रार्थना, परिवारों का साथ बैठकर देखना। खेल को आधार बनाकर बनी फिल्में जैसे 'चक दे इंडिया', 'दंगल', '83' और 'मैरी कॉम' आदि ने खेलों को लोकप्रिय बनाने और राष्ट्रीय मूल्यों को बढ़ावा देने का कार्य किया है। राजनीतिक रूप से खेलों का उपयोग राष्ट्रीय एकता और कूटनीति के लिए होता है। सरकारें ओलंपिक भागीदारी बढ़ाकर अंतरराष्ट्रीय संबंध मजबूत करती हैं। 2023 क्रिकेट विश्व कप की मेजबानी ने भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाया।

खेल शिक्षा प्रणाली में भी महत्वपूर्ण हैं। स्कूलों और कॉलेजों में खेल को अनिवार्य बनाने से अनुशासन और टीम भावना विकसित होती है। महिलाओं और पिछड़े वर्गों के लिए विशेष योजनाएं राष्ट्रीय एकता को और मजबूत करेंगी। खेल क्षेत्र में कई चुनौतियां भी हैं। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी, कोचिंग की गुणवत्ता, आर्थिक असमानता, लिंग भेदभाव आदि प्रमुख हैं। हमारे देश की कई प्रतिभाएं आर्थिक कारणों अथवा राजनीति का शिकार होकर बीच में ही खेल को छोड़ने को मजबूर हो गई है। डोपिंग और मैच फिक्सिंग जैसी समस्याएं प्रतिभा का हनन करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में खेल के लिए आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध करवाकर, खेलों में सही नीतियों और पारदर्शिता को अपनाकर इन चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है।

खेलों का राष्ट्रीय पहचान और एकता पर गहरा प्रभाव है। वे न केवल शारीरिक स्वास्थ्य सुधारते हैं, बल्कि मानसिक दृढ़ता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक गौरव भी प्रदान करते हैं। खेल जीत-हार से आगे हैं। वे संघर्ष, समर्पण, सहयोग और एकता की कहानी हैं। जब पूरा देश एक स्टेडियम की तरह जुड़ जाता है, राष्ट्रगान गूंजता है और ध्वज लहराता है, तभी समझ आता है कि खेल कितने शक्तिशाली होते हैं। साथ ही खेल दो देशों के बीच एकता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान एवं भाईचारे को बढ़ावा देते हैं जिससे दोनों देशों के बीच एक पहचान निर्मित होता है।

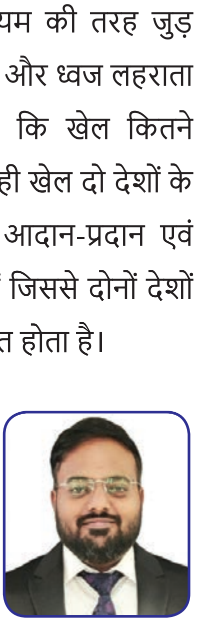

ऋषभ कुमार वर्मा
खंडगिरि शाखा,
क्षे.का., भुवनेश्वर

क्रिकेट: भारत में एक उत्सव

"लोग पत्थर फेंकते हैं और आप उन्हें स्मारकों में बदल देते हैं। क्रिकेट मेरा जीवन है और यह मैदान मेरा मंदिर है।" — सचिन तेंदुलकर

भारत जैसे विविधताओं से भरे राष्ट्र में, जहाँ "कोस-कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वाणी", वहाँ क्रिकेट केवल एक खेल नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक भावना और करोड़ों लोगों को एक स्वर में जोड़ने वाला सूत्र है। इसे अक्सर भारत के "अनौपचारिक धर्म" के रूप में देखा जाता है, जो जाति, भाषा और क्षेत्र की सीमाओं को तोड़कर पूरे देश में उत्साह का संचार कर देता है। यह खेल भारतीय समाज की नब्ज में इस कदर बस चुका है कि गली-मोहल्लों की तंग गलियों से लेकर बड़े स्टेडियमों की चकाचौंध तक, क्रिकेट हर भारतीय के जीवन का हिस्सा है। भारत में क्रिकेट की जड़ें 18वीं शताब्दी में मिलती हैं, जब अंग्रेजों ने मनोरंजन के लिए इस खेल को भारतीय तटों में प्रवेश कराया था। शुरुआत में, यह खेल केवल ब्रिटिश अधिकारियों और संभ्रांत वर्ग तक सीमित था। भारत का पहला क्रिकेट क्लब, 'कलकत्ता (कोलकाता) क्रिकेट क्लब', 1792 में स्थापित हुआ था। पारसी समुदाय वह पहला भारतीय समूह था जिसने इस खेल को अपनाया और 1848 में 'ओरिएंटल क्रिकेट क्लब' की स्थापना की। धीरे-धीरे, यह खेल बॉम्बे (मुंबई) के मैदानों से निकलकर देश के अन्य हिस्सों में फैला। औपनिवेशिक काल के दौरान, क्रिकेट केवल एक खेल नहीं बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और अंग्रेजों के साथ बराबरी करने का एक माध्यम बन गया था। लाला अमरनाथ, सी.के. नायडू और विजय हजारे जैसे दिग्गजों ने शुरुआती दौर में भारतीय क्रिकेट की नींव रखी।

भारतीय क्रिकेट के इतिहास में सबसे बड़ा मोड़ 25 जून, 1983 को आया जब लॉर्ड्स के मैदान पर कपिल देव की कप्तानी में 'अंडरडॉग' मानी जाने वाली भारतीय टीम ने वेस्टइंडीज को हराकर विश्व कप जीता। इस एक जीत ने क्रिकेट को ड्राइंग रूम के टेलीविजन से निकालकर गलियों के रेडियो तक पहुँचा दिया। इसने भारतीयों को यह विश्वास दिलाया कि वे वैश्विक स्तर पर सर्वश्रेष्ठ बन सकते हैं। इसके बाद, 2011 में महेंद्र सिंह धोनी के नेतृत्व में मिली विश्व कप जीत ने इस खेल को एक 'सांस्कृतिक विरासत' के रूप में स्थापित कर दिया, जहाँ क्रिकेट अब केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि भारतीय गौरव का पर्याय बन चुका है। क्रिकेट का सबसे गहरा सामाजिक प्रभाव 'गली क्रिकेट' के रूप में दिखता है। भारत की तंग गलियों में बच्चे लकड़ी के फट्टों और टेनिस बॉल के साथ खेलते हुए टीम वर्क, अनुशासन और विपरीत परिस्थितियों में हार न मानने का जज्बा सीखते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में महिला क्रिकेट के उदय ने भारतीय समाज की रूढ़िवादी सोच को बड़ी चुनौती दी है। मिताली राज, हरमनप्रीत कौर और स्मृति मंधाना जैसी खिलाड़ियों ने यह साबित कर दिया है कि खेल का मैदान केवल पुरुषों का कार्यक्षेत्र नहीं है। छोटे शहरों और गाँवों से निकलकर महेंद्र सिंह धोनी, मोहम्मद शमी या यशस्वी जायसवाल जैसे खिलाड़ियों की सफलता ने करोड़ों ग्रामीण युवाओं को यह विश्वास दिलाया है कि प्रतिभा और कड़ी मेहनत किसी भी आर्थिक पिछड़ेपन को मात दे सकती है। इस प्रकार, क्रिकेट भारत में सामाजिक गतिशीलता और आत्मविश्वास का एक सशक्त माध्यम बन गया है।

भारत में क्रिकेटरों का प्रभाव केवल खेल तक सीमित नहीं है, बल्कि वे युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुके हैं। सचिन तेंदुलकर ने क्रिकेट को अपना जीवन मानकर यह दिखाया कि जुनून और समर्पण से कोई भी ऊँचाई हासिल की जा सकती है। महेंद्र सिंह धोनी ने शांत स्वभाव और सही निर्णय लेने की क्षमता से यह सिखाया कि कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखना कितना आवश्यक है। वहीं विराट कोहली का आत्मविश्वास और मेहनत युवाओं को अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देता है। इसी प्रकार राहुल द्रविड ने अनुशासन और दृढ़ता का महत्व समझाया। इन महान खिलाड़ियों के विचार और जीवन संघर्ष यह दर्शाते हैं कि क्रिकेट केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन के मूल्यों को सिखाने का एक सशक्त माध्यम है। आज के दौर में क्रिकेट भारत के लिए केवल एक खेल नहीं, बल्कि अरबों डॉलर का उद्योग बन चुका है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड दुनिया का सबसे अमीर क्रिकेट बोर्ड है, जो वैश्विक क्रिकेट की दिशा और दशा तय करता है। इसका सबसे बड़ा श्रेय इंडियन प्रीमियर लीग को जाता है, जिसने खेल, ग्लैमर और व्यवसाय

का ऐसा अद्भुत संगम पेश किया और विश्व खेल जगत के अर्थशास्त्र को ही बदल दिया। विज्ञापनों, प्रायोजन और प्रसारण अधिकारों के माध्यम से क्रिकेट भारतीय अर्थव्यवस्था में हजारों करोड़ रुपये का योगदान देता है।

वैश्विक स्तर पर, भारत अब क्रिकेट का निर्विवाद केंद्र है। दुनिया के किसी भी कोने में मैच हो, भारतीय प्रशंसकों की उपस्थिति और टीवी रेटिंग्स ही उस मैच की सफलता तय करती हैं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के राजस्व का एक बड़ा हिस्सा भारतीय बाजार से आता है, जिससे भारत की 'सॉफ्ट पावर' पूरी दुनिया में स्थापित हुई है। आर्थिक दृष्टि से इसका प्रभाव केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं है। क्रिकेट ने पर्यटन, होटल उद्योग और खेल उपकरण बनाने वाले लघु उद्योगों को भी भारी बढ़ावा दिया है। छोटे शहरों के युवा खिलाड़ियों के लिए यह खेल अब केवल शौक नहीं, बल्कि एक सुरक्षित और आकर्षक करियर विकल्प बन गया है। संक्षेप में, क्रिकेट ने भारत को वैश्विक खेल कूटनीति और अर्थव्यवस्था के मंच पर एक 'सुपरपावर' के रूप में खड़ा कर दिया है।

भारत में क्रिकेट की अपार लोकप्रियता के पीछे मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। टेलीविज़न, रेडियो, समाचार पत्र और आज के डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने क्रिकेट को हर व्यक्ति तक पहुँचा दिया है। पहले जहाँ लोग रेडियो पर कमेंट्री सुनकर संतुष्ट हो जाते थे, वहीं आज लाइव प्रसारण, रिप्ले और विशेषज्ञ विश्लेषण ने मैच को और रोमांचक बना दिया है। बड़े टूर्नामेंट के दौरान मीडिया पूरे देश को एक सूत्र में बाँध देता है, जिससे क्रिकेट एक त्यौहार का रूप ले लेता है। मीडिया ने क्रिकेट को केवल लोकप्रिय ही नहीं बनाया, बल्कि इसे एक बड़े व्यवसाय में भी बदल दिया है। विज्ञापन, स्पॉन्सरशिप और ब्रांड एंबेसडर के रूप में खिलाड़ियों की भूमिका तेजी से बढ़ी है। खासकर इंडियन प्रीमियर लीग ने खेल और मनोरंजन को मिलाकर क्रिकेट को नई पहचान दी है। मैचों के दौरान दिखने वाले विज्ञापन और टीमों की ब्रांडिंग इस खेल की आर्थिक शक्ति को दर्शाते हैं।

हालाँकि, मीडिया का प्रभाव हमेशा सकारात्मक नहीं होता, फिर भी, मीडिया और क्रिकेट का यह संबंध परस्पर सहयोग का है—जहाँ मीडिया, क्रिकेट को महत्व देता है, वहीं क्रिकेट, मीडिया को दर्शक और पहचान प्रदान करता है।

भारत में क्रिकेट केवल आंकड़ों और रनों का खेल नहीं है, बल्कि यह करोड़ों भारतीयों की साझा भावनाओं का प्रतिबिंब है। यहाँ क्रिकेट का मैदान एक ऐसा रंगमंच है जहाँ पूरा देश एक साथ हँसता है, रोता है और प्रार्थना करता है। जब भारतीय टीम मैदान पर उतरती है, तो करोड़ों घरों में टीवी के सामने सन्नाटा पसर जाता है और हर गेंद के साथ धड़कनें ऊपर-नीचे होती हैं। यह भावनाओं का वह ज्वार है जहाँ अनजान लोग भी एक छक्के या विकेट पर गले मिल लेते हैं, और हार की स्थिति में सड़कों पर पसरा मौन एक राष्ट्रीय शोक जैसा प्रतीत होता है। इस भावनात्मक जुड़ाव का सबसे चरम रूप भारत-पाकिस्तान के मैचों में देखने को मिलता है, जहाँ खेल मैदान की सीमाओं को लांघकर राष्ट्रवाद और अस्मिता का प्रश्न बन जाता है। भारतीय प्रशंसकों का अपने खिलाड़ियों के प्रति प्रेम भी अद्वितीय है; यहाँ खिलाड़ियों को केवल एथलीट नहीं, बल्कि 'आदर्श' और 'भगवान' का दर्जा दिया जाता है। उनकी जीत पर दीपावली जैसा जश्न और उनकी विदाई पर देश की नम आँखें यह साबित करती हैं कि क्रिकेट हमारे जीवन के सुख-दुख का एक अटूट हिस्सा बन चुका है। संक्षेप में, क्रिकेट वह धागा है जो भारत के जज़्बातों को एक सूत्र में पिरोता है।

अंततः भविष्य में क्रिकेट की इस सांस्कृतिक पहचान को बचाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि खेल की व्यावसायिक सफलता और इसकी सात्विकता के बीच एक सही संतुलन बनाया जाए।

भारत में क्रिकेट केवल चौकों और विकेटों का गणित नहीं, बल्कि इस राष्ट्र की जीवंतता और एकता का परिचायक है। यह खेल औपनिवेशिक काल की बेड़ियों से निकलकर आधुनिक भारत की 'सॉफ्ट पावर' और आत्मविश्वास का प्रतीक बन चुका है। जहाँ एक ओर चुनौतियाँ मौजूद हैं, वहीं दूसरी ओर क्रिकेट का यह जुनून करोड़ों युवाओं को सपने देखने और उन्हें पूरा करने का हौसला देता है। क्रिकेट भारत की वह धड़कन है जो विविधता के बीच एकता के मंत्र को चरितार्थ करती है। जब तक भारत की गलियों में कोई बच्चा ईंटों का स्टंप लगाकर बल्ला घुमाता रहेगा और जब तक तिरंगे की लहर के साथ पूरा स्टेडियम एक स्वर में 'इंडिया-इंडिया' चिल्लाता रहेगा, तब तक क्रिकेट इस देश की सांस्कृतिक पहचान का सबसे उज्ज्वल अध्याय बना रहेगा। वास्तव में, क्रिकेट भारत के लिए एक खेल से बढ़कर एक ऐसा उत्सव है जो कभी समाप्त नहीं होता।

संदेश रामभाऊ माटे
क्षे.का., सिद्दीपेट

शारीरिक फिटनेस के लिए खेलकूद

"स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है"—यह केवल एक कहावत नहीं, बल्कि जीवन का मूल सत्य है। आज के युग में, जहाँ तकनीक ने जीवन को आसान बना दिया है, वहीं इसने हमें शारीरिक रूप से निष्क्रिय भी बना दिया है। घंटों मोबाइल, कंप्यूटर और टीवी के सामने बिताने की आदत ने हमारी दिनचर्या को इस प्रकार बदल दिया है कि शारीरिक गतिविधियाँ धीरे-धीरे जीवन से दूर होती जा रही हैं। इसका परिणाम यह है कि कम उम्र में ही लोग मोटापा, मधुमेह, हृदय रोग और मानसिक तनाव जैसी समस्याओं से जूझने लगे हैं। ऐसी परिस्थितियों में शारीरिक फिटनेस का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। फिटनेस केवल आकर्षक शरीर पाने का माध्यम नहीं, बल्कि एक स्वस्थ, सक्रिय और संतुलित जीवन जीने की अनिवार्य शर्त है।

शारीरिक फिटनेस को बनाए रखने के लिए कई साधन उपलब्ध हैं- जैसे जिम, योग, डाइट आदि। लेकिन इन सभी के बीच खेलकूद एक ऐसा माध्यम है, जो न केवल प्रभावी है, बल्कि आनंददायक भी है। खेलकूद व्यक्ति को शारीरिक रूप से सक्रिय रखते हैं और साथ ही मानसिक रूप से भी ताजगी प्रदान करते हैं। खेलों में भाग लेने से व्यक्ति अपने शरीर के हर हिस्से का उपयोग करता है, जिससे समग्र विकास संभव होता है। खेलकूद का महत्व केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक और मानसिक विकास का भी एक महत्वपूर्ण साधन है। खेल हमें अनुशासन, टीम वर्क, नेतृत्व और समय प्रबंधन जैसे गुण सिखाते हैं। यह हमें हार और जीत दोनों को समान रूप से स्वीकार करना सिखाते हैं, जिससे जीवन में संतुलन और सकारात्मकता बनी रहती है।

बच्चों और युवाओं के लिए खेलकूद विशेष रूप से आवश्यक हैं। यह उनके शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक और भावनात्मक विकास में भी सहायक होते हैं।

शारीरिक फिटनेस के लिए खेलकूद केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि एक आवश्यकता हैं। हमें अपने व्यस्त जीवन में से समय निकालकर खेलों को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए, ताकि हम एक स्वस्थ, खुशहाल और संतुलित जीवन जी सकें।

शारीरिक फिटनेस का अर्थ और महत्वः शारीरिक फिटनेस का मतलब केवल रोगमुक्त होना नहीं है, बल्कि शरीर का पूर्ण रूप से सक्रिय, मजबूत और संतुलित होना है। इसमें शक्ति, सहनशक्ति, लचीलापन, और संतुलन शामिल होते हैं। इसके मुख्य लाभ हैं -

शरीर को रोगों से बचाना, ऊर्जा और कार्यक्षमता बढ़ाना, मानसिक तनाव को कम करना, आत्मविश्वास और सकारात्मकता बढ़ाना।

खेलकूद का शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

(क) **हृदय स्वास्थ्यः** दौड़ना, तैराकी, साइक्लिंग जैसे खेल हृदय को मजबूत बनाते हैं। इससे ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है और हृदय रोग का खतरा कम होता है।

(ख) **मांसपेशियों और हड्डियों की मजबूतीः** फुटबॉल, कबड्डी, वॉलीबॉल जैसे खेल शरीर की मांसपेशियों को मजबूत बनाते हैं और हड्डियों के घनत्व को बढ़ाते हैं।

(ग) **वजन नियंत्रणः** खेलकूद कैलोरी बर्न करने में मदद करते हैं, जिससे मोटापा नियंत्रित रहता है। नियमित खेलकूद से शरीर का फैट प्रतिशत संतुलित रहता है।

(घ) **लचीलापन और संतुलनः** जिम्नास्टिक्स, योग और अन्य खेल शरीर के लचीलेपन और संतुलन को बढ़ाते हैं, जिससे चोट लगने का खतरा कम होता है।

विभिन्न प्रकार के खेल और उनके लाभ

(क) आउटडोर खेल जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी इनसे शारीरिक सहनशक्ति और टीमभावना को बढ़ाते हैं।

(ख) इंडोर खेल जैसे बैडमिंटन, टेबल टेनिस इनसे रिफ्लेक्स और एकाग्रता में सुधार होता है।

(ग) व्यक्तिगत खेल जैसे दौड़, तैराकी, योग, यह आत्मनिर्भरता और आत्मनियंत्रण बढ़ाते हैं।

विद्यार्थियों और युवाओं के लिए खेलकूद का महत्वः ये पढ़ाई के साथ संतुलन बनाना सिखाते हैं; मानसिक थकान दूर करते हैं; व्यक्तित्व विकास में सहायक होते हैं और करियर के रूप में भी अवसर प्रदान करते हैं।

महिलाओं के लिए खेलकूद का महत्व

आज महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं और खेलकूद भी इससे अछूता नहीं है, जहां उनके लिए यह केवल एक गतिविधि नहीं बल्कि शारीरिक सशक्तिकरण का माध्यम बन गया है; इसके जरिए वे अपनी रक्षा क्षमता को बढ़ाती हैं और आत्मविश्वास भी मजबूत करती हैं।

नियमित खेलकूद अपनाने के उपायः आज की व्यस्त जीवनशैली में खेलकूद को नियमित रूप से अपनाना एक चुनौती बन गया है, लेकिन सही योजना और दृढ़ संकल्प से इसे आसानी से अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाया जा सकता है।

(क) **स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करेंः** सबसे पहले यह तय करें कि आप खेलकूद क्यों अपनाना चाहते हैं, स्पष्ट लक्ष्य होने से निरंतरता बनी रहती है और व्यक्ति प्रेरित रहता है।

(ख) **अपनी रुचि के अनुसार खेल चुनेंः** हर व्यक्ति की पसंद अलग होती है। यदि

आप अपनी रुचि के अनुसार खेल चुनते हैं, तो आप उसे लंबे समय तक जारी रख पाएंगे। जब खेल आनंददायक लगता है, तो वह बोझ नहीं लगता।

(ग) **समय का उचित प्रबंधन:** दिनचर्या में खेलकूद के लिए निश्चित समय निर्धारित करना आवश्यक है। सुबह का समय सबसे उपयुक्त माना जाता है, क्योंकि इस समय वातावरण शुद्ध होता है और ऊर्जा का स्तर अधिक रहता है। यदि सुबह संभव न हो, तो शाम को भी खेलकूद किया जा सकता है।

(घ) **धीरे-धीरे शुरुआत करें:** अचानक अधिक समय तक या अत्यधिक कठिन व्यायाम करना शरीर के लिए हानिकारक हो सकता है। शुरुआत में हल्के व्यायाम या कम समय के खेल से शुरू करें और धीरे-धीरे समय एवं कठिनाई स्तर बढ़ाएँ।

(ङ) **नियमितता बनाए रखें:** सप्ताह में कम से कम 4–5 दिन खेलकूद करना चाहिए। नियमित अभ्यास से ही शरीर में सुधार दिखाई देता है। बीच-बीच में लंबे अंतराल से फिटनेस पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(च) **साथी के साथ खेलें:** दोस्तों या परिवार के साथ खेलना अधिक प्रेरणादायक होता है। इससे प्रतिस्पर्धा की भावना भी आती है और खेल का आनंद भी बढ़ता है, जिससे नियमितता बनी रहती है।

(छ) **स्क्रीन टाइम कम करें:** मोबाइल, टीवी और सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताना खेलकूद में बाधा बनता है। इसलिए आवश्यक है कि स्क्रीन टाइम को सीमित किया जाए और उस समय का उपयोग शारीरिक गतिविधियों में किया जाए।

(ज) **उचित उपकरण और वातावरण:** खेलकूद के लिए सही जूते, कपड़े और सुरक्षित स्थान का होना आवश्यक है। इससे चोट लगने की संभावना कम होती है और प्रदर्शन बेहतर होता है।

(झ) **विश्राम और रिकवरी पर ध्यान दें:** खेलकूद के साथ-साथ शरीर को पर्याप्त आराम देना भी जरूरी है। पर्याप्त नींद और विश्राम से शरीर की मांसपेशियाँ पुनः ऊर्जावान होती हैं और चोट का खतरा कम होता है।

खेलकूद और संतुलित आहार का संबंध: शारीरिक फिटनेस केवल खेलकूद से ही संभव नहीं है, बल्कि इसके साथ संतुलित और पौष्टिक आहार का होना भी अत्यंत आवश्यक है। खेलकूद के दौरान शरीर अधिक ऊर्जा खर्च करता है, इसलिए उसे सही पोषण की आवश्यकता होती है।

(क) **प्रोटीन का महत्व:** प्रोटीन मांसपेशियों के निर्माण और मरम्मत के लिए आवश्यक होता है। खेलकूद करने वाले व्यक्तियों को सामान्य लोगों की तुलना में अधिक प्रोटीन की आवश्यकता होती है। **स्रोत:** दालें, पनीर, सोयाबीन, दूध, दही आदि।

(ख) **कार्बोहाइड्रेट की भूमिका:** कार्बोहाइड्रेट शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं। खेलकूद के दौरान ऊर्जा की खपत अधिक होती है, इसलिए कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन लेना जरूरी है। **स्रोत:** चावल, रोटी, आलू, फल आदि।

(ग) **वसा का संतुलन:** स्वस्थ वसा शरीर के लिए आवश्यक होती है। यह ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और शरीर के विभिन्न कार्यों को संतुलित रखती है। **स्रोत:** सूखे मेवे, बीज, घी।

(घ) **विटामिन और खनिज:** ये शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं और मेटाबोलिज्म को संतुलित रखते हैं। **स्रोत:** हरी सब्जियाँ, फल, सलाद।

(ङ) **जल का महत्व:** खेलकूद के दौरान शरीर से पसीने के रूप में पानी निकलता है। इसलिए पर्याप्त मात्रा में पानी पीना जरूरी है, ताकि शरीर में पानी की कमी न हो और ऊर्जा बनी रहे।

(च) **समय पर भोजन करना:** खेलकूद से पहले और बाद में सही समय पर भोजन करना आवश्यक है। खेल से पहले हल्का और ऊर्जा देने वाला भोजन और खेल के बाद प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन हो।

(छ) **जंक फूड से बचाव:** अत्यधिक तैलीय, मसालेदार और जंक फूड शरीर के लिए हानिकारक होते हैं। ये फिटनेस को प्रभावित करते हैं और शरीर में अनावश्यक वसा बढ़ाते हैं।

(ज) **संतुलन और संयम:** अच्छी फिटनेस के लिए जरूरी है कि आहार में संतुलन और संयम रखा जाए। न तो अत्यधिक भोजन करें और न ही अत्यधिक परहेज करें। संतुलित आहार ही स्वस्थ शरीर की कुंजी है।

शारीरिक फिटनेस के लिए खेलकूद अत्यंत आवश्यक हैं। यह केवल शरीर को स्वस्थ रखने का साधन नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवनशैली को बेहतर बनाने का माध्यम है। खेलकूद व्यक्ति को अनुशासन, धैर्य, आत्मविश्वास और सहयोग की भावना सिखाते हैं। यदि हम अपने दैनिक जीवन में खेलकूद को शामिल कर लें, तो न केवल हम शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे, बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी सशक्त बनेंगे।

"खेल जीवन का अभिन्न अंग बनाएं और स्वस्थ जीवन की ओर कदम बढ़ाएं।"

मार्कण्डेय यादव
क्षेत्र प्रमुख,
क्षे.का., लखनऊ-उत्तर

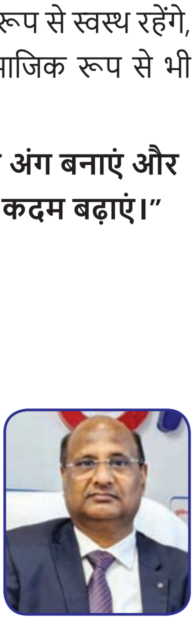

यूनियन धारा एवं यूनियन सृजन संवाददाता समीक्षा बैठक सह सम्मेलन – 2025-26

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की कॉर्पोरेट गृह पत्रिकाओं "यूनियन धारा" एवं "यूनियन सृजन" के संवाददाताओं की समीक्षा बैठक-सह-सम्मेलन का आयोजन 16 व 17 फरवरी, 2026 को वाराणसी, उत्तर प्रदेश में किया गया। यह सम्मेलन श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। सम्मेलन में श्री सुरेश चन्द्र तेली, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.); श्री विकास कुमार, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.); श्री बैजनाथ सिंह, अंचल प्रमुख, वाराणसी; श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं.) तथा श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.) की गरिमामयी उपस्थिति रही। श्रीमती गायत्री रवि किरण, संपादक एवं मुख्य प्रबंधक (रा.भा.) और यूनियन धारा टीम सहित कुल 129 संवाददाता/ प्रूफ़रीडर्स ने सहभागिता की। स्वागत संबोधन में श्रीमती गायत्री रवि किरण, संपादक एवं मुख्य प्रबंधक (रा.भा.) ने यूनियन धारा की 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा, सांस्कृतिक साहित्यिक विरासत तथा बैंक की सुदृढ़ पहचान निर्माण में गृह पत्रिका की भूमिका को रेखांकित किया। इस अवसर पर गृह पत्रिकाओं की ऐतिहासिक धरोहर पर आधारित एक आकर्षक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में पत्रिका के तीन पूर्व संपादकों का सम्मान प्रबंध निदेशक एवं सीईओ महोदय द्वारा किया गया, जो एक भावनात्मक एवं प्रेरणादायी क्षण रहा। इसी अवसर पर यूनियन धारा के स्वर्ण जयंती अंक, यूनियन सृजन के 'जीआई उत्पाद विशेषांक', दोनों गृह-पत्रिकाओं के ऑनलाइन मॉड्यूल तथा विभिन्न विषयों पर 35 प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया। उत्कृष्ट लेखन और निरंतर योगदान के लिए संवाददाताओं को 'यूनियन स्टार', 'स्वर्ण स्टार' और 'रजत स्टार' पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ ने संवाददाताओं की सराहना करते हुए कहा कि प्रभावी संप्रेषण, गंभीर लेखन परंपरा और राजभाषा का सशक्त उपयोग किसी भी संस्था की पहचान को सुदृढ़ बनाता है। उन्होंने "You need to add value to your desk" को कार्य-संस्कृति का मूलमंत्र बताते हुए सभी कर्मचारियों को मूल्यवर्धन, सरल भाषा और सकारात्मक सोच अपनाने का संदेश दिया। सम्मेलन में पूर्व संपादकों के साथ संवाद सत्र, परिचर्चा तथा ऑनलाइन मॉड्यूल की प्रस्तुति दी गई, जिससे सहभागियों को दिशा और प्रेरणा प्राप्त हुई। 17 फरवरी 2026 को स्थानीय अध्ययन दौरे के साथ सम्मेलन का समापन हुआ।

अध्यक्षीय संबोधन

Union Bank
Good people to bank with
स्थान - वाराणसी
दिनांक - 16-17 फरवरी 2026

Union Bank

सम्मेलन
2025-26

खेलों में मानसिक स्वास्थ्य

जब किसी विशाल स्टेडियम की रोशनी जगमगाती है, दर्शकों का उत्साह आसमान छूने लगता है और खेल का निर्णायक क्षण सामने होता है, तब मैदान पर दिखाई देने वाली प्रतिस्पर्धा से कहीं अधिक गहरा संघर्ष खिलाड़ी के भीतर चल रहा होता है। यह संघर्ष प्रतिद्वंद्वी से कम और अपने ही मन से अधिक होता है—डर और विश्वास के बीच, उम्मीद और आशंका के बीच, आत्मविश्वास और आत्म-संदेह के बीच। खेल का वास्तविक युद्ध मैदान पर नहीं, बल्कि मन के भीतर लड़ा जाता है। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि किसी भी खिलाड़ी की असली जीत उसके मन की विजय से प्रारम्भ होती है।

परंपरागत रूप से खेलों को शारीरिक शक्ति, कौशल और अनुशासन का प्रतीक माना गया है। खिलाड़ी को साहस, परिश्रम और समर्पण की प्रतिमूर्ति के रूप में देखा गया। लेकिन आधुनिक समय में खेल जगत की समझ में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। अब यह स्वीकार किया जा रहा है कि खेलों में सफलता केवल शारीरिक क्षमता का परिणाम नहीं होती, बल्कि मानसिक संतुलन, भावनात्मक स्थिरता और मनोवैज्ञानिक दृढ़ता भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि शरीर खेल का उपकरण है तो मन उसका संचालक है। जब मन स्थिर और संतुलित होता है, तभी शरीर अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्य कर पाता है।

खेलों में मानसिक स्वास्थ्य का विषय आज इसलिए भी महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि आधुनिक खेल संसार अत्यंत प्रतिस्पर्धी और सार्वजनिक अपेक्षाओं से भरा हुआ है। खिलाड़ियों को केवल मैदान में ही नहीं, बल्कि मीडिया, सोशल मीडिया और लाखों प्रशंसकों की उम्मीदों के बीच भी स्वयं को साबित करना पड़ता है। ऐसे वातावरण में मानसिक संतुलन बनाए रखना किसी भी खिलाड़ी के लिए बड़ी चुनौती बन जाता है।

भारतीय दर्शन और मानसिक दृढ़ता

भारतीय चिंतन परंपरा में मानसिक संतुलन को सदैव अत्यंत महत्व दिया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता का यह प्रसिद्ध संदेश-

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

जीवन की गहरी मनोवैज्ञानिक समझ को व्यक्त करता है।

यदि हम 30-40 वर्ष पहले के बचपन को याद करें, तो एक अलग ही दुनिया सामने आती है। तब न मोबाइल थे, न वीडियो गेम और न ही सोशल मीडिया का आकर्षण। स्कूल से घर लौटते ही बच्चों के लिए सबसे बड़ा आनंद बाहर जाकर खेलना होता था। झोला अक्सर दरवाजे के पास ही रख दिया जाता था और बच्चे सीधे मैदान की ओर निकल जाते थे। गली-मोहल्लों में कबड्डी, खो-खो, गिल्ली-डंडा, क्रिकेट जैसे खेलों की रौनक रहती थी। परिवार भी बड़े होते थे, साथ खेलने वाले भाई-बहन और मित्र अधिक होते थे, जिससे खेल केवल शारीरिक गतिविधि नहीं बल्कि सामाजिक जुड़ाव का भी माध्यम बनता था।

इन खेलों में भाग लेने से शरीर स्वाभाविक रूप से सक्रिय रहता था, सहनशक्ति बढ़ती थी और मन भी प्रसन्न व तनावमुक्त रहता था। विद्यालयों में भी पीटी और विविध खेलों को शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा माना जाता था, जिससे बच्चों का स्वाभाविक समग्र विकास होता था। इसके विपरीत आज का बचपन एक अलग दिशा में बढ़ता हुआ दिखाई देता है। डिजिटल उपकरणों और सोशल मीडिया ने बच्चों के जीवन का बड़ा हिस्सा अपने कब्जे में ले लिया है। खेल अब मैदान से हटकर मोबाइल और स्क्रीन तक सीमित होते जा रहे हैं। बच्चे घर से बाहर निकलने की अपेक्षा स्क्रीन के सामने अधिक समय बिताने लगे हैं। परिणामस्वरूप उनकी शारीरिक सक्रियता कम हो रही है और इसका सीधा प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। कम आयु में ही उच्च रक्तचाप, मधुमेह जैसी समस्याएँ सामने आने लगी हैं, जो चिंताजनक है।

यह परिवर्तन केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक स्तर पर भी प्रभाव डाल रहा है। जहाँ पहले खेल बच्चों को आत्मविश्वास, सामूहिकता और मानसिक संतुलन सिखाते थे, वहीं आज की आभासी दुनिया कई बार उन्हें एकाकीपन और तनाव की ओर ले जाती है।

आधुनिक खेल मनोविज्ञान भी इसी सिद्धांत को स्वीकार करता है कि संतुलित मन ही उत्कृष्ट प्रदर्शन का आधार है। खेल विशेषज्ञ इसे "प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करना" कहते हैं। जब खिलाड़ी केवल अपने कौशल, अभ्यास और वर्तमान क्षण पर ध्यान देता है, तब वह अधिक स्वाभाविक और प्रभावी प्रदर्शन कर पाता है। इसी प्रकार गीता में वर्णित "स्थितप्रज्ञ" की अवधारणा भी खेलों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है। "स्थितप्रज्ञ" वह व्यक्ति है जो न सफलता में अत्यधिक उत्साहित होता है और न हा असफलता में निराशा से टूटता है। खेल के मैदान में यही संतुलन खिलाड़ी को लंबे समय तक उत्कृष्ट प्रदर्शन करने में सक्षम बनाता है।

आधुनिक खेल और मानसिक दबावः आज का खेल जगत पहले की तुलना में कहीं अधिक प्रतिस्पर्धी और जटिल हो गया है। खिलाड़ियों पर केवल प्रदर्शन का ही दबाव नहीं होता, बल्कि उनके ऊपर देश, समाज और प्रशंसकों की अपेक्षाओं का भी भार होता है। अनेक अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि बड़ी संख्या में खिलाड़ी मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याओं का सामना करते हैं।

कई बार खिलाड़ी अपने मानसिक संघर्षों को सार्वजनिक रूप से व्यक्त नहीं कर पाते। लेकिन हाल के वर्षों में यह सोच बदल रही है। कई प्रसिद्ध खिलाड़ियों ने अपने अनुभव साझा करके यह बताया कि मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियां किसी भी व्यक्ति के जीवन का हिस्सा हो सकती हैं। इन उदाहरणों ने खेल जगत में एक महत्वपूर्ण संदेश दिया है कि मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा करना कमजोरी नहीं, बल्कि साहस का संकेत है।

बड़े खेल आयोजनों का मनोवैज्ञानिक प्रभावः विश्व स्तर के खेल आयोजन खिलाड़ियों के लिए गौरव का अवसर होते हैं, लेकिन उनके साथ अत्यधिक दबाव भी जुड़ा होता है। विश्व कप, एशियाई खेल, राष्ट्रमंडल खेल या ओलंपिक जैसे आयोजनों में खिलाड़ी केवल व्यक्तिगत उपलब्धि के लिए नहीं खेलते, बल्कि वे अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में खिलाड़ियों के सामने अपेक्षाओं का विशाल भार होता है। मीडिया की निरंतर निगरानी, प्रशंसकों की उम्मीदें और प्रतियोगिता का तनाव कई बार मानसिक दबाव को बढ़ा देते हैं।

इसलिए आधुनिक खेल प्रशिक्षण में मानसिक तैयारी को विशेष महत्व दिया जा रहा है। कई देशों ने अपनी राष्ट्रीय टीमों के साथ खेल मनोवैज्ञानिकों को शामिल करना प्रारंभ कर दिया है। ध्यान, मानसिक अभ्यास और भावनात्मक प्रबंधन जैसी तकनीकों के माध्यम से खिलाड़ियों को मानसिक रूप से सशक्त बनाया जा रहा है।

महिला खिलाड़ियों की विशेष चुनौतियाँ

खेलों में महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ रही है, लेकिन उनके सामने मानसिक और सामाजिक चुनौतियां कई बार अधिक जटिल होती हैं। महिला खिलाड़ियों को अक्सर खेल प्रशिक्षण के साथ-साथ सामाजिक अपेक्षाओं और पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी सामना करना पड़ता है।

इसके अतिरिक्त, मातृत्व के बाद खेल में वापसी करना भी एक बड़ी चुनौती बन जाती है। शारीरिक परिवर्तन, भावनात्मक उतार-चढ़ाव और प्रदर्शन की चिंता महिला खिलाड़ियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल सकती है। इसलिए खेल संस्थानों और समाज दोनों की जिम्मेदारी है कि वे महिला खिलाड़ियों को प्रोत्साहन और सहयोग का वातावरण प्रदान करें।

जमीनी चुनौतियाँः अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिखाई देने वाली चमक के पीछे जमीनी स्तर पर संघर्ष की लंबी कहानी छिपी होती है। ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों से आने वाले अनेक खिलाड़ी सीमित संसाधनों के बावजूद अपने सपनों को साकार करने के लिए कठोर परिश्रम करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में मानसिक दृढ़ता ही वह शक्ति बनती है जो खिलाड़ी को निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। जब व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहता है और कठिनाइयों के बावजूद प्रयास जारी रखता है, तभी सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है।

खेल मनोविज्ञान की आधुनिक तकनीकें

खेल विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि मानसिक प्रशिक्षण खिलाड़ी के प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

संज्ञानात्मक-व्यवहार प्रशिक्षण खिलाड़ियों को नकारात्मक विचारों से मुक्त होकर सकारात्मक मानसिकता विकसित करने में सहायता करता है।

माइंडफुलनेस और ध्यान खिलाड़ियों को वर्तमान क्षण में केंद्रित रहने की क्षमता प्रदान करते हैं, जिससे दबाव की स्थिति में भी उनका मन शांत रहता है।

रेजिलिएंस प्रशिक्षण खिलाड़ियों को असफलता या चोट के बाद फिर से उठ खड़े होने की मानसिक शक्ति देता है।

इन तकनीकों का उपयोग केवल खेलों में ही नहीं, बल्कि कॉर्पोरेट जीवन में भी समान रूप से किया जा सकता है। तनावपूर्ण परिस्थितियों में शांत रहना, टीम के साथ सामंजस्य बनाए रखना और निरंतर लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना किसी भी संस्था की सफलता के लिए आवश्यक है।

खेल भावना और संस्थागत उत्कृष्टताः खेल हमें केवल जीतने की कला नहीं सिखाते,

मानसिक प्रशिक्षण: खेल और कॉर्पोरेट दोनों में सफलता की कुंजी.

बल्कि जीवन के अनेक मूल्य भी सिखाते हैं—अनुशासन, धैर्य, टीमवर्क और नेतृत्व। कॉर्पोरेट जगत में भी यही गुण सफलता के आधार बनते हैं। एक सफल संगठन वही होता है जिसमें टीम के सदस्य मिलकर कार्य करते हैं, चुनौतियों का सामना धैर्य के साथ करते हैं और निरंतर सुधार की दिशा में प्रयास करते रहते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य : भविष्य की दिशा

आज यह स्पष्ट हो चुका है कि खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना अत्यंत आवश्यक है। खिलाड़ियों को केवल प्रशिक्षण और प्रतियोगिता की सुविधा ही नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक सहयोग भी मिलना चाहिए। स्कूल स्तर से लेकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं तक मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना समय की आवश्यकता है। इसी प्रकार संस्थानों और संगठनों में भी मानसिक स्वास्थ्य को महत्व देना आवश्यक है। स्वस्थ मन ही सृजनात्मकता, नेतृत्व और उत्कृष्ट प्रदर्शन की आधारशिला बनता है।

खेल हमें जीवन का एक गहरा सत्य सिखाते हैं कि सच्ची जीत बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक होती है। मैदान पर दिखाई देने वाली सफलता वास्तव में मन के जीत का परिणाम होती है। जब खिलाड़ी अपने भीतर के भय, संदेह और दबाव को संतुलित करना सीख लेता है, तभी वह वास्तविक अर्थों में विजेता बनता है। खेलों में मानसिक स्वास्थ्य का महत्व हमें यह समझाता है कि मन और शरीर का संतुलन ही उत्कृष्टता का मार्ग है। यही संतुलन व्यक्ति को बेहतर खिलाड़ी, बेहतर नेता और बेहतर नागरिक बनाता है।

अंततः, चाहे खेल का मैदान हो, कार्यस्थल हो या जीवन का विस्तृत संसार- सबसे बड़ी सफलता उसी की होती है जिसने पहले अपने मन को जीत लिया हो।

अजय खरे
क्षेत्र प्रमुख,
क्षे.का., रीवा

खेल और खेल भावना

खेल में हार हो या जीत, यह बस तय करते परिणाम।
पर खेल भावना यह सिखाती, सब खिलाड़ियों का करो सम्मान ।
मैदान में जब कदम रखते हैं, सपनों को साथ लिए चलते हैं।
जीत की चाह मन में होती है, पर हार से भी हम सीखते हैं।
खेल सिखाता अनुशासन हमें, संयम, साहस और विश्वास।
प्रतिद्वंदी भी मित्र बन जाता, जब हो मन में सम्मान का प्रकाश।
जीत मिले तो बनो विनम्र, हार मिले तो मत घबराना।
सच्ची खेल भावना यही है, हर पल आगे बढ़ते जाना।
खेल नहीं बस जीत की चाह, यह जीवन जीने की राह ।
जो खेल भावना अपनाले, वह सारा मैदान मार ले ।
तालियों की गूंज क्षणिक है भले, पर चरित्र की ध्वनि अमर हो जाए।
जो नियमों की मर्यादा साधे, वही सच्चा विजयी कहलाए।
न जय का उन्माद, न हार का शोक, मन में बस कर्तव्य का दीप जले।
प्रतिद्वंदी नहीं, सहयात्री हैं सब, जब आत्मा में खेल भावना पले।
खेल है जीवन का प्रतिरूप , जहाँ मनुष्य स्वयं को गढ़ता।
जो खेल भावना को हृदय में रखे, वही हर युग में श्रेष्ठ ठहरता।
खेल खेलकर रहे स्वस्थ और खेल भावना रहे तटस्थ ।
जीवन में अपनाये जो यह, वोही तय करे विजयपथ ।
हार भी बनती गुरु की वाणी, जीत नहीं है अंतिम सत्य ।
खेल भावना सर्वोपरि है, यही सफल जीवन का रहस्य ।

रंजीत कुमार रंजन
यू.एल.ए., लखनऊ

टीम स्पिरिट और खेल भावना की शक्ति

शाम का समय था। मैदान की मिट्टी अभी भी दिनभर की धूप से हल्की गरम थी, और हवा में पसीने, मेहनत और उम्मीद की मिली-जुली खुशबू थी। मैं मैदान के किनारे बैठा बच्चों को खेलते हुए देख रहा था। उनकी आवाज़ों में उत्साह था, आँखों में चमक थी, लेकिन खेल के बीच-बीच में कुछ और भी था—कहीं झुंझलाहट, कहीं अहंकार, कहीं जीतने की अधीरता।

उन्हें देखते-देखते मुझे अपने पुराने दिन याद आ गए... वो दिन जब खेल मेरे लिए सिर्फ जीतने का जरिया था, सीखने का नहीं। मैं भी कभी उन्हीं बच्चों की तरह था। मेरे लिए मैदान पर उतरने का मतलब था—खुद को साबित करना, सबसे आगे निकलना। एक बार स्कूल के क्रिकेट मैच में मैंने शानदार पारी खेली। चौके-छक्के लगा रहे थे, दर्शक तालियाँ बजा रहे थे, और मुझे लग रहा था कि आज मैं ही मैच का हीरो हूँ। लेकिन उस दिन एक अजीब बात हुई मैंने रन तो बहुत बनाए, पर हमारी टीम हार गई। मैच खत्म होने के बाद सब खामोश थे। किसी ने मुझे कुछ नहीं कहा, लेकिन उस खामोशी में एक सवाल था "क्या सिर्फ तुम्हारा अच्छा खेलना ही काफी था?" उस दिन पहली बार मुझे महसूस हुआ कि खेल में "मैं" नहीं, "हम" जीतते हैं।

समय बीता। मैं कॉलेज पहुँचा, और वहाँ मुझे फुटबॉल खेलने का मौका मिला। फुटबॉल एक ऐसा खेल है जहाँ आप अकेले कुछ नहीं कर सकते। गेंद आपके पास कुछ सेकंड के लिए होती है, फिर आपको उसे पास करना होता है। वहाँ मैंने एक खिलाड़ी को देखा वो टीम का सबसे तेज़ स्ट्राइकर था। अगर वह चाहता तो हर बार खुद ही गोल करने की कोशिश कर सकता था, लेकिन वह अक्सर गेंद उस खिलाड़ी को पास करता जो बेहतर पोज़िशन में होता।

एक दिन मैंने उससे पूछा, "तू खुद गोल क्यों नहीं करता? तू तो कर सकता है।" वह मुस्कुराया और बोला, "गोल मेरा नहीं, टीम का होना चाहिए। अगर मेरी पास से टीम जीतती है, तो वही मेरी जीत है।"

उसकी बात सुनकर मुझे समझ आया कि टीम स्पिरिट सिर्फ एक शब्द नहीं, एक सोच है एक ऐसी सोच जिसमें आप अपनी चमक को थोड़ा कम कर देते हैं ताकि पूरी टीम चमक सके।

कुछ साल बाद, एक हॉकी मैच देखने का मौका मिला। वहाँ मैंने एक और अलग तरह की कहानी देखी। एक खिलाड़ी था जो लगातार गलती कर रहा था पास गलत दे रहा था, गेंद खो रहा था। दर्शक नाराज़ हो रहे थे, टीम दबाव में आ रही थी। लेकिन उसकी टीम के कप्तान ने उसे डांटा नहीं। उसने उसके कंधे पर हाथ रखा और बस इतना कहा, "खेलते रहो, हम साथ हैं।" अगले ही कुछ मिनटों में वही खिलाड़ी एक शानदार असिस्ट देता है, और टीम गोल कर देती है।

उस दिन मुझे समझ आया कि टीम स्पिरिट का मतलब सिर्फ अच्छे खिलाड़ियों के साथ खेलना नहीं है, बल्कि कमजोर पड़ते खिलाड़ी को संभालना भी है। असली टीम वही होती है जो मुश्किल समय में एक-दूसरे के साथ खड़ी रहती है।

खेल भावना की असली ताकत मुझे एक कुश्ती के मुकाबले में समझ आई। दो पहलवान आमने-सामने थे। मुकाबला कड़ा था, दोनों पूरी ताकत लगा रहे थे। आखिरकार एक पहलवान जीत गया। लेकिन जीत के बाद उसने जो किया, वो मेरे लिए सबसे बड़ा सबक था—उसने अपने प्रतिद्वंद्वी को उठाया, गले लगाया और उसके प्रयास की सराहना की। वह दृश्य आज भी मेरी आँखों में ताज़ा है। वहाँ कोई दुश्मनी नहीं थी, कोई अहंकार नहीं था, सिर्फ सम्मान था।

यही खेल भावना है। यह हमें सिखाती है कि सामने वाला आपका विरोधी हो सकता है, लेकिन वह आपका शत्रु नहीं है। वह भी उतनी ही मेहनत करता है, उतना ही संघर्ष करता है जितना आप करते हैं। धीरे-धीरे मुझे समझ आने लगा कि खेल हमें सिर्फ शरीर से नहीं, मन से भी मजबूत बनाता है। यह हमें हार को स्वीकार करना सिखाता है बिना टूटे, बिना बिखरे। यह हमें जीत को संभालना सिखाता है बिना घमंड के।

मुझे क्रिकेट का एक और अनुभव याद आता है। इस बार मैं कप्तान था। हमारी टीम में एक नया खिलाड़ी था, जो ज्यादा अनुभवी नहीं था। मैच के आखिरी ओवर में हमें जीत के लिए 10 रन चाहिए थे, और वही खिलाड़ी स्ट्राइक पर था। मैं जानता था कि वह दबाव में है। मैं उसके पास गया और बस इतना कहा, "तू बस खेल, हम सब तेरे साथ हैं।" उसने दो चौके लगाए और हम मैच जीत गए।

लेकिन उस जीत से भी ज्यादा खुशी मुझे इस बात की थी कि उस दिन एक खिलाड़ी ने खुद पर विश्वास करना सीखा, और एक टीम ने अपने साथी पर भरोसा करना।

खेल हमें धीरे-धीरे बदलता है। यह बदलाव अचानक नहीं आता, बल्कि हर मैच, हर पास, हर हार और हर जीत के साथ हमारे भीतर कुछ नया जुड़ता जाता है। हम ज्यादा धैर्यवान हो जाते हैं। हम दूसरों की बात सुनना सीखते हैं। हम यह समझने लगते हैं कि हर किसी की अपनी एक भूमिका होती है—और हर भूमिका महत्वपूर्ण होती है। मैदान के बाहर भी यह सीख हमारे साथ रहती है। जब हम किसी टीम के साथ काम करते हैं, जब हम परिवार में किसी मुश्किल का सामना करते हैं, तब वही टीम स्पिरिट काम आती है, एक-दूसरे का साथ देना, एक-दूसरे को समझना, और मिलकर आगे बढ़ना।

आज जब मैं उन बच्चों को खेलते हुए देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि काश उन्हें कोई यह समझा पाए कि खेल सिर्फ जीतने के लिए नहीं होता। यह खुद को जानने के लिए होता है, दूसरों को समझने के लिए होता है। शायद वे अभी नहीं समझेंगे। शायद उन्हें भी कुछ हारों से गुजरना पड़ेगा, कुछ गलतियाँ करनी होंगी। लेकिन यही तो खेल की खूबसूरती है। यह हमें गिरकर उठना सिखाता है।

शाम अब ढल चुकी थी। मैदान धीरे-धीरे खाली हो रहा था। बच्चे अपने-अपने घरों की ओर लौट रहे थे। लेकिन मुझे पता था कि आज उन्होंने सिर्फ खेला नहीं है, उन्होंने कुछ सीखा भी है, भले ही उन्हें अभी इसका एहसास न हो। शायद यही खेल की असली जीत है, क्योंकि अंत में, जो चीज़ हमारे भीतर रह जाती है, वह है—टीम स्पिरिट और खेल भावना।और यही दो चीज़ें हमें सिर्फ एक अच्छा खिलाड़ी नहीं, बल्कि एक अच्छा इंसान बनाती हैं।

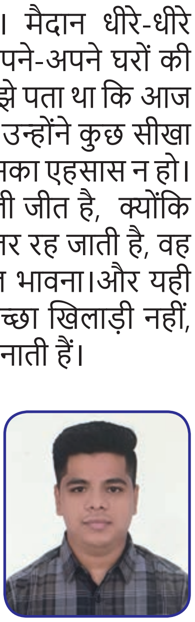

विराज जगताप
क्षे.का., पुणे-मेट्रो

पैरालंपिक खेल: अदम्य साहस, अस्तित्व और विजय की गाथा

जहाँ सामान्य खेलों के माध्यम से एक व्यक्ति अपनी शारीरिक क्षमताओं का परिचय देता है और ख्याति अर्जित करता है, वहीं पैरा खेलों के माध्यम से कोई दिव्यांग व्यक्ति न केवल स्वयं को सिद्ध करता है, बल्कि अपना सामर्थ्य का परिचय देता है, आत्मविश्वास प्राप्त करता है और दुनिया के सामने अपना अस्तित्व स्थापित करता है। पैरा खेल केवल पदक जीतने की होड़ नहीं हैं, बल्कि यह उस मानसिकता की जीत है जो कहती है कि "शरीर दिव्यांग हो सकता है, लेकिन आत्मा और इच्छाशक्ति कभी दिव्यांग नहीं होती।"

आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पैरा खेलों की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। यह समाज को समावेशी बनाने का सबसे सशक्त माध्यम है। यह खेल दिव्यांगजनों को अवसाद से बाहर निकालकर समाज की मुख्यधारा में सम्मानजनक स्थान दिलाते हैं।

पैरालंपिक खेलों का प्रामाणिक इतिहास और विकास: पैरा खेलों का इतिहास द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की त्रासदियों से जुड़ा है। युद्ध में घायल हुए सैनिकों के पुनर्वास के लिए खेलों को एक चिकित्सा पद्धति के रूप में अपनाया गया।

- **स्टोक मैंडेविल गेम्स (1948):** पैरालंपिक खेलों के जनक डॉ. लुडविग गुटमैन को माना जाता है। उन्होंने लंदन ओलंपिक 1948 के उद्घाटन के दिन ही व्हीलचेयर पर बैठे युद्ध के दिग्गजों के लिए 'स्टोक मैंडेविल गेम्स' की शुरुआत की।
- **प्रथम पैरालंपिक (1960):** आधिकारिक रूप से प्रथम पैरालंपिक खेल 1960 में इटली की राजधानी रोम में आयोजित किए गए। इसमें 23 देशों के 400 एथलीटों ने भाग लिया था।
- **विकास यात्रा:** 1976 में स्वीडन में पहले 'विंटर पैरालंपिक' का आयोजन हुआ। 1988 के सियोल ओलंपिक के बाद से यह नियम बना कि पैरालंपिक खेल उसी शहर और उन्हीं स्टेडियमों में आयोजित किए जाएंगे जहाँ ग्रीष्मकालीन ओलंपिक होते हैं।

पैरालंपिक खेलों की कहानी और वैश्विक कीर्तिमान

शुरुआत में इन खेलों को "दिव्यांगों के खेल" के रूप में देखा जाता था, लेकिन 1980 के दशक के बाद इन्हें व्यापक वैश्विक पहचान मिली।

अग्रणी देश और कीर्तिमान: पैरालंपिक के इतिहास में चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनी जैसे देशों ने हमेशा दबदबा बनाए रखा है। चीन ने पिछले कुछ दशकों में पैरा खेलों के बुनियादी ढांचे में भारी निवेश कर पदक तालिका में शीर्ष स्थान सुरक्षित किया है।

दिव्यांगता वर्ग और श्रेणियों का वर्गीकरण: पैरा खेलों की सबसे बड़ी चुनौती विभिन्न प्रकार की शारीरिक दिव्यांगता के बीच 'समान अवसर' प्रदान करना है। इसके लिए एक जटिल वर्गीकरण प्रणाली अपनाई जाती है।

प्रारंभिक दौर की दिव्यांगता: शुरुआत में केवल रीढ़ की हड्डी की चोट वाले खिलाड़ी ही भाग लेते थे।

वर्तमान में सम्मिलित वर्ग: आज पैरालंपिक में मुख्य रूप से 10 दिव्यांगता श्रेणियों को शामिल किया गया है:

1. अंगों की कमी; 2. मांसपेशियों की शक्ति में कमी; 3. गति की निष्क्रियता सीमा; 4. पैरों की लंबाई में अंतर; 5. ड्वार्फिज़्म; 6. हाइपरटोनिया (मांसपेशियों का कड़ापन); 7. अटैक्सिया (मांसपेशियों के समन्वय की कमी); 8. एथेटोसिस (अनियंत्रित हलचल); 9. दृष्टि दोष; 10. बौद्धिक दिव्यांगता

इन श्रेणियों को अंकों (जैसे टी42, एफ44, एस10) में विभाजित किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि एक खिलाड़ी अपने समान क्षमता वाले खिलाड़ी से ही प्रतिस्पर्धा करे।

भारत में पैरा खेलों की कहानी

भारत के पैरालंपिक सफर की शुरुआत 1968 में तेल अवीव खेलों से हुई थी।

प्रमुख मील के पत्थर:

- **प्रथम स्वर्ण (1972):** मुरलीकांत पेटकर ने तैराकी में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाकर इतिहास रचा।
- **देवेंद्र झाझरिया:** भारत के सबसे सफल पैरालंपियन, जिन्होंने जावेहिन थ्रो में दो स्वर्ण (2004 और 2016) और एक रजत पदक जीता।
- **दीपा मलिक:** 2016 रियो ओलंपिक में शॉट पुट में रजत जीतकर पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन (टोक्यो 2020 और पेरिस 2024): टोक्यो 2020 भारतीय पैरा-खेलों का 'टर्निंग पॉइंट' था। भारत ने 5 स्वर्ण, 8 रजत और 6 कांस्य सहित कुल 19 पदक जीतकर पदक तालिका में 24वां स्थान प्राप्त किया। इसके बाद 2024 में भारत ने इस रिकॉर्ड को और बेहतर करते हुए शानदार प्रदर्शन किया।

पदक तालिका पर एक नजर (ऐतिहासिक):

वर्ष	स्थान	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
1972	हीडलबर्ग	1	0	0	1
1984	न्यूयॉर्क	0	2	2	4
2004	एथेंस	1	0	1	2
2016	रियो	2	1	1	4
2020	टोक्यो	5	8	6	19
2024	पेरिस	7	9	13	29

प्रमुख खिलाड़ी: अवनि लेखरा (निशानेबाजी), सुमित अंतिल (भाला फेंक), प्रमोद भगत (बैडमिंटन), शीतल देवी (तीरंदाजी)।

भारत सरकार की सुविधाएं और प्रोत्साहन योजनाएं

- **टीओपीएस (टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम):** पैरा एथलीटों को भी सामान्य एथलीटों की तरह ही वित्तीय सहायता, विदेशी प्रशिक्षण और अत्याधुनिक उपकरण प्रदान किए जा रहे हैं।
- **नकद पुरस्कार:** ओलंपिक विजेताओं के समान ही पैरा-पदक विजेताओं को करोड़ों रुपये की पुरस्कार राशि और सरकारी नौकरियां दी जा रही हैं।

- **खेल केंद्र:** ग्वालियर में विशेष रूप से पैरा खेलों के लिए 'सेंटर फॉर डिसेबिलिटी स्पोर्ट्स' की स्थापना की गई है।

सुगम्यता (एक्सेसिबिलिटी): एक अनिवार्य आवश्यकता पैरा खेलों का सबसे बड़ा योगदान 'सुगम्यता' के प्रति जागरूकता है।

- **सुगम्य भारत अभियान:** खेलों के माध्यम से यह संदेश गया कि स्टेडियमों, सार्वजनिक परिवहन और इमारतों में रैंप, लिफ्ट और स्पर्शनीय पथ का होना कोई विलासिता नहीं बल्कि अधिकार है।
- **सुगम्यता वर्धन:** जब एक पैरा खिलाड़ी पदक जीतता है, तो समाज का ध्यान उन बुनियादी ढांचों की ओर जाता है जो उन्हें रोक रहे थे। खेलों के कारण आज कई शहरों के बुनियादी ढांचे को "यूनिवर्सल डिजाइन" के अनुरूप बनाया जा रहा है।

भविष्य की संभावनाएं और स्वर्णिम भविष्य: पैरा खेलों का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। भारत अब केवल भागीदारी नहीं, बल्कि वर्चस्व की ओर बढ़ रहा है।

दिव्यांग क्रिकेट और अन्य स्वदेशी खेल: भारत दिव्यांग क्रिकेट में विश्व विजेता रहा है। हालांकि यह वर्तमान में पैरालंपिक का हिस्सा नहीं है, लेकिन इसकी वैश्विक लोकप्रियता को देखते हुए भविष्य में इसे 'पैरा-क्रिकेट' के रूप में शामिल करने की प्रबल संभावना है। इसके अलावा, भारत को कबड्डी और खो-खो जैसे खेलों के पैरा-संस्करणों को भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर लाने का प्रयास करना चाहिए।

मानसिक स्वास्थ्य और मीडिया की भूमिका: पैरा खिलाड़ियों के लिए शारीरिक प्रशिक्षण के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य भी महत्वपूर्ण है। हाल के वर्षों में मीडिया ने पैरा खेलों को 'सहानुभूति' की जगह 'प्रतिभा' के दृष्टिकोण से दिखाना शुरू किया है, जो एक स्वस्थ समाज का लक्षण है। पैरा खेलों के माध्यम से "समान कार्य, समान सम्मान" का सिद्धांत पुख्ता हुआ है।

प्रेरणा और निष्कर्ष:

पैरा खेलों से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि बाधाएं बाहर नहीं, हमारे दिमाग में होती हैं। जब एक बिना हाथ वाली खिलाड़ी (शीतल देवी) अपने पैरों से तीर चलाकर लक्ष्य भेदती है, तो वह पूरे विश्व की निराशा को खत्म कर देती है।

पैरा खेल यह सिद्ध करते हैं कि "मानवीय भावना किसी भी शारीरिक सीमा से बड़ी है।" आने वाला समय भारतीय पैरा-एथलीटों के लिए स्वर्णिम होगा, जहाँ वे केवल खिलाड़ी नहीं बल्कि समाज के 'रोल मॉडल' और परिवर्तन के दूत बनेंगे।

अर्पित जैन
क्षे.का., भोपाल-सेंट्रल

वर्ष 2025-26 के दौरान विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंतर-बैंक हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेता

राजेश कुमार

विकास तिवाड़ी

अजीत कुमार भारती

प्रशांत बाबूलाल सत्तीवाले

जयश्री राजेंद्र खापरे

अनिमेश शुक्ल

बि सरस्वति

डॉ कल्याणलक्ष्मी चित्ता

स्मिता राहुल डाबरे

रजत कुलश्रेष्ठ

कृष्ण चंद्र मंगाराज

स्विटी रविशंकर चौधरी

टीना डिंगलानी

श्रीनिवास राजू उप्पलपाटी

आशीष सूर्यकांत सालुन्के

सुमित रॉय

सुगन्या जे.

राज कुमार शर्मा

के. वेणु प्रिया

तुषार माहेश्वरी

पुनीत कुमार

मणि भूषण कुमार

अमित चौहान

आशीष बंसल

ज्योति चंद्रशेखर शेंडें

शेख सलीमा

अपूर्वा सिंह

खेल और खेल की भावना

खेलों की असली शक्ति 'खेल भावना' में निहित है। खेल भावना का अर्थ केवल जीतना नहीं है, बल्कि ईमानदारी, अनुशासन और सम्मान के साथ खेलना है। मानव सभ्यता के विकास में खेलों का महत्व सदैव सर्वोपरि रहा है। खेल केवल शारीरिक स्फूर्ति का माध्यम नहीं हैं, बल्कि ये मानसिक दृढ़ता और सामाजिक सदभाव के प्रतीक भी हैं। वास्तव में, खेल का मैदान वह पाठशाला है जहाँ एक व्यक्ति जीवन के वे पाठ सीखता है जो किसी बंद कमरे या मोटी किताबों में नहीं सिखाए जा सकते। खेल केवल शारीरिक व्यायाम या मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण की एक अतुलनीय छाप है। आदिकाल से ही मानव जीवन में खेलों का विशेष महत्व रहा है। चाहे वह मैदान पर खेला जाने वाला फुटबॉल हो या दिमाग की कसरत वाला शतरंज, खेल हमें अनुशासन, धैर्य और टीम वर्क का पाठ पढ़ाते हैं। लेकिन खेलों का असली सौंदर्य केवल जीत-हार में नहीं, बल्कि 'खेल भावना' में निहित है।

खेल भावना का अर्थ है: खेल को खेल के नियमों के दायरे में रहकर, पूरी ईमानदारी और नैतिकता के साथ खेलना। यह वह गुण है जो एक खिलाड़ी को केवल एक 'विजेता' से ऊपर उठाकर एक 'महान व्यक्तित्व' बनाता है। खेल भावना हमें प्रतिद्वंद्वी का सम्मान करना सिखाती है, साथ ही इस बात की समझ रखना कि सामने वाला खिलाड़ी विरोधी नहीं है बल्कि हमारे ही जैसा दूसरी टीम का खिलाड़ी है।

खेल का महत्व दर्शाता है स्वस्थ शरीर और मन: कहा गया है कि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।" नियमित रूप से खेल खेलने से न केवल मांसपेशियों और हड्डियों को मजबूती मिलती है, बल्कि यह रक्त संचार को सुधार कर हमें ऊर्जावान बनाए रखता है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में, जहाँ तनाव और सुस्ती आम हो गई है, खेल एक प्राकृतिक औषधि की तरह काम करते हैं। फुटबॉल, क्रिकेट, हॉकी जैसे मैदानी खेल हों या शतरंज और टेबल टेनिस जैसे इनडोर खेल, हर खेल एकाग्रता और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है।

नियमों का सम्मान: खेल के नियमों का पालन करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि वे निष्पक्ष प्रतियोगिता, खिलाड़ियों की सुरक्षा और खेल में अनुशासन व व्यवस्था बनाए रखते है। ये नियम विवादों को कम करते है और हार-जीत को ईमानदारी से स्वीकार करने की भावना विकसित करते है, जिससे खेल का आनंद और सम्मान बना रहता है। नियमों का पालन करने से खेल निष्पक्ष होता है, साथ ही अनुशासन सिखाता है।

प्रतिद्वंद्वी का सम्मान: सामने वाले खिलाड़ी को शत्रु नहीं, बल्कि एक ऐसा साथी समझना जो आपकी क्षमताओं को चुनौती देकर उन्हें निखारने में मदद करता है। हार में शालीनता और जीत में विनम्रता हारने पर निराश होकर दोषारोपण न करना और जीतने पर अहंकार न करना ही सच्ची खेल भावना है।

जीवन के कौशल और खेल: खेल हमें टीम वर्क का महत्व समझाते हैं। एक खिलाड़ी अकेले मैच नहीं जीत सकता बल्कि उसे अपने साथियों के साथ तालमेल बिठाना पड़ता है। यह सहयोग की भावना आगे चलकर कार्यस्थल और समाज में भी सहायक होती है। इसके अलावा, खेल हमें धैर्य और सहनशीलता सिखाते हैं। मैच के अंतिम क्षणों तक संघर्ष करना हमें सिखाता है कि जीवन की कठिन परिस्थितियों में हार नहीं माननी चाहिए। "हारना बुरा नहीं है, लेकिन हार मान लेना बुरा है।" खेल हमें सिखाते हैं कि हर हार एक नई सीख लेकर आती है और जीत का मार्ग प्रशस्त करती है।

हार और जीत: एक ही सिक्के के दो पहलू: खेल हमें जीवन का सबसे बड़ा सबक सिखाते हैं—हार को स्वीकार करना। जीवन में हर समय परिस्थितियाँ हमारे पक्ष में नहीं होतीं। एक सच्चा खिलाड़ी वह है जो हारने के बाद मैदान छोड़कर भागता नहीं, बल्कि अपनी कमियों का विश्लेषण करता है और अगली बार दोगुनी ऊर्जा के साथ वापसी करता है। हार हमें विनम्र बनाती है और जीत हमें और अधिक जिम्मेदारी का एहसास कराती है।

"खेल वह नहीं जो सिर्फ जीत के लिए खेला जाए, बल्कि खेल वह है जो दिल जीतने के लिए खेला जाए।"

खेल के व्यक्तिगत जीवन में लाभ:

शारीरिक स्वास्थ्य का आधार: खेलने से हमारा शरीर सक्रिय रहता है। यह मांसपेशियों को मजबूत बनाता है और शरीर में रक्त के संचार को बेहतर करता है। नियमित खेल से मधुमेह, हृदय रोग और मोटापे जैसी बीमारियों का खतरा कम हो जाता है। जिस प्रकार एक स्वस्थ पौधे के लिए धूप और पानी आवश्यक है, उसी प्रकार एक स्वस्थ और सफल जीवन के लिए खेल अनिवार्य हैं।

मानसिक मजबूती और तनाव से मुक्ति: आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में खेल

मानसिक शांति का एक बड़ा स्रोत हैं। तनाव कम करना: खेलते समय हमारा दिमाग नकारात्मक विचारों से दूर रहता है। एकाग्रता शतरंज या बैडमिंटन जैसे खेल एकाग्रता बढ़ाने में मदद करते हैं। खुशी: शारीरिक गतिविधि से शरीर में 'डोपामाइन' जैसे हैप्पी हार्मोन रिलीज होते हैं, जो हमें खुश रखते हैं।

चारित्रिक गुणों का विकास: मैदान पर सीखा गया सबक किताबों से कहीं अधिक गहरा होता है। समय पर अभ्यास पर आना और नियमों का पालन करना हमें अनुशासित बनाता है। धैर्य और सहनशीलता हारने पर संयम रखना और फिर से जीतने की कोशिश करना हमें जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करता है। नेतृत्व क्षमता टीम का नेतृत्व करना जिम्मेदारी और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है।

व्यवसाय के नए अवसर: आज खेल एक सम्मानजनक और आकर्षक करियर विकल्प है। खिलाड़ी न केवल धन कमा रहे हैं, बल्कि देश के लिए पदक जीतकर राष्ट्रीय गौरव भी बढ़ा रहे हैं, जिससे देश का प्रत्येक नागरिक स्वयं गौरान्वित महसूस करता है।

सामाजिक कौशल और टीम वर्क: खेल हमें अकेले नहीं, बल्कि सबके साथ मिलकर चलना सिखाते हैं। एक फुटबॉल या क्रिकेट टीम में खिलाड़ी अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि की तुलना मे 'देश की जीत' को ऊपर रखते हैं। खिलाड़ी अपने देश के झंडे को ऊंचा करने के लिए सच्ची भावना से फुटबॉल और क्रिकेट के मैदान में उतरते है। यह भावना दर्शाती है कि खेल अपने देश के प्रति समर्पण भावना को उजागर करती है साथ ही समाज में आपसी सहयोग और भाईचारे को भी बढ़ावा देती है।

खेल और खेल भावना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। बिना खेल भावना के, खेल मात्र एक शारीरिक व्यायाम बनकर रह जाता है। यदि हम खेल के मैदान में सीखी गई बातों—जैसे एकता, अनुशासन और हार को स्वीकार करने का साहस—को अपने दैनिक जीवन में उतार लें, तो समाज से द्वेष और संघर्ष स्वतः ही समाप्त हो जाएगा।

इसलिए, खेलें और खेलते समय यह याद रखें कि विजेता वह नहीं जो केवल पदक जीतता है, बल्कि वह है जो सबका दिल जीतता है।

हरि ओम वत्स
क्षेत्र प्रमुख,
क्षे.का., नई दिल्ली

खेल में मानसिक स्वास्थ्य

मन मजबूत हो तो जीत आसान,
खेलों में चमके हर इंसान,

तन की शक्ति जितनी जरूरी,
मन की शांति उतनी ही पूरी,

हार मिले तो हिम्मत रखना,
जीत मिले तो विनम्र रहना,

तनाव, चिंता दूर भगाओ,
सपनों को ऊंचा उड़ाओ,

योग, ध्यान और सकारात्मक सोच,
जीवन में भरते नई जोश,

खिलाड़ी वही महान कहलाता,
जो हर मुश्किल में है मुस्कुराता,

स्वस्थ मन से खेलो हर बार,
यही है सफलता का सच्चा द्वार,

मेहनत का फल होता मीठा,
उसके आगे आकाश भी लगता छोटा,

अनुशासन को जीवन में लाओ,
सपनों को साकार बनाओ,

संघर्षों से जो न घबराए,
जीवन में वह आगे बढ़ता जाए।

रंजीत कुमार साहू
सौभाग्यनगर शाखा,
क्षे.का., भुवनेश्वर

सीएसआर एवं इम्पावर हर गतिविधियां

दिनांक 26.02.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, तृश्शूर द्वारा खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से श्री अर्जुन पांडियन, आईएएस जिला कलेक्टर, तृश्शूर की उपस्थिति में राज्य स्तरीय पोल वॉल्ट चैंपियन सुश्री अमल चित्रा के.एस. को पोल वॉल्ट उपकरण भेंट किया गया। इस अवसर पर श्री सक्थिवेल एस., अंचल प्रमुख, श्री जयदेव नायर, उप अंचल प्रमुख, श्री अ. बालासुब्रमणियन क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य स्टाफ उपस्थित रहे।

दिनांक 31.03.2026 को अंचल कार्यालय, विशाखपट्टणम द्वारा डॉ. एच. टी. वासप्पा, अंचल प्रमुख द्वारा गवर्नमेंट रेज़िडेंशियल स्कूल फॉर विज़ुअली हैंडिकैप्ड गर्ल्स के विद्यार्थियों हेतु की बोर्ड स्कैनर प्रदान किया गया।

दिनांक 16.03.2026 को अंचल कार्यालय, विशाखपट्टणम द्वारा डॉ. एच. टी. वासप्पा, अंचल प्रमुख के कर कमलों से बालिकाओं के कल्याण हेतु सामाजिक संस्था जनरेशन युवा, विशाखपट्टणम में स्थित छात्रावास की छात्राओं को स्टेशनरी सामग्री वितरित की गई।

दिनांक 11.03.2026 को अंचल कार्यालय, विजयवाडा द्वारा स्थानीय पाठशाला को जरूरत की सामग्री प्रदान की गई। इस अवसर पर श्री एम. वी. एन. रविशंकर, उप अंचल प्रमुख, श्री डी. श्रीनिवास, सहायक महाप्रबंधक (एसएलबीएस) सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

दिनांक 19.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, धनबाद द्वारा सदर अस्पताल, धनबाद के पीआईसीयू वार्ड हेतु 10 सेमी फॉलर ऑटोमैटिक बेड प्रदान किए गए। इस अवसर पर श्रीमती दीपमाला लकड़ा, क्षेत्र प्रमुख एवं श्री आदित्य रंजन, उपायुक्त, धनबाद द्वारा रिबन काटकर नव निर्मित पीआईसीयू वार्ड का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में श्री सन्नी राज, डीडीसी, धनबाद; श्री प्रभात कुमार, एसएसपी, धनबाद; श्री लोकेश बारंगे, एसडीएम, धनबाद सहित अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक एवं अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे

दिनांक 18.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्लम श्री दीप्ति आनंदन, क्षेत्र प्रमुख द्वारा वृद्धाश्रम को फ्रिज एवं कुर्सियाँ प्रदान की गईं।

दिनांक 10.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा स्थानीय मिशनरीज ऑफ चैरिटी में दिव्यांग महिलाओं की सुविधा हेतु वाटर प्यूरीफायर एवं कुर्सियाँ प्रदान की गईं। इस अवसर पर श्री आलोक कुमार, क्षेत्र प्रमुख, श्री नीरज कुमार कंधवे, उप क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य स्टाफ उपस्थित रहे।

दिनांक 23.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, बोरीवली द्वारा एकीकृत जनजातीय विकास परियोजना कार्यालय के समन्वय से जव्हार गाँव स्थित सरकारी आश्रम स्कूल, गिंडे बीके में अध्ययनरत आदिवासी विद्यार्थियों को 700 से अधिक स्कूल बैग वितरित किए गए। इस अवसर पर सुश्री सौति गुहा सरकार, उप क्षेत्र प्रमुख तथा श्रीमती अपूर्व बसूर, उप मंडल अधिकारी (एसडीओ), जव्हार सहित अन्य स्टाफ सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

दिनांक 08.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट सरकारी प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं को स्टेशनरी सामग्री, स्कूल बैग, टिफ़िन, पानी की बोतलें तथा अन्य खाद्य सामग्री वितरित की गईं। इस अवसर पर श्री सरोज कुमार राऊत, क्षेत्र प्रमुख सहित बैंक एवं विद्यालय के स्टाफ सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

दिनांक 09.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर द्वारा प्राथमिक विद्यालय अमिलिहा एवं प्राथमिक विद्यालय वैदानी, चौबेपुर में छात्राओं को उपहार वितरित किए गए। इस अवसर पर श्रीमती शिवानी कन्नौजिया, मुख्य प्रबंधक सहित अन्य स्टाफ एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पैरा-स्पोर्ट्स और समावेशन की ओर यात्रा

विश्व स्वास्थ्य संगठन दिव्यांगता को हानि, गतिविधि सीमाओं और भागीदारी प्रतिबंधों के लिए एक छत्र शब्द के रूप में परिभाषित करता है जो किसी व्यक्ति (स्वास्थ्य स्थिति के साथ) और उस व्यक्ति के प्रासंगिक कारकों (पर्यावरण और व्यक्तिगत कारक) के बीच संवाद के नकारात्मक पहलुओं को इंगित करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन, (2023) द्वारा यह अनुमान लगाया गया है कि दुनिया में 1.3 बिलियन लोग हैं जो किसी न किसी रूप में दिव्यांग हैं। दिव्यांगजनों को अक्सर सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है और कई समाजों में दिव्यांगता को लेकर नकारात्मक धारणाएं और भेदभाव प्रचलित हैं। दिव्यांगता से जुड़े पूर्वधारणाएं कारण, दिव्यांगजनों को आम तौर पर शिक्षा, रोजगार और सामुदायिक जीवन से वंचित कर दिया जाता है, जिससे वे अपने सामाजिक विकास, स्वास्थ्य और कल्याण के लिए आवश्यक अवसरों से वंचित हो जाते हैं। कुछ समाजों में दिव्यांगजनों को आश्रित और अक्षम समझा जाता है, जिससे निष्क्रियता को बढ़ावा मिलता है और अक्सर शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों की गतिशीलता उनकी दिव्यांगता के कारण अधिक सीमित हो जाती है।

खेल सामाजिक समावेश में कैसे योगदान दे सकता है?

खेल का सबसे बुनियादी तत्व है लोगों का एक साथ आकर खेलना। खेल बाधाओं को तोड़ता है और उन जगहों पर पुल बनाता है जहां आमतौर पर सीमाएं मौजूद होती हैं। खेल समाज में समावेश की भावना पैदा कर सकता है, चाहे आपकी उम्र, लिंग अभिव्यक्ति, शारीरिक रूप से सक्षम या दिव्यांग होना, धर्म, जातीयता या सामाजिक-आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। खेल की भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाओं को पार करने की अनूठी क्षमता इसे समावेशन और अनुकूलन की रणनीतियों के लिए एक उत्कृष्ट मंच बनाती है। इसके अलावा, खेल की सार्वभौमिक लोकप्रियता और इसके शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक विकास संबंधी लाभ इसे दिव्यांग व्यक्तियों के समावेशन और कल्याण को बढ़ावा देने का एक आदर्श साधन बनाते हैं।

खेल दिव्यांगता से जुड़े पूर्वधारणा और भेदभाव को कम करने में सहायक हो सकता है, क्योंकि यह दिव्यांग व्यक्तियों के कौशल को उजागर करके और दिव्यांगता को व्यक्ति के रूप में देखने की प्रवृत्ति को कम करके, दिव्यांग व्यक्तियों के प्रति सामुदायिक दृष्टिकोण को बदल सकता है। खेल के माध्यम से, शारीरिक रूप से सक्षम व्यक्ति दिव्यांग व्यक्तियों के साथ सकारात्मक रूप से संवाद करते हैं, जिससे दिव्यांग व्यक्तियों की क्षमताओं और सीमाओं के बारे में उनकी धारणाओं को बदलने के लिए मजबूर होना पड़ता है। खेल दिव्यांग व्यक्तियों को उनकी पूर्ण क्षमता का एहसास कराने और समाज में बदलाव लाने के लिए सशक्त बनाकर उनके जीवन में गहरा परिवर्तन लाता है। खेल व्यक्तियों को प्रभावी ढंग से संवाद करना सिखाता है, साथ ही टीम वर्क, सहयोग और दूसरों के प्रति सम्मान का महत्व भी बताता है। खेल दिव्यांग व्यक्तियों को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाकर उनकी निर्भरता कम करने और अधिक आत्मनिर्भरता विकसित करने में भी सहायक होता है। खेल एक परिवर्तनकारी साधन के रूप में विशेष महत्व रखता है, खासकर दिव्यांग महिलाओं के लिए, क्योंकि उन्हें अक्सर लिंग और दिव्यांगता दोनों के आधार पर दोहरे भेदभाव का सामना करना पड़ता है। एक रिपोर्ट के अनुसार, 93% दिव्यांग महिलाएं खेलों में भाग नहीं लेती हैं और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में दिव्यांग खिलाड़ियों में महिलाओं की संख्या केवल एक तिहाई है। दिव्यांग महिलाओं को प्रतिस्पर्धा करने और अपनी शारीरिक क्षमता प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करके, खेल दिव्यांग महिलाओं से जुड़ी लैंगिक रूढ़ियों और नकारात्मक धारणाओं को कम करने में मदद कर सकता है।

भारतीय पैरा खेलों का कायापलट धीमी गति से नहीं, बल्कि निरंतर प्रगति के साथ हुआ है। विश्व ने हाल ही में विकास और शांति के लिए अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस (6 अप्रैल 2025) "खेल के मैदान को समतल करना: सामाजिक समावेश के लिए खेल" विषय के तहत मनाया, भारतीय पैरा-स्पोर्ट्स की कहानी इस विषय के लिए एक आदर्श उदाहरण है, जो लचीलेपन, समावेशिता और मानवीय उपलब्धि की कहानी प्रस्तुत करती है। यह उन देशों और प्रशासनिक इकाइयों के लिए बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जो एक ऐसा खेल वातावरण बनाने की कोशिश कर रहे हैं जहां हर कोई, अपनी सामाजिक और शारीरिक बाधाओं के बावजूद, अपने सपनों को पूरा कर सके।

पिछले दशक में इस क्षेत्र में जो उछाल आया है, उसके कई कारण हैं। इनमें से तीन महत्वपूर्ण कारक हैं सरकार का ध्यान, निजी और गैर-सरकारी संगठनों से बढ़ता समर्थन और सामाजिक स्वीकृति। युवा मामले एवं खेल मंत्रालय (एमवाईएएस) के लिए 2014-15 में आवंटित बजट मात्र 227 करोड़ रुपये था, जो 2025-26 में बढ़कर 3794.3 करोड़ रुपये हो गया, जो इस बदलाव को दर्शाता है। पैरा एथलीटों की पहचान और विकास में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली दो पहलें हैं टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टीओपीएस) और "खेलो इंडिया" कार्यक्रम। एमवाईएएस का प्रमुख कार्यक्रम टीओपीएस, जो 2014 में शुरू हुआ था, ओलंपिक में भाग लेने के इच्छुक खिलाड़ियों को विदेशी प्रशिक्षण, अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं, उपकरण और कोचिंग शिविर सहित समग्र सहायता प्रदान करता है, साथ ही प्रत्येक खिलाड़ी को 50,000 रुपये का मासिक वजीफा भी देता है। इसी प्रकार, "खेलो इंडिया" कार्यक्रम के तहत, "खेलो इंडिया पैरा गेम्स" (केआईपीजी) का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। नई दिल्ली में आयोजित नवीनतम 2025 केआईपीजी खेलों में भारत भर से 1300 से अधिक पैरा-एथलीटों ने छह खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इसी क्रम में, भारत में खेल उत्कृष्टता को बढ़ावा देने वाली प्रमुख सरकारी संस्था, भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई) ने गांधीनगर में पैरा-एथलीटों के प्रशिक्षण के

लिए एक समर्पित नोडल केंद्र स्थापित किया है, जो उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप विश्व स्तरीय सुविधाएं सुनिश्चित करता है। इन सुविधाओं के कारण मानवमिति विशेषज्ञ, पोषण विशेषज्ञ, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्री और अन्य विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न खेल विज्ञान का उपयोग पैरा-एथलीटों के विकास के लिए किया जा रहा है।

इसके अलावा, मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त भारतीय पैरालंपिक समिति (पीसीआई) ने राष्ट्रीय स्तर के टूर्नामेंट और प्रतिभा पहचान कार्यक्रमों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे जमीनी स्तर पर भागीदारी को बढ़ावा मिला है। पैरा-एथलीटों के विकास में राज्यों की बढ़ती रुचि का उल्लेख करना भी महत्वपूर्ण है। हरियाणा, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश समर्पित पैरा-खेल केंद्रों के साथ इस मामले में अग्रणी हैं, जो यह साबित करते हैं कि जब उपजाऊ जमीन मिलती है तो सपने साकार होते हैं और फलते-फूलते हैं। राज्य सरकारों ने पैरा-एथलीटों को वित्तीय प्रोत्साहन, रोजगार के अवसर और सेवानिवृत्ति के बाद के लाभ प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे भागीदारी को और प्रोत्साहन मिला है।

दूसरा, खेल जगत में निजी और गैर-सरकारी संस्थाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है। गोस्पोर्ट्स फाउंडेशन, रिलायंस फाउंडेशन यूथ स्पोर्ट्स (आरएफवाईएस), समर्थ बाय हुंडई, जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स और कई अन्य संगठन कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्वों के साथ-साथ धर्मार्थ पहलों के माध्यम से पैरा-एथलीटों का समर्थन कर रहे हैं। इनका उद्देश्य संसाधनों की कमी को पूरा करना और तकनीकी, बुनियादी ढांचागत, पुनर्वास और तकनीकी सहायता प्रदान करना है, जिससे पैरा-एथलीटों के जीवन में उल्लेखनीय बदलाव आया है।

इससे अनुभवी एथलीटों को पैरा-खेल के इच्छुक खिलाड़ियों का समर्थन करने के लिए कोचिंग अकादमियां शुरू करने का अवसर भी मिला है। उदाहरण के लिए, द्रोणाचार्य पुरस्कार विजेता गौरव खन्ना ने एजिस फेडरल लाइफ इंश्योरेंस द्वारा वित्त पोषित अपनी पैरा-बैडमिंटन अकादमी शुरू की है, जो अंतरराष्ट्रीय चैंपियन तैयार करने वाले एक विशेष प्रशिक्षण केंद्र के रूप में उभरी है। इसके अतिरिक्त, बहुराष्ट्रीय निगमों के साथ सहयोग से पैरा-एथलीटों के लिए मीडिया कवरेज, समर्थन और रोजगार के अवसर बढ़े हैं, जिससे वे मुख्यधारा के खेल जगत में और अधिक एकीकृत हो रहे हैं। इंडसइंड बैंक जैसे कई ब्रांडों ने भी अपने विज्ञापन अभियानों में पैरा-एथलीटों को शामिल करना शुरू कर दिया है, जिससे उनकी दृश्यता बढ़ रही है और लोकप्रिय संस्कृति में उनकी उपलब्धियों को सामान्य बनाया जा रहा है। पैरा-एथलीटों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में शायद सबसे बड़ा परिवर्तन आया है। कभी सहानुभूति की दृष्टि से देखे जाने वाले पैरा-एथलीटों को अब राष्ट्रीय नायकों के रूप में सम्मानित किया जाता है। अवनी लेखारा, सुमित अंतिल और देवेंद्र झाझरिया जैसे एथलीटों की सफलता ने रूढ़ियों को चुनौती दी है और समावेशिता की संस्कृति को बढ़ावा दिया है। पैरा-एथलीटों के माता-पिता का समर्थन भी लगातार बढ़ रहा है। पेरिस पैरालंपिक्स 2025 में पैरा-पिस्टल में कांस्य पदक जीतने वाली रुबीना फ्रांसिस ने एक साक्षात्कार में बताया कि कैसे उनके माता-पिता उनकी यात्रा में उनके साथ खड़े रहे। मीडिया प्रतिनिधित्व और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने इस बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे पैरा-खेल आयोजनों की कवरेज बढ़ी है और एथलीटों को प्रशंसकों और प्रायोजकों से सीधे जुड़ने का अवसर मिला है। ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म ने उपलब्धियों को उजागर किया है, धन आकर्षित किया है और समावेशिता के बारे में चर्चा को बढ़ावा दिया है। #Cheer4ParaAthletes अभियान को व्यापक समर्थन मिला और इसने जनसमर्थन जुटाया। शैक्षणिक संस्थानों और जमीनी स्तर की पहलों ने भी पैरा-खेलों के बारे में जागरूकता बढ़ाकर और भागीदारी को प्रोत्साहित करके योगदान दिया है, जिससे भावी पीढ़ी अधिक समावेशी खेल वातावरण में पली-बढ़ी है।

भारत का पैरा-स्पोर्ट्स का सफर हमें यह सिखाता है कि खेल किस प्रकार समावेशी विकास ला सकते हैं और लोगों के जीवन में बदलाव ला सकते हैं। भारत में पैरा-स्पोर्ट्स आंदोलन के निरंतर विकास के साथ, भविष्य के लिए रोमांचक संभावनाएं हैं। सरकारी नीतियों, निजी क्षेत्र की भागीदारी, सामाजिक समर्थन और सोशल मीडिया के संयोजन ने पैरा-एथलीटों के लिए एक स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण किया है, जिसके परिणामस्वरूप पिछले पेरिस पैरालंपिक में 29 पदक और हाल ही में आयोजित विश्व पैरा एथलेटिक्स ग्रांड प्रिक्स 2025 में 134 पदक प्राप्त किए। तथापि हम केवल प्राप्त पदकों के आधार पर सफलता का आकलन नहीं कर सकते। फिर भी, हमें इस बात की सराहना करनी चाहिए कि खेल किस प्रकार पैरा-स्पोर्ट्स एथलीटों के जीवन के विकास को सक्षम बनाते हैं, उन्हें समाज में भेदभाव, आत्मसंदेह और तिरस्कार से दूर करते हैं। अन्य देश समावेशिता को बढ़ावा देने और दिव्यांग एथलीटों को सशक्त बनाने के लिए इसी तरह के मॉडल अपना सकते हैं। भारत के पैरा-एथलीटों की सफलता यह दर्शाती है कि जब दृढ़ संकल्प और अवसर का मेल होता है तो क्या हासिल किया जा सकता है। यह खेल को एक सार्वभौमिक समानता लाने वाले कारक के रूप में मजबूत करता है, बाधाओं को पार करने और समुदायों को एकजुट करने में सक्षम है। हाल ही में मनाए गए विकास और शांति के लिए अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर, भारत का पैरा-स्पोर्ट्स आंदोलन प्रेरणा का एक स्रोत है। देश का अनुभव एक समग्र दृष्टिकोण के महत्व को रेखांकित करता है, जिसमें नीति, कॉरपोरेट समर्थन, सामाजिक परिवर्तन और डिजिटल सहभागिता एक समावेशी खेल संस्कृति का निर्माण करते हैं। इन सिद्धांतों को अपनाकर, देश सामाजिक समावेश और विकास के लिए खेलों की क्षमता का उपयोग कर सकते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रत्येक व्यक्ति को वैश्विक मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिले।

प्रीति
वसंत कुंज शाखा,
क्षे.का., दिल्ली (द)

एक महिला खिलाड़ी के रूप में मेरे अनुभव

मैं बैंक में कार्यरत हूँ और अपने दैनिक कार्यों के साथ-साथ खेलों में सक्रिय रहना मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कई लोगों को यह साधारण लग सकता है कि नौकरी के साथ खेलना सिर्फ एक शौक है, लेकिन मेरे लिए यह केवल शौक नहीं, बल्कि एक ऐसी यात्रा है जिसने मुझे भीतर से मजबूत बनाया है। खासकर एक महिला के रूप में खेलों से जुड़ना, अपने आप में एक अनुभव है जहाँ केवल खेल ही नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, संघर्ष, धैर्य और सबसे बढ़कर नैतिकता का गहरा संबंध जुड़ा होता है। जब मैंने खेलों में भाग लेना शुरू किया, तब मुझे केवल इतना पता था कि खेलना है, अच्छा करना है और जीतना है। लेकिन धीरे-धीरे मुझे समझ में आया कि एक महिला खिलाड़ी होने के नाते हमें सिर्फ खेल नहीं खेलना होता, बल्कि अपने व्यवहार, अपने आचरण और अपने निर्णयों से एक उदाहरण भी प्रस्तुत करना होता है। हमारे हर कदम को लोग थोड़ा अलग नजरिए से देखते हैं। कभी प्रेरणा के रूप में, तो कभी एक कसौटी के रूप में। ऐसे में खेलों में नैतिकता का महत्व और भी बढ़ जाता है।

मुझे आज भी याद है जब मैंने पहली बार अपने कॉलेज की टीम के साथ वॉलीबॉल खेला था। शुरुआत में थोड़ी झिझक थी क्या मैं सही खेल पाऊँगी? क्या लोग मुझे स्वीकार करेंगे? क्या मैं अपने प्रदर्शन से खुद को साबित कर पाऊँगी? लेकिन जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ा, मैंने महसूस किया कि मैदान में सबसे ज्यादा जरूरी है आत्मविश्वास और ईमानदारी। अगर आप खुद पर भरोसा रखते हैं और खेल को सही भावना से खेलते हैं, तो धीरे-धीरे सब कुछ अपने आप ठीक होने लगता है। एक महिला खिलाड़ी के रूप में कई बार हमें ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जहाँ हमें खुद को बार-बार साबित करना पड़ता है। लेकिन मैंने यह सीखा है कि जवाब हमेशा शब्दों से नहीं, बल्कि अपने प्रदर्शन और अपने आचरण से देना चाहिए। अगर हम मैदान में अनुशासन और नैतिकता बनाए रखते हैं, तो वही हमारी सबसे बड़ी ताकत बन जाती है।

खेलों में नैतिकता का सबसे बड़ा पहलू मेरे लिए ईमानदारी है। कई बार ऐसा होता है कि खेल के दौरान छोटे-छोटे फैसले हमारे हाथ में होते हैं जैसे गेंद अंदर थी या बाहर, या फिर हमने कोई गलती की या नहीं। ऐसे में अगर हम सच का साथ देते हैं, तो भले ही उस पल हमें नुकसान हो, लेकिन अंदर से एक संतोष मिलता है। और यही संतोष हमें बार-बार सही रास्ता चुनने की ताकत देता है। एक बार टेनिस खेलते समय ऐसा ही एक पल आया था। गेंद लाइन के बहुत करीब गिरी थी और विरोधी खिलाड़ी को लगा कि वह बाहर है, लेकिन मुझे साफ दिख रहा था कि गेंद लाइन को छू गई थी। अगर मैं चाहती, तो चुप रह सकती थी और पॉइंट अपने पक्ष में ले सकती थी। लेकिन मैंने सच बताया। उस समय शायद मैंने एक पॉइंट खो दिया, लेकिन मैंने अपने अंदर की सच्चाई को जीतने दिया। उस दिन मुझे यह एहसास हुआ कि असली जीत स्कोरबोर्ड पर नहीं, बल्कि हमारे अंदर होती है।

एक महिला खिलाड़ी के रूप में खेलों में सम्मान का भी बहुत बड़ा महत्व है। हमें अपने साथी खिलाड़ियों, विरोधी टीम और निर्णायकों का सम्मान करना होता है। कई बार खेल के दौरान भावनाएँ उफान पर होती हैं—हार का डर, जीत की चाह, दबाव—सब कुछ एक साथ चलता है। लेकिन ऐसे समय में खुद को संयमित रखना और दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना ही असली खेल भावना है। मैंने यह भी महसूस किया है कि जब एक महिला खिलाड़ी मैदान में शांति और संतुलन के साथ खेलती है, तो वह केवल अपने खेल से ही नहीं, बल्कि अपने व्यवहार से भी लोगों को प्रभावित करती है। धीरे-धीरे लोग उसे गंभीरता से लेने लगते हैं, उसकी बातों को महत्व देने लगते हैं और उसे एक रोल मॉडल के रूप में देखने लगते हैं।

मेरे लिए खेल केवल शारीरिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक संतुलन का भी माध्यम है। बैंक के काम के बाद जब मैं खेल के मैदान में जाती हूँ, तो एक अलग ही ऊर्जा महसूस होती है।

आज अगर कोई मुझसे पूछे कि खेलों ने मुझे क्या दिया, तो मैं यही कहूँगी कि खेलों ने मुझे खुद से मिलवाया है। उन्होंने मुझे सिखाया है कि असली ताकत बाहर नहीं, बल्कि अंदर होती है। और इस ताकत को बनाए रखने के लिए नैतिकता का होना बेहद जरूरी है।

नीतिका बाजोरिया
वाघोली शाखा,
क्षे.का., पुणे-मेट्रो

A Proud Legacy in Motion

Sports Activities at Union Bank of India

Over the years, Union Bank of India has witnessed a significant evolution in the management of its sports activities, reflecting changing organizational priorities and governance practices. In its earlier phase, sports activities were primarily driven through Union Bank Sports Club, playing a vital role in promoting participation, identifying talent, and fostering a vibrant sporting culture within the institution.

With the passage of time and the growing need for greater uniformity, transparency, government directions and strategic alignment, the Bank gradually transitioned towards a more structured and institutionalized framework. Sports activities are now governed through Board-approved policy, ensuring clearly defined guidelines & standardized procedures. This transition reflects a shift from an informal, decentralized model to a centrally governed and professionally managed system. The policy-driven approach has strengthened governance, enabled better planning, and ensured optimal utilization of resources. It has also aligned sports initiatives with the Bank's broader organizational objectives, thereby enhancing sustainability while continuing to uphold the core philosophy of encouraging sporting talent and excellence.

Union Bank of India has, for over five decades, remained deeply committed to promoting sports as an integral part of holistic development.

The Bank's sports ecosystem was traditionally anchored by the Union Bank Sports Clubs established across various zonal and regional centres. These clubs functioned under the aegis of the Union Bank Sports Control Board headquartered in Mumbai, the Bank's central hub. The Chairman and Managing Director served as the Chief Patron, underscoring the institutional importance accorded to sports. Among all centres, the Mumbai Sports Club emerged as the most vibrant and active, driving many initiatives that strengthened the Bank's presence in competitive sports. The Bank has consistently recognized that sporting activities foster teamwork, perseverance, and enabling Sportspersons to excel at national and international levels & providing facilities essential for nurturing sportsmanship.

In 1970s, Bank was facilitating sportspersons to leave office early for practice and participation in matches for the Bank's Teams. In 1980s, Bank started granting Special Leave to Sportsmen representing Bank, State or the Country for participation in sporting events of State, National or International importance. The 1990s marked a golden era, when inter-bank competitions under the IBA Sports Board were at their peak, and the Bank actively strengthened its teams by recruiting talented players and introducing a stipendiary scheme. Initially, team requirements were identified by sports clubs and team secretaries, followed by applications, ground trials, and interviews. Subsequently, during 1994–96, recruitment was formalized through advertisements, with the Recruitment and Staff Departments jointly overseeing the process of screening candidates, conducting selection trials, and finalizing appointments in accordance with the Bank's norms. During 1996, the bank recruited Sportspersons. This progressive evolution of sports activities and recruitment not only strengthened the Bank's teams but also established a legacy of sporting excellence. The Union Bank Sports Club, with its rich heritage and sustained commitment, has played a pivotal role in nurturing sportspersons who have gone on to achieve distinction at national and international levels. As the Bank continues to carry forward this proud tradition, its sporting journey stands as a testament to the enduring spirit of excellence, inspiring generations to strive, compete, and achieve beyond boundaries.

Sports Policy- Bank has introduced its maiden Sports Policy in the year 2023, since then the sports activities

in the Bank are governed in a structured and transparent manner through Committee Approach. Recently the Sports Policy was revamped and renamed as 'Policy of Meritorious Sportspersons'. The said policy provides recognition with the approval of central sports committee, to the individual staff members who are not recruited under sports quota but have demonstrated excellence in respective sports.

Committees under Sports Policy

a. Central Sports Committee (CSC): stationed at Central Office function as the Apex Committee for overall regulation of sports in Bank.

b. Zonal Sports Committee (ZSC): stationed at Zonal Offices for regulation of sports and allied activities at Zonal Level.

c. Selection Committee (SC): Adhoc Committee constituted by CSC on recommendation of concerned Zonal Head for selection of players to the Bank's Sports team.

In addition to the sportspersons recruited under sports quota, the said policy, with the approval of CSE provides recognition as sports person to the staff members who have displayed excellence in respective sports, even though they are not recruited under sports quota.

Recruitment of Sportspersons

In 2017, based on the suggestions of the Parliamentary Committee on HRD & recommendations made by the Ministry of Youth Affairs & Sports, a separate chapter was introduced under Union Bank of India Recruitment Policy containing provisions for recruitment of Sportspersons in the Bank.

Recruitment and Stipendiary Models: A Balanced Approach- Union Bank's sports framework effectively combined two complementary approaches:

Recruited Sportspersons (Permanent Employees): Recruited players are the backbone of the Bank teams. By ensuring, Long-term association with the Bank; performing Dual roles of representing the Bank in sports and performing administrative duties; which provides them with access to stability, medical benefits, and institutional support which in turn helps in enhanced performance driven by job security and structured development.

These players provide continuity and ensure that Bank teams remain cohesive, competitive, and available for representation over extended periods.

Stipendiary Sportspersons: The stipendiary scheme enables the Bank to engage talented players for shorter durations; strengthen teams for specific competitions and provide financial assistance to promising young athletes.

The stipendiary model proved instrumental in bridging gaps in team composition, promoting emerging talent at a crucial stage in their careers and supporting sportspersons financially during their formative years.

Distinguished Sportspersons and Achievements- Union Bank has been home to a remarkable array of sportspersons who have brought laurels to the institution. While it is impossible to enumerate the achievement of all the staff players. Some of the notable names includes:

i. **Chess:** Pravin Thipsay, Raghunandan Gokhale, Sharad Tilak, Ravi Hegde and Shekhar Sahu

ii. **Badminton:** Prakash Padukone, Ami Ghia, Kiran Kaushik, Anil Pradhan, Vivek Joshi

iii. **Kabaddi:** L. Srinivas Reddy

iv. **Table Tennis:** Indu Puri, Kishore Ghorpade, Kashmira Patel

v. **Weightlifting:** Satish Rai

vi. **Bodybuilding:** Jentry Francis, Shri Raymond D'Souza

vii. **Football:** Ryan D'Souza

viii. **Athletes-** Vandana Rao, Reeth Abraham

ix. **Cricket (Ranji Trophy players):** Sunil Chaturvedi, Pradeep Sundaram, Sudhakar Harmalkar, Arun Shetty, Prashant Shetty.

x. **Hockey:** The Bank has supported both emerging and elite talent. Vikram Pillay, who initially represented the Bank as a stipendiary player, went on to wear the national colours. Additionally, the Bank has extended support to international women hockey players under the stipend scheme.

Shining Sports Stars of the Bank

Badminton

Shri Prakash Padukone – First Indian to win the All-England Championship (1980), multiple-time National Champion (1972–79), and recipient of the Padma Shri (1982). He served as National Coach and was associated with the Bank (1975–82) before pursuing badminton full time.

Shri Kiran Kaushik – National Doubles Champion and former World No.1 (Doubles), represented India internationally and later served the Bank in senior leadership roles and retired as AGM.

Table Tennis

Ms. Indu Puri – Represented India in 43 international events (1973–85), won 38 international medals, and achieved high global rankings. Recipient of the Arjuna Award (1981), she also excelled in service to the Bank and retired after long and distinguished service.

Chess

GM Pravin Mahadeo Thipsey – Seven-time National Champion and Arjuna Awardee, among India's top chess players; served the Bank for over three decades.

Shri Raghunath Gokhale – Dronacharya Awardee and former state champion, recognized for his contribution as a coach and mentor.

Other notable players include Ravi Hegde, Shekar Sahu, Sharad Tilak, and D.V. Prasad, all distinguished in international chess.

Olympian Athletes

Smt. Vandana S Rao – Olympian (1984, 1988), Asian Games Gold Medallist, and Arjuna Awardee (1987); served the Bank before opting for VRS.

Smt. Reeth Abraham – Asian Games Gold Medallist, former national champion in heptathlon, Arjuna Awardee (1997); had an illustrious athletic career and long service with the Bank.

Bodybuilding

Shri Raymond D'Souza – Multiple-time Mr. India winner and international champion (Mr. World 1990), with a career spanning a decade he retired after nearly 40 years of service in the Bank.

Weightlifting

Shri Satish Rai – National-level champion who set 29 records and recipient of Arjuna Award and State honours, recognized for consistent excellence in the sport.

Kabaddi

Shri L. Srinivas Reddy – A distinguished former international player and acclaimed coach, he has made significant contributions at both national and international levels. He guided the Indian junior team to a gold medal at the Asian Junior Championship and led the senior Indian team to victory at the 2018 Dubai Masters. In 2025, as head coach, he steered the Indian boys' team to a gold medal at the Youth Asian Games in Bahrain reaffirming India's dominance in kabaddi.

Cricket (Coaching)

Shri Prashant Shetty – A highly respected cricket coach known for nurturing young talent, he has mentored leading players such as Prithvi Shaw, Jemimah Rodrigues, and Arjun Tendulkar. His long association with Jemimah Rodrigues highlights his contribution in shaping international level cricketers.

Hockey

Ms. Rutuja Pisal – An emerging star in Indian women's hockey, she played a key role in India's victory at the Junior Asia Cup (2023) and excelled at the 2024 FIH Hockey5s World Cup. She has demonstrated match winning ability in domestic leagues and has been recognised by the Bank with an out of turn promotion.

Ms. Chandana J – A promising forward from Hockey Karnataka, she has consistently performed in national championships and is part of the senior national camp prospects. Known for her agility and attacking skills, she is considered a future talent for higher representation.

Mountaineering / Adventure Sports

Ms. Chhonzin Angmo – A symbol of resilience, she became the first visually impaired woman in the world to summit Mount Everest (19 May 2025). Supported by the Bank, she has also scaled Mount Elbrus, Kilimanjaro, and Aconcagua. A recipient of national honours, she exemplifies determination and inspires inclusive excellence.

Looking Ahead

Union Bank of India's sporting legacy reflects a forward looking vision and a deep-rooted commitment to holistic development. By revitalizing structured recruitment processes, enhancing institutional support mechanisms, and maintaining an optimal balance between permanent and stipendiary players, the Bank is strengthening its rich tradition of sporting excellence. The journey of the Union Bank Sports Club is not merely a record of achievements—it reflects passion, perseverance, and unwavering dedication. It stands as a powerful testament to the belief that excellence in sports mirrors the strength, discipline, and spirit of the institution.

Sports Desk
HRD, CO, Mumbai

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के खेल सितारे
Sports Stars of Union Bank of India

भ.नि. क्रमांक के अनुसार यथा 31.03.2026 • As per P.F. Number as on 31.03.2026

राजेश मनोहर मातकरी
Rajesh Manohar Matkari

निलेश जयसिंग भोसले
Nilesh Jaysing Bhosale

शिवम तोरिया
Shivam Toriya

संदीप दत्ताराम कोट्रे
Sandeep Dattaram Kotre

प्रशांत जयकर शेट्टी
Prashant Jayakar Shetty

पी. सुधाकर रेड्डी
P. Sudhakar Reddy

एस. राजा
S Raja

स्टेनली माइकल थॉमस
Stanley Michael Thomas

के. एन. गोपाल
K. N. Gopal

जयंत गोपाल कुंदर
Jayantha Gopal Kunder

फ्रांसिस जेंट्री
Francis Jentry

ए. नंदा किशोर
A. Nanda Kishore

मोहम्मद नदीम मोहम्मद इस्माइल अंसारी
Mohd Nadeem Mohd Ismail Ansari

प्रशांत संभाजी सुर्वे
Prashant Sambhaji Surve

प्रशांत बाबूराव येरुंकर
Prashant Baburao Yerunkar

एलरॉय मार्टिन रोड्रिग्स
Elroy Martin Rodrigues

संतोष बालाजी बागवे
Santosh Balaji Bagwe

एम. श्रमित
M. Shramith

रायन एडविन डि'सूजा
Ryan Edwin D'souza

अनुरूप चंद्र बोरो
Anurup Chandra Boro

एस. किरण कुमार
S. Kiran Kumar

बलबिंदर सिंह जर्नैल टैंक
Balbinder Singh Jarnail Tank

विशाल अशोक सोनटक्के
Vishal Ashok Sontakke

सैयद गाजीसलाहुद्दीन
Sayed Gazisalahuddin

सतीश राय
Satish Rai

विशाल महादेव कदम
Vishal Mahadeo Kadam

मुर्गेश मुगाबस्त
Murgesh Mugabast

नयन माणेकलाल सोलंकी
Nayan Maneklal Solanki

रोहन गुलाबराव गोडसे
Rohan Gulabrao Godase

क्लिफर्ड जोसेफ जोशुआ
Clifford Joseph Joshua

विनय टी.
Vinay T.

एन. शिवराम कृष्णा
N. Sivarama Krishna

गणेश बनगारा बी.
Ganesh Banagara B.

अशोका के. एस.
Ashoka K. S.

लिंगमपल्ली श्रीनिवास रेड्डी
Lingampally Srinivas Reddy

परबत सिंह
Parbat Singh

एन. अर्जुन यादव
N. Arjun Yadav

जी. रमेश
G. Ramesh

रमेश गुड्डे
Ramesh Gudde

मेकला नवीन रेड्डी
Mekala Naveen Reddy

महांतेश पाटने
Mahantesh Patne

वेंकटेशन एस.
Venkatesan S.

अमोल शिंदे
Amol Shinde

बृजेश कुमार यादव
Brijesh Kumar Yadav

मोहम्मद अब्दुल खादर
Mohd Abdul Khader

रोनाल्ड रॉय रोड्रिग्स
Ronald Roy Rodrigues

मंजुनाथ
Manjunatha

पी. एम. सर्वेश कुमार
P. M. Sarvesh Kumar

एम. विनय कुमार
M. Vinay Kumar

विनु प्रसाद एन.
Vinu Prasad N.

नीरज बिष्ट
Neeraj Bist

जॉन्नलगड्डा रामकृष्णा
Jonnalagadda Ramakrishna

आदित्य जी. के.
Adithya G. K.

अभिनव कुमार
Abhinav Kumar

पोतुगंटी सतीश कुमार
Pothuganti Satish Kumar

राजू कलाल
Raju Kalal

मंजुनाथ आर.
Manjunatha R.

गणेश भोंगीर
Ganesh Bhongir

गुरुनाथ कल्याणी
Gurunath Kalyani

पंकज रॉय
Pankaj Roy

चिट्टबोइना अरुण कुमार यादव
Chittaboina Arun Kumar Yadav

पुरंदरा पी. जे.
Purandara P. J.

महेश कुमार एम. आर.
Maheshkumar M. R.

रामावत सूर्य नाइक
Ramavath Surya Naik

मुलुमुदिसाई प्रवीण कुमार
Mulumudisai Praveen Kumar

अंजलि एच. आर.
Anjali H. R.

अभिषेक के. एस.
Abhishek K. S.

गौरव भंवर
Gaurav Bhanwar

याशिका एम. जी.
Yashika M. G.

रोहित गोपाल बागवे
Rohit Gopal Bagwe

अन्वित एम.
Anvith M.

एन. आर. सौम्याश्री
N. R. Soumyashree

अक्षय सुरेश मिराशी
Akshay Suresh Mirashi

छोंजिन अंगमो
Chhonzin Angmo

हेमा अशोक हप्पाली
Hema Ashok Happali

सचिन महादेव खांबे
Sachin Mahadev Khambe

प्रगदीश्वरराजा एम.
Pragadeeshwararaja M.

दुर्गा राजू शिंदे
Durga Raju Shinde

राम गौरी वेंकट चंद्रमौली कूराकुला
Rama Gouri Venkata Chandramouli Kurakula

शुभम कुमार
Subham Kumar

भावना सतीशराव खाडे
Bhavana Satishrao Khade

सुभाष चंद्रमा नायडू मिरियाला
Subhash Chandrama Naidu Miriyala

आकांक्षा राजकुमार सिंह
Akansha Rajkumar Singh

निधि
Nidhi

अर्पिता चंद्रशेखर
Arpita Chandrashekar

शिवानी सिंह सैनी
Shivani Singh Saini

सविता
Savita

कृष्ण हनमंत कुंभार
Krishna Hanmant Kumbhar

कूर्मपु रम्या
Kurmapu Ramya

रजनी वास्कले
Rajani Waskale

दीप गौरव
Deep Gaurav

चंदना जे.
Chandana J.

ऋतुजा दादासो पिसाल
Rutuja Dadaso Pisal

बोया सुरेश बाबू
Boya Suresh Babu

शाइना तंगम्मा एम. पी.
Shaina Thangamma M. P.

From Stranger to 'Pappu Bhai': A Cricket Story

I am a banker by profession, and a few years ago, I was transferred from Hyderabad to Mumbai. It was a big shift - not just geographically, but culturally too. The moment I stepped into the buzzing city, I felt like a stranger in a sea of people. After reporting at my new branch, the loneliness hit me hard. I had no friends in this vast, unfamiliar place, and making new ones wasn't easy. The language was different, the pace was overwhelming, and I often found myself missing the warmth of familiar faces back home. One weekend, while wandering around the neighbour hood near my bank quarters, I stumbled upon a group of youngsters playing cricket on an open ground. There was something comforting about the scene - the sound of bat hitting ball, the shouts of encouragement, the laughter. By their appearances and voices, I could tell they came from different backgrounds, faiths, and walks of life. Yet on field, none of it seemed to matter. Cricket had united them. It reminded me that this game has no barriers-just a shared love for the sport.

I stood quietly at the edge of the ground, watching them play, my heart itching to join. I have always been passionate about cricket, but something held me back - shyness, hesitation, the fear of rejection. As I stood there lost in my thoughts, one of the players noticed me. After a few minutes, he walked up to me and smiled. "Kheloge?" he asked in Hindi. Though I wasn't very fluent in Hindi, the tone, the expression - it was clear. He was inviting me in. I nodded with a small smile, and just like that, I was handed a ball and a place in the field.

Soon enough, they began asking my name to coordinate fielding positions. "Pappu Aditya," I said. They grinned and started calling me "Pappu Bhai." There was something so warm and familiar in that nickname - it felt like I belonged. They asked if I could bowl. I said yes and bowled a few overs. My nervousness slowly melted as the game went on. Laughter replaced hesitation. Encouragement replaced awkward silence. It was only later that I realized these players had been friends long before I arrived. But they made space for me. Somehow, we won the match that day, and as I was preparing to leave, one of them - Anshul - walked up to me and asked, "Will you come again next weekend?" I smiled wide and said, "Definitely." We exchanged numbers.

The following weekend, I returned to the ground, and this time, it felt different. People on both teams were calling out my name, giving me high-fives, pulling me into conversations. I began recognizing faces, remembering names, sharing inside jokes. That weekly cricket match became the highlight of my life in Mumbai. Over the next three years, those strangers became my closest friends. We weren't just a team - we were a family stitched together by sport. When I got news of my transfer back to Hyderabad after three years, my heart was torn. I was happy to return home, but I knew I was leaving something behind - those weekend matches, those shared laughs, the unspoken bond with my cricket friends. On my last weekend with the team, we played a farewell match. Afterward, we took selfies together and they gifted me a cricket Ball as a reminder of the friendships forged on the field.

Looking back, I remember how worried I was about moving to a city where I didn't know anyone. But cricket - this beautiful, mad game broke down those walls. It brought me close to people I would have never met otherwise. It taught me that sports are not just about competition - they are about connection, about healing loneliness, about building bridges where words sometimes fall short. In banking career, transfers often take us away from our comfort zones, but they also give us the rare chance to discover new cities, cultures, and friendships - what first feels like a disruption slowly reveals itself as a blessing in disguise.

If there is one thing I have learned, it is that friendships can be found in the most unexpected places. All it takes is a little courage... and maybe a cricket ball and bat.

Aditya Pappu
Z.O., Hyderabad

The Influence of Sports on National Identity and Unity

Sports are not merel contests of physical strength or skill; they are cultural phenomena that shape how nations perceive themselves and how citizens connect with one another. Sports are more than games; from the roar of stadiums to the quiet pride of watching a flag raised at the Olympics, sports embody national identity and foster unity across diverse populations. They transcend language, religion, and social divides, offering a common ground where people can celebrate victories, mourn defeats, and share collective memories.

In India, where cricket is often described as a religion, sports have played a central role in binding together a country of immense diversity. Whether it is Hockey's golden era, Kabaddi's rural roots, or the rise of Athletics and Badminton, sports have consistently mirrored India's journey as a nation.

Sports as a Mirror of National Identity: Sports serve as a powerful reflection of national identity, providing a visible and dynamic arena where the values, aspirations, history, and cultural essence of a nation are expressed and reinforced. During sporting events, symbols such as national flags, anthems, and emblems take on heightened significance, becoming rallying points that evoke deep emotional connections among citizens. The narratives that emerge from sports—stories of struggle, perseverance, and triumph—often mirror a nation's broader historical journey, offering validation of resilience and progress in the face of challenges. Moreover, sports act as a medium for cultural expression, preserving and celebrating indigenous games like Kabaddi in India or Gaelic football in Ireland, which embody unique aspects of national heritage. Through these elements, sports not only showcase national pride but also help to shape and sustain a collective identity that resonates across diverse populations. Victories on the international stage project strength and resilience, while traditional games preserve cultural heritage.

For India, Hockey was once the defining sport of national pride. Dominating the Olympic Games from 1928 to 1956, India's hockey team won six consecutive gold medals, symbolizing the country's emergence on the global stage even before independence. These victories were not just sporting achievements; they were statements of identity, proof that India could excel internationally despite colonial subjugation.

Cricket, however, became the most powerful symbol of India's national identity in the post-independence era. The 1983 Cricket World Cup victory under Kapil Dev was a turning point. It instilled confidence in a nation still grappling with economic challenges and global recognition. Suddenly, cricket was no longer just a sport—it was a metaphor for India's resilience, ambition, and ability to stand shoulder-to-shoulder with the world's best. Sports also project India's global image. Participation in events like the Olympics and Asian Games showcases India's diversity and talent. Athletes such as Neeraj Chopra, who won gold in javelin at Tokyo 2020, symbolize modern India's aspirations: a nation striving for excellence beyond cricket, eager to redefine its identity in multiple sporting arenas.

Sports as a Unifying Force: If sports reflect identity, they also create unity. Few other platforms bring together millions of people across caste, religion, language, and region as effectively as sports.

Cricket is the most obvious example. When the indian team plays a match, the entire nation pauses. Streets empty, offices slow down, and televisions glow in every household. The shared anticipation, joy, or heartbreak transcends social divisions. In 2011, when India won the Cricket World Cup, celebrations erupted across every corner of the country—from metropolitan cities to remote villages. For a moment, political, religious, and regional differences dissolved into a collective euphoria.

Regional sports also contribute to unity in diversity. Kabaddi, deeply rooted in rural traditions, has gained national prominence through the Pro Kabaddi League. Football, passionately followed in West Bengal, Goa, and Kerala, adds another layer to India's sporting identity. These regional passions enrich the national narrative, reminding us that unity does not mean uniformity—it means celebrating diversity under one flag. Sports create shared experiences and collective memories. The chants in stadiums, the tears after a loss, and the pride of seeing the tricolour unfurl, are moments that bind citizens together. They remind us that despite differences, we share the same heartbeat when our team takes the field.

Sports in Nation-Building and Social Change: Beyond identity and unity, sports play a crucial role in nation-building and social transformation.

In post-colonial India, hockey victories symbolized independence and self-confidence. Later, cricket became a tool of soft power, projecting India's growing influence globally. The Indian Premier League (IPL), launched in 2008, is not just a commercial success but a cultural phenomenon. It brings together players from different states and countries, fostering collaboration and mutual respect. The IPL has also democratized cricket, giving opportunities to young talent from small towns who might otherwise have remained unnoticed. Sports empower marginalized communities and individuals. Mary Kom's success in boxing represents the resilience of women from Northeast India, a region often overlooked in mainstream narratives. Similarly, athletes like Dipa Karmakar in gymnastics and Sakshi Malik in wrestling have broken stereotypes, proving that women can excel in fields traditionally dominated by men. Their victories are not just personal triumphs but milestones in India's journey toward gender equality and inclusivity.

Globally, sports have been used for reconciliation and healing. In South Africa, rugby helped bridge racial divides after apartheid. In India, while not as dramatic, sports often soften regional tensions and provide a platform for dialogue and cooperation. They remind us that competition can coexist with camaraderie.

Sports Diplomacy: Sports serve as a powerful instrument of international diplomacy, fostering goodwill and bridging divides between nations. Historical instances such as Ping-Pong Diplomacy between the United States and China illustrate how sports can thaw political tensions and open channels of communication. Similarly, the formation of unified Korean teams has symbolized efforts to bridge longstanding conflicts and promote peace. Hosting global sporting events further allows countries to project their identity and unity on the world stage, creating opportunities for cultural exchange and mutual understanding. Through these avenues, sports diplomacy transcends mere competition, becoming a vital tool for building international relationships and promoting harmony among diverse peoples.

Psychological Dimensions: Sports have profound psychological impact that contribute to national identity and unity. One key aspect is collective effervescence, where the shared emotional energy in stadiums and among fans creates a powerful sense of belonging and communal joy. This heightened emotional state fosters solidarity and strengthened social bonds. Additionally, vicarious achievement allows fans to experience the triumphs of their teams as personal victories, enhancing their emotional investment and pride in their nation. Rituals and routines surrounding sports events, such as regular matches and national anthems, provide a consistent framework that anchors identity in shared experiences, reinforcing a collective sense of purpose and continuity.

Sports in the Age of Globalization: In today's interconnected world, globalization has significantly reshaped the realm of sports, influencing how national identity is perceived and expressed. The emergence of transnational leagues and international competitions means that many athletes now play for clubs outside their home countries, which challenges traditional ideas of national belonging and representation. Dual citizenship among athletes further blurs the lines of national allegiance, raising complex questions about which nation they truly represent on the global stage.

Despite these complexities, global sports icons continue to inspire national pride, serving as powerful symbols that transcend borders while still reflecting their cultural roots. Moreover, globalization enables the widespread sharing of sports culture, allowing fans worldwide to connect with teams and athletes from diverse nations. This creates a dynamic interplay between global influences and local loyalties, highlighting how sports today contribute to a more interconnected yet multifaceted sense of national unity.

The Future of Sports and National Unity: The future of sports holds immense potential to further strengthen national unity through various evolving dimensions. Digital engagement, particularly through social media platforms, is transforming how fans connect with their national teams and athletes, amplifying expressions of national pride and creating virtual communities that transcend geographic boundaries. This digital revolution allows for real-time

sharing of emotions, celebrations, and collective experiences, fostering a deeper sense of belonging among diverse populations. Inclusivity is another critical factor shaping the future landscape of sports and unity. Increasing representation of women, marginalized groups, and differently abled athletes not only broadens participation but also reinforces the idea that national identity is inclusive and multifaceted. This expanded representation helps to bridge social divides and promotes solidarity across different segments of society. Furthermore, sustainability is becoming an integral aspect of sports, with growing awareness of environmental responsibility and social justice. Sports organizations and events are increasingly adopting sustainable practices, which resonate with broader national and global values. By championing sustainability, sports can inspire collective action and pride in contributing to a healthier planet, thereby linking national unity with global citizenship. Together, these trends suggest that sports will continue to be a dynamic force in shaping inclusive, connected, and conscientious national identities in the years to come.

Sports are vessels of identity, instruments of unity, and platforms for diplomacy. They are woven into the fabric of national identity and unity. They reflect struggles and aspirations, offering collective joy and pride. They also reflect who we are, what we value, and how we connect with one another. While challenges remain, the unifying power of sports is undeniable. As long as humans play, compete, and cheer, sports will remain vital in shaping national identity and unity.

Victories inspire pride, defeats teach resilience, and participation itself strengthens the bonds of citizenship.

As India continues to evolve, sports will remain a vital force in shaping how the nation sees itself and how its people come together in moments of triumph and struggle. Ultimately, sports remind us that while we may differ in language, culture, or region, we share the same heartbeat when our team takes the field. They are not just games—they are the stories we tell ourselves about who we are as a nation.

Priyanka Ghosh
Court Peta Branch
R.O., Berhampur

The Invisible Thief

In wires unseen and screens that glow,
Where silent rivers of data flow,
An unseen shadow softly creeps,
Through coded doors while the city sleeps.
No mask, no footsteps in the night,
No shattered glass, no sudden fright,
Yet fortunes fade with just one click,
A clever trap, a subtle trick.
An email dressed in borrowed name,
A message urgent, edged with flame,
"Your account will close—act now!" it cries,
And fear becomes the thief's disguise.
A link that gleams in trusted blue,
A login page that looks so true,
A password typed with careless hand,
And treasure slips like desert sand.
In whispered calls with voices cloned,
In deep fake faces finely tuned,
The fraudster plays a borrowed part,
And steals not only gold—but heart.
Through networks vast, across the seas,
In digital winds that no one sees,
The loot is split in coded streams,
Through crypto vaults and phantom schemes.
No alley dark, no getaway car,
Just servers humming from afar,
And mule accounts in distant lands,
All guided by unseen hands.
Yet hope still rises, sharp and bright,
In firewalls standing guard at night,
In watchful codes that learn and grow,
To catch the patterns fraudsters show.
For every trick the thieves design,
New shields arise in line by line,
Awareness spreads from mind to mind,
And vigilance is humankinds.
So, guard your keys, your words, your trust,
For in this age of cloud and dust,
The greatest vault, both old and new,
Is caution living deep in you.

Akash Sidola
R.O., Haldwani

Beyond the Boundary

Cricket as India's Ultimate Cultural Phenomenon and Corporate Catalyst

To truly comprehend the pulse of India, you do not need to analyse its booming stock market, decode its complex political landscape, or sample its endless varieties of regional cuisine. You simply need to step onto a balcony on the evening of a high-stakes cricket match, or during the electrifying final overs of an Indian Premier League (IPL) knockout game. On these specific days, the notoriously chaotic and cacophonous streets of cities grow eerily, quiet. The air thickens with a palpable, shared anticipation. Suddenly, collective, synchronized roars erupt from the open windows of gleaming corporate skyscrapers and humble slum dwellings alike, echoing across neighbourhoods in perfect unison.

In India, cricket is not merely a sport played with a bat and a leather ball. It is an unofficial religion, a profound cultural phenomenon, and the most vibrant, resilient thread that binds a staggeringly diverse nation together. For a country divided by geography, religion, caste, and over a hundred distinct languages, the rules of cricket remain the one universal language that every citizen speaks with absolute fluency.

From the snow-capped peaks of the Himalayas to the tropical, palm-fringed backwaters of Kerala, cricket is the undisputed heartbeat of over a billion people.

The Evolution of an Obsession: From Colonial Pastime to National Identity

The profound irony of Indian cricket is that it was initially introduced to the subcontinent by British colonial rulers as a symbol of their elite, exclusive status. However, the Indian populace did not just passively adopt the game; they absorbed it, entirely reinvented its flair, and eventually grew to dominate it on the global stage.

The undisputed turning point—the exact moment cricket transitioned from a popular sporting pastime to a fierce national obsession—occurred on June 25, 1983. When an underdog Indian squad, led by the charismatic Kapil Dev, defeated the seemingly invincible West Indies to lift the World Cup on the historic balcony of Lord's. This event ignited a cultural revolution. A young, post-colonial nation, still finding its footing in the world, suddenly discovered a global arena where it could not just compete but conquer absolutely.

This historic, paradigm-shifting victory paved the way for the era of Sachin Tendulkar in the 1990s and 2000s. For over two decades, Tendulkar was not just a spectacularly gifted sportsman; he was the bearer of a billion individual hopes. During times when the Indian economy was struggling or the political climate was fraught with tension, a flawless, textbook straight drive from Tendulkar offered a collective, euphoric escape. He proved definitively that an Indian could be the absolute best in the world. As cricket writer and commentator Peter Roebuck "This genius can stop time in India!"

Today, modern icons like MS Dhoni, Virat Kohli, Rohit Sharma, Jasprit Bumrah, Sanju Samson etc carry that massive, invisible weight of national expectation. They act as living demigods in the eyes of their devoted fans, serving as cultural ambassadors who dictate fashion trends, shape the aspirations of the youth, and boldly represent the aggressive, confident face of modern India.

Gully Cricket: The Grassroots of a Billion Dreams

To accurately measure the profound cultural grip of cricket, one must look away from the manicured green outfields of grand stadiums and peer into the narrow alleyways, open grounds and crowded neighbourhood streets. Here lies the fascinating world of "gully cricket" (street cricket), the authentic grassroots foundation of the Indian cricketing dream.

In India, you do not need a perfectly rolled pitch, imported willow, or expensive safety gear or a stadium to play cricket. You just need a piece of wood, something vaguely resembling a spherical object, and boundless, unwavering imagination.

Gully cricket is the great equalizer of Indian society and a universal rite of passage for almost every child, regardless of their socio-economic background. It comes with its own rich, unwritten constitution, innovatively and strictly tailored to the physical constraints of densely populated Indian neighbourhoods such as "Hitting over the wall is OUT", "The owner of the bat bats first" etc.

These informal, chaotic games do much more than teach children how to hit a cover drive or bowl a leg-spin. They are early, foundational masterclasses in critical life skills. Long before these kids step into a formal educational institution or a high-stakes corporate office, gully cricket teaches them about intense negotiation, dispute resolution, leadership, and emotional resilience.

The IPL Era: A Carnival of Commerce, Colour, and Cricket

The introduction of the Indian Premier League (IPL) in 2008 permanently and radically altered the cultural and economic landscape of the country. The IPL successfully and seamlessly married India's two greatest, most glamorous loves: cricket and Bollywood entertainment. It transformed cricket from a slow-burning, five-day test of traditional endurance into a three-hour, high-octane spectacle of neon lights, pulsating music, cheerleaders, and nail-biting, last-over finishes.

The IPL shifted the entire cultural calendar of the nation. The scorching, relentless Indian summer is no longer just associated with eating mangoes and surviving school holidays; it is entirely synonymous with IPL evenings. For two solid months every single year, families gather around their television sets or streaming devices. Fierce regional loyalties flare up between cities like Chennai, Mumbai, and Bangalore, creating a vibrant, festive atmosphere that lasts for weeks.

The tournament has fundamentally democratized the sport, taking it beyond the traditional metropolitan hubs and giving young, unknown boys from remote, rural villages a direct, highly visible platform to showcase their talent to the entire world.

The Corporate Crease: Cricket's Advantages for Work-Life Balance

Given that cricket occupies such a massive, uncompromising chunk of the national psyche, it inevitably, and powerfully, spills over into the Indian workplace. Historically, sports tournaments were viewed by strict corporate management as frustrating distractions that derailed productivity and caused mysterious spikes in "sick leave."

However, the modern Indian workplace has undergone a significant, progressive paradigm shift. Forward-thinking HR departments, modern psychologists, and empathetic corporate leaders have realized that cricket is not a distraction to be minimized, but a powerful, unifying tool to be actively harnessed.

When integrated thoughtfully into the corporate culture, cricket acts as a brilliant, unparalleled catalyst for a positive work-life balance, offering profound advantages to employee well-being, mental health, and overall corporate synergy.

Modern professional life is inherently fraught with tight, unforgiving deadlines, demanding client pressures, and the constant, draining hum of baseline anxiety. Finding effective ways to decompress is vital for long-term employee retention. Cricket provides a much-needed, highly effective emotional release.

Perhaps the most tangible, physically beneficial impact on work-life balance is the massive rise of corporate cricket leagues. IT parks, financial districts, and corporate hubs across India regularly and enthusiastically organize inter-departmental or inter-company tennis-ball cricket tournaments. These weekend leagues encourage employees to willingly step away from their glowing laptop screens and engage in vigorous physical activity. It directly and effectively

combats the dangerous sedentary lifestyle risks associated with modern desk jobs, promoting cardiovascular health, stamina, and overall physical fitness in a fun, competitive environment.

Playing together on a dusty field requires high-level trust, split-second communication, and collaborative strategy. These are the exact same vital skills that translate directly back to effective project management, agile workflows, and cross-functional team collaboration in the office.

This specific brand of flexibility drastically reduces the risk of corporate burnout and significantly improves overall job satisfaction. It proves, time and again, that respecting and accommodating an employee's work-life balance ultimately yields higher, more sustainable long-term productivity than rigid micro-management.

The Rise of Women's Cricket: Bridging the Social Gap

No comprehensive discussion about cricket as a cultural phenomenon in India is truly complete without enthusiastically acknowledging the recent, meteoric rise of women's cricket. For several decades, the sport was viewed almost exclusively through a predominantly male lens, both in terms of participation and viewership. However, this outdated narrative is currently shifting at a rapid, exhilarating pace.

Early trailblazers like Mithali Raj and Jhulan Goswami laid the grueling, underappreciated groundwork for years. Today, modern, dynamic superstars like Smriti Mandhana, Harmanpreet Kaur, and Shafali Verma have entirely captured the nation's collective imagination. The highly successful launch of the Women's Premier League (WPL) recently was an undeniable watershed moment in Indian sports history. It brought massive financial investment, prime-time television broadcasting slots, lucrative brand endorsements, and packed, roaring stadiums to the women's game for the first time.

This monumental shift has deep, echoing cultural implications. When young girls in small towns across India see female athletes commanding the exact same deep respect, financial success, and mass adoration as their male counterparts, it actively challenges and dismantles deep-seated, traditional patriarchal norms. Cricket is rapidly and effectively becoming a powerful vehicle for gender empowerment in India, proving definitively to a new generation that the pitch, the glory, and the massive salaries belong to absolutely everyone.

The Enduring Heartbeat of a Nation

Cricket in India effortlessly transcends the basic boundaries of a mere athletic contest between two opposing teams. It is a spectacular, ongoing, unscripted drama that plays out daily on our television screens, in our massive stadiums, and on our dusty neighbourhood streets. It vividly reflects the nation's highest collective aspirations, its undeniable dramatic flair, and its relentless, unapologetic pursuit of global greatness.

It dictates our collective daily moods, fundamentally shapes our summer routines, and brings a desperately needed touch of unpredictable magic to the otherwise mundane routines of daily life. More importantly, as the lines between our professional obligations and personal lives continue to blur in a hyper-connected world, cricket stands out as a surprisingly powerful force for good. It is a glorious, culturally sanctioned stressbuster that actively builds lasting friendships across corporate cubicles, highly encourages physical health among desk-bound workers, and gently reminds us of all of the pure, unadulterated joy of play.

In a rapidly changing, increasingly modernized world, cricket remains India's ultimate, unwavering constant. It is a deeply unifying force, a brilliantly shared dream, and the enduring, unbreakable heartbeat of well over a billion people.

Sinuraj R S
R.O., Kollam

हिमाचल की मनोरम वादियां

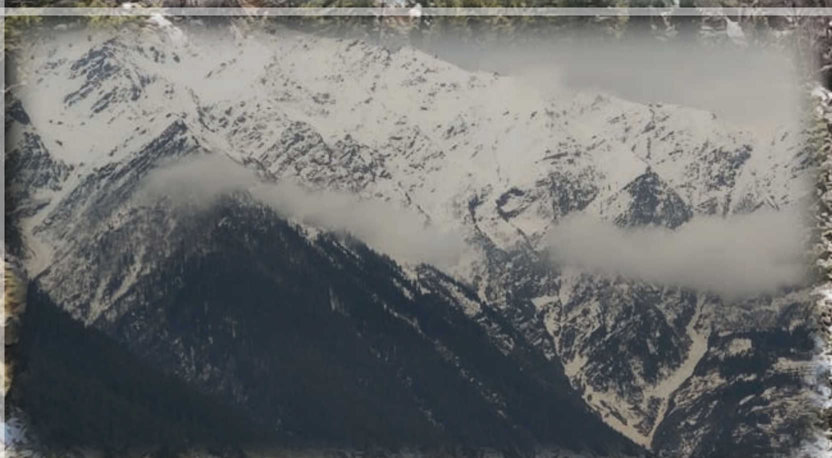

हिमाचल प्रदेश की यात्रा केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना भर नहीं है; यह इंद्रियों को शांत करने और उन्हें भीतर तक जागृत करने वाला एक अनुभव है। शिमला से सड़क मार्ग द्वारा हिमालय की पर्वतमालाओं के बीच से होते हुए स्पीति घाटी और नारकंडा की ओर बढ़ना सिर्फ एक यात्रा-योजना से विस्मय से भरे एक अनुभव की ओर अग्रसर होना बन जाता है। ये तस्वीरें हमारी इस यात्रा के भाव को अत्यंत सुंदरता से संजोते हैं। शिमला के आसपास चीड़ के वनों से ढकी ढलानें, प्रातःकालीन प्रकाश में दमकती घाटियाँ, पत्थरों के बीच स्वच्छता से बहती नदियाँ, वृक्षों के पार उठती हिमाच्छादित चोटियाँ, और हवाओं से तराशे गए पर्वतों के बीच स्थिर खड़े मठ तथा लहराते प्रार्थना-ध्वज।

हिमाचल प्रदेश की विशेषता यह है कि यहाँ दूरी भी एक पवित्र अनुभव का एहसास कराती है। मार्ग का हर मोड़ हिमालय का एक नया रूप प्रकट करता है- सेब के फूलों की कोमलता, गहरी खाइयों की गंभीरता, लोहे के पुलों की दृढ़ता, नीले आकाश की अनंतता, बिखरे हुए गाँवों की सादगी और शांत पहाड़ी श्रृंखलाओं की स्थिरता। विशेष रूप से स्पीति घाटी एक अलग ही संसार का आभास कराती है। हिमाचल पर्यटन के अनुसार, स्पीति एक पर्वतीय शीत मरुस्थल है, जिसकी पहचान तेज़ हवाओं से आकार लेते परिदृश्यों, शांत गाँवों, प्राचीन मठों, प्रार्थना-ध्वजों और स्पीति नदी घाटी की कठोर किंतु मनमोहक सुंदरता से होती है।

यह सौंदर्य चुनौतियों से परे नहीं है। ऊँचाई अधिक होने के कारण स्पीति वर्ष के अधिकांश समय ठंडा रहता है, और कठोर सर्दियों में तापमान –20°C से –30°C तक गिर सकता है। ऐसी परिस्थितियों में दैनिक जीवन एक निरंतर संघर्ष बन जाता है- पानी की पाइपें जम जाती हैं, मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं, आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति कठिन हो जाती है, और स्थानीय लोग संचित भोजन, पारंपरिक घरों, सामुदायिक सहयोग तथा असाधारण धैर्य के सहारे जीवनयापन करते हैं।

यही कारण है कि यहाँ की यात्रा मन में विनम्रता का भाव जगाती है। जहाँ एक पर्यटक स्वच्छ वायु, हिमाच्छादित मैदानों और गहन मौन का आनंद लेता है, वहीं स्थानीय निवासी इन्हीं परिस्थितियों को अपने दैनिक जीवन की वास्तविकता के रूप में जीते हैं। स्पीति हमें सिखाता है कि सुंदरता हमेशा कोमल नहीं होती, वह कठोर, दूरस्थ और चुनौतीपूर्ण भी हो सकती है। और शायद यही यात्रा का सबसे बड़ा चमत्कार है कि यह हमें परिदृश्यों को केवल दृश्य के रूप में नहीं, बल्कि साहस से निर्मित इतिहास के रूप में देखने का अवसर देती है।

आदित्य मुखर्जी
सैमवी - एल.एस.डी.,
कें.का., मुंबई

Rise of Women's Sports

The rise of women's sports is one of the most inspiring and transformative developments in modern society. Over the past century, women have steadily broken barriers, challenged stereotypes, and claimed their rightful place in the world of athletics. What was once considered a male-dominated domain has now evolved into a more inclusive and dynamic arena where women athletes shine on global platforms. This journey has not been easy; it has been shaped by resilience, determination, and a relentless pursuit of equality. Today, women's sports are not only gaining recognition but also redefining the very meaning of strength, skill, and success.

Historically, women faced significant restrictions in participating in sports. In many cultures, societal norms discouraged women from engaging in physical activities, considering them inappropriate or unnecessary. Even when women did participate, they were often excluded from major competitions or received minimal support. For instance, in the early Olympic Games, women were either not allowed or were limited to a few "acceptable" events such as tennis or figure skating. This marginalization reflected broader gender inequalities that existed in society.

However, the early 20th century marked the beginning of change. Women began advocating for their inclusion in sports, inspired by the growing global movements for gender equality. Organizations and activists worked tirelessly to create opportunities for women athletes. The inclusion of more women's events in international competitions was a significant step forward. Over time, women proved their capabilities and excellence, gradually dismantling the myths that had kept them on the side-lines.

One of the most important turning points in the rise of women's sports has been increased access to education and organized sports programmes. Schools, colleges, and universities began to encourage girls to participate in athletics, providing them with training, facilities, and competitive platforms. This grassroot level development played a crucial role in nurturing talent and building confidence among young women. As more girls took up sports, the pool of skilled athletes expanded, leading to higher levels of competition and performance.

Media coverage has also played a vital role in elevating women's sports. In the past, women athletes received little attention compared to their male counterparts. Their achievements were often overlooked or under reported. However, with the advent of digital media and social media platforms, women athletes have gained greater visibility. Fans can now follow their favourite players, watch matches live, and engage with sports content more easily than ever before. This increased exposure has helped in building a strong fan base and attracting sponsorships.

Another significant factor contributing to the rise of women's sports is the growing support from governments and sports organizations. Policies promoting gender equality, funding for women's teams, and initiatives to encourage participation have created a more supportive environment. In many countries, national sports federations are now investing in women's leagues and tournaments, recognizing their potential and importance. This institutional backing has been crucial in providing women athletes with the resources they need to succeed.

The success of women athletes on the global stage has further accelerated this growth. From the Olympics to world championships, women have delivered remarkable performances that have captured the imagination of audiences worldwide. Their achievements have not only brought pride to their nations but have also inspired millions of young girls to pursue sports. Role models play a powerful role in shaping aspirations, and today's women athletes are proving that anything is possible with dedication and hard work.

Economic factors have also contributed to the rise of women's sports. As the popularity of women's competitions grows, they are becoming commercially viable. Sponsorship deals, broadcasting rights, and merchandise sales are generating revenue, making women's sports an attractive investment. Brands are increasingly associating themselves with women athletes, recognizing their influence and appeal. This financial growth is helping to improve infrastructure, training facilities, and overall professionalism in women's sports.

Despite these positive developments, challenges remain. One of the most

significant issues is the gender pay gap. Female athletes often earn less than their male counterparts even when they achieve similar levels of success. Additionally, media coverage, although improved, is still not on par with men's sports in many regions. Addressing these gaps is essential to ensure sustained growth and equality. Another challenge is the persistence of stereotypes and cultural barriers. In some societies, women still face resistance when they choose to pursue sports as a career. They may encounter criticism, lack of support, or limited opportunities. Overcoming these barriers requires not only policy changes but also a shift in societal attitudes. Education and awareness campaigns can play a key role in changing perceptions and encouraging acceptance.

The role of technology in the rise of women's sports cannot be overlooked. Advanced training methods, data analytics, and sports science have enhanced performance levels across disciplines. Women athletes now have access to the same cutting-edge tools and techniques as men, enabling them to compete at the highest levels. Social media platforms have also empowered athletes to build their personal brands, connect with fans, and advocate for important causes.

Grassroot level initiatives and community programmes are equally important in sustaining the growth of women's sports. Local clubs, non-profit organizations, and volunteer groups are working to provide opportunities for girls at the grassroot level. These initiatives help in early identification of talent and creating a strong foundation for future success. By encouraging participation from a young age, they ensure that the pipeline of athletes continues to grow.

Education and awareness are crucial in promoting gender equality in sports. Schools and educational institutions can play a significant role by integrating sports into their curriculum and encouraging equal participation. By creating a supportive environment, they can help in breaking down stereotypes and fostering a culture of inclusivity. Parents and communities also have a responsibility to support and motivate girls to pursue their interests in sports.

The impact of the rise of women's sports extends beyond the field. It has significant social and cultural implications. Women athletes are challenging traditional gender roles and redefining what it means to be strong and capable. Their success stories inspire confidence and empowerment among women and girls, encouraging them to pursue their dreams in all areas of life. Sports also promote values such as teamwork, discipline, and resilience, which are essential for personal development.

Moreover, the rise of women's sports is contributing to a more equitable society. It highlights the importance of equal opportunities and representation. By celebrating the achievements of women athletes, society sends a powerful message about the value of inclusivity and diversity. This progress in sports can serve as a catalyst for change in other sectors, promoting gender equality in all aspects of life.

Looking ahead, the future of women's sports appears promising. With continued investment, support, and advocacy, the growth is expected to accelerate. Innovations in broadcasting and digital engagement will further enhance visibility and fan engagement. As more women take up leadership roles in sports organizations, they can bring new perspectives and drive meaningful change.

However, sustaining this momentum requires collective effort. Governments, organizations, media, and society must work together to address existing challenges and create a level playing field. Ensuring equal pay, increasing media coverage, and promoting inclusivity should remain key priorities. By doing so, we can build a sports ecosystem that truly reflects the principles of fairness and equality.

In conclusion, the rise of women's sports is a testament to the power of perseverance and the importance of equality. From facing exclusion to achieving global recognition, women athletes have come a long way. Their journey is a source of inspiration and a reminder that change is possible when individuals and communities come together to challenge injustice. As we celebrate their achievements, we must also commit to supporting their continued growth. The rise of women's sports is not just a story of athletic success; it is a movement that is shaping a more inclusive and equitable world for future generations.

Revathi S
Z.O., Coimbatore

Winning Trust Beyond the Playing Field

In the contemporary era of intense competition and rapid digital transformation, the banking sector is no longer confined to traditional methods of customer acquisition and retention. Banks are increasingly embracing sophisticated marketing strategies to build brand image, attract new customers, and reinforce trust among existing ones. One such powerful strategy is sports celebrity endorsement. Sports personalities, admired for their achievements, discipline, and public appeal, hold a unique position in society. Their association with financial institutions has emerged as a significant factor influencing customer perceptions, particularly trust.

Sports celebrities often enjoy a high level of credibility and emotional connection with the public. When a well-known athlete endorses a bank, their reputation tends to transfer to the brand. Customers may perceive the bank as reliable, trustworthy, and performance-driven, mirroring the qualities of the athlete.

Trust is a crucial factor in the banking sector, as customers entrust their savings, investments, and financial security to institutions. Celebrity endorsements help reduce perceived risk, particularly among new or hesitant customers. Seeing a familiar and respected face associated with a bank can make the institution appear more approachable and credible. This psychological comfort often encourages customers to initiate or deepen their relationship with the bank. Moreover, sports celebrities have a wide reach and appeal across diverse demographic segments. Their endorsements can effectively target both urban and rural audiences, bridging gaps in financial awareness. Campaigns featuring popular athletes often gain higher visibility and engagement, leading to increased brand recognition and recall. This enhanced visibility contributes indirectly to building trust, as familiarity with a brand often leads to a perception of reliability.

Through sports celebrity endorsements, banks can benefit in some specific ways

- ✓ **Credibility Transfer:** Trust in the celebrity often translates into trust in the bank.
- ✓ **Targeted Appeal:** Different athletes attract different customer segments.
- ✓ **Emotional Connection:** Sports figures create strong emotional bonds that banks leverage.
- ✓ **Sustainability:** Endorsements must be supported by consistent service quality to maintain trust.

One of the primary ways in which sports celebrity endorsements influence trust is by reducing perceived risk. Financial decisions often involve uncertainty and risk, particularly for new customers or those exploring unfamiliar banking services. The presence of a trusted sports figure in a bank's promotional campaign can provide reassurance and psychological comfort. Customers are more likely to believe that a bank endorsed by a reputable athlete is dependable and secure.

Moreover, sports celebrities could create strong emotional connections with the public. Fans often develop deep admiration and loyalty towards their favourite athletes, viewing them as role models. This emotional bond can extend to the institutions they endorse. It evokes positive feelings that enhance trust and affinity toward the institution. This emotional dimension is especially important in building long-term customer relationships, as trust is not purely rational but also deeply psychological.

However, the impact of celebrity endorsements is not without limitations. Trust built solely on endorsements can be fragile if not supported by consistent service quality. Any controversy or negative publicity involving the celebrity can also affect the bank's image. Furthermore, customers today are more informed and rely on personal experience, peer reviews, and digital feedback rather than endorsements alone.

Even if the bank itself is not at fault, association with a controversial figure can reduce customer confidence in the brand image. Endorsements based on clean image can backfire if the athlete's integrity is compromised. Personal conduct of such celebrities may further impact institutional credibility.

Moreover, there is a high cost involved. Sports celebrity endorsements require significant financial investment, often forming a major part of a bank's marketing budget. These costs are not limited to fee alone but several associated expenses like advertisement production cost, media cost, appearance & event cost, contract & legal cost, branch integration & campaign management cost, risk & opportunity costs and others.

To maximize the benefits of sports celebrity endorsements, banks must adopt a balanced approach. The choice of celebrity should align with the bank's values, brand identity, and target audience. Endorsements should be complemented by consistent and high-quality service delivery. Transparency in communication, ethical practices, and customer-centric policies are essential to sustain trust. Banks should also leverage digital platforms to engage with customers and reinforce their brand message beyond traditional advertising.

While sports celebrity endorsements can act as a catalyst in building initial trust and attracting attention, long-term trust depends on the bank's performance, transparency, and customer service. Banks must ensure that their association with celebrities aligns with their values and is complemented by genuine customer-centric practices.

In conclusion, sports celebrity endorsements play a significant role in influencing bank customers' trust by enhancing credibility, reducing perceived risk, and creating emotional connections. They serve as a powerful marketing tool that helps a bank stand out in a competitive environment and build positive brand associations. However, their effectiveness is contingent upon the bank's ability to deliver on its promises and maintain high standards of service. Trust, once established, must be nurtured through consistent performance and genuine customer engagement. Therefore, while sports celebrity endorsements can initiate trust, it is the bank's integrity and reliability that ultimately sustain it.

M. V. Sheshu
R.O., Bengaluru (N)

Ink between the lines

No headline tells what passes here,
In quiet hours, year by year—
Not just the numbers that rise and fall,
But unheard dreams behind them all.

A thumbprint pressed in cautious ink,
A pause before the edge of "think,"
A widow counting what remains,
A youth escaping silent chains.

We measure worth in more than gold,
In stories rarely ever told,
In trembling hands that learn to trust,
In hope that rises from the dust.

The screens may glow, the systems change,
The pace grows faster, wide and strange,
Yet one truth outlives the trend—
A human need to comprehend.

To guide, to listen, not just process,
To stand beside in loss or progress,
To know a life can turn around
In one small "yes," in one safe ground.

Not every victory makes a sound,
Some bloom where faith and work are found,
And we, who sit at this crossroad,
Help lighten many a hidden load.

So let this ink not just record,
But echo what we move toward—
A place where numbers intertwine
With lives rewritten, line by line.

Palak Soni
Chhawani Main Branch,
R.O., Indore

Ethics in Sports

What Do We Mean by Ethics in Sports?

In simple words, ethics in sports is a set of moral principles that guide how people should behave in sporting situations. These principles include:

- **Fair play –** competing honestly, following the rules, and avoiding any kind of cheating.
- **Respect –** treating opponents, teammates, coaches, officials, and spectators with dignity.
- **Responsibility –** accepting the results of your actions, both good and bad, and not blaming others.
- **Integrity –** doing the right thing even if it is difficult or unpopular.

Sport is one of the most powerful activities in the modern world. Stadiums fill with thousands of fans, billions watch major events on television and youngsters everywhere dream of becoming professional athletes. But the true value of sports is not only in records and trophies. It is also in the values it teaches-fairness, respect, discipline, and self-control. These values are what we call ethics in sports.

Good ethics in sports goes beyond just "not getting caught." It is about having an inner sense of right and wrong and choosing right, even if there is a chance to gain an unfair advantage.

For example, a football player who falls in the penalty box without being touched to get a penalty is following the written rules only loosely but is clearly violating the ethical principle of fair play. The referee might not see the dive, but the player still knows he is cheating.

The Idea of Fair Play and Sportsmanship

Most discussions of ethics in sports start with fair play. Fair play means:

- Following the rules of the game.
- Not using hidden tricks, illegal equipment, or banned substances.
- Accepting the referee's decisions without anger or violence, even when you think they are wrong.

Closely related to fair play is sportsmanship. It is the attitude and behaviour that shows respect and generosity in competition. A good sportsperson:

- Plays hard but clean.
- Does not insult or humiliate opponents.
- Helps an injured player, even from the other team.
- Celebrates victory without arrogance and accepts defeat without excuses.

Sportsmanship keeps sport human. Without it, a game becomes only a cold battle of interests, where anything is allowed if you are not punished. With it, sport becomes a field where people can show their best qualities under pressure.

Why Are Ethics in Sports Important?

Ethics in sports means more than just following the written rules of a game. It is about playing in a way that is honest and respectful, even when nobody is watching and even when breaking the rules might help you to win. It concerns the behaviour of everyone involved: athletes, coaches, referees, team owners, sponsors, and even fans. When ethics are strong, sport can inspire and unite people. When ethics are weak, sport can become corrupt and harmful.

1. **Protecting the Meaning of Competition**

   The basic idea of sport is to see who is best under equal conditions. If some competitors cheat—by using drugs, bribing referees, or fixing matches—the result no longer shows true ability. The competition loses its meaning, and records and titles lose their value.

2. **Protecting Athletes' Health and Dignity**

   Many unethical practices, such as doping, overtraining young athletes, forcing them to play with injuries, or allowing violent play, put athletes' bodies and minds at risk. Ethical rules are needed to protect athletes from being treated like machines or tools whose only purpose is to win.

3. **Setting a Good Example for Society**

   Athletes are often public heroes. Children and adults copy what they do. If famous players cheat, insult referees, or show no respect to opponents, many fans start to think that such behaviour is acceptable in their own lives.

On the other hand, when athletes admit mistakes, show respect, and play fairly, they send a powerful message about the importance of integrity.

4. **Preserving Trust in Sports**

   Fans spend money and time because they believe that they are watching a real contest. If scandals become common, people lose interest and trust. Ethical behaviour is therefore essential not just morally, but also for the survival of sports as an industry.

Common Ethical Problems in Modern Sports

Today, sport faces many ethical challenges. Some of the most important are doping, match-fixing and corruption, violence and aggression, and discrimination.

Doping and Performance-Enhancing Drugs

Doping means using banned drugs or methods to artificially improve performance. Examples include anabolic steroids, blood doping, and certain stimulants.

To fight doping, organizations like the World Anti-Doping Agency (WADA) set lists of banned substances, and athletes are tested in and out of competition. Still, pressure to win and the promise of fame and money tempt some athletes and coaches to break the rules.

Match-Fixing and Corruption

Match-fixing happens when players, referees, or officials secretly decide the result of a game in advance, often for betting or bribes. This is one of the greatest threats to the integrity of sport, because it destroys the most basic promise: that the outcome is uncertain and earned on the field.

Once fans believe that results are "fixed," they stop caring about who wins. Sport then becomes just another business dealing.

Violence and Aggression

Some level of physical contact is normal in many sports. But ethical problems arise when players or fans cross the line into violence.

Such behaviour goes against the idea that sport should be a controlled and safe form of competition, not a real war. Leagues often introduce strict punishments and campaigns to reduce violence, but the emotional intensity of games still creates risk.

Discrimination and Inequality

Ethics in sports also concerns how different groups are treated. Common issues include Gender inequality, Racial discriminationand Exclusion of disabled athletes.

When sport excludes or mistreats certain groups, it fails its promise to be a space where any person can compete and be judged only by performance.

Encouraging Ethics in Sports

The good news is that ethics in sports can be taught, protected, and strengthened. Some important steps include:

Education from a Young Age

Schools and youth clubs should teach not just technique and fitness, but also values like respect, responsibility, and self-control.

Clear Rules and Strong Enforcement

Rules against doping, match-fixing, violence, and discrimination must be clear, public, and fairly enforced.

At the same time, athletes must have rights to fair procedures, so that they are not wrongly accused.

Creating a Culture of Respect

Small friendly gestures make a big difference.

These remind everyone that, at its heart, sports is about mutual respect and shared enjoyment.

Supporting Whistleblowers

Those who report doping, corruption, or abuse often risk their careers. Ethical systems must protect such whistleblowers and treat their information seriously. Without them, many hidden problems would never come to light.

Keeping the Spirit of Sport Alive

Ethics in sports is not an abstract or "extra" topic. It is at the core of what makes sport worth playing and watching. Without ethics, victories are empty, records are suspicious, and heroes are false. With ethics, even defeat can be noble, and sports can serve as a school of character for everyone involved.

In the end, ethical sports asks a simple but demanding question: What kind of person do you want to be when you compete? Someone who wins by any means, or someone who respects the game, the opponent, and themselves? The answer each athlete, coach, official, and fan gives to this question will decide the future of sports more than any rulebook.

If we choose fair play, respect, and integrity, sports will continue to inspire new generations, not only to run faster or jump higher, but also to live honest lives.

Pooja Arora
Swarup Nagar Branch
R.O., Kanpur

The Rise of E-Sports

E-sports or electronic sports has rapidly evolved into one of the most influential entertainment industries in the modern world. What began as small-scale gaming competitions among a handful of enthusiasts has transformed into a global phenomenon that attracts millions of viewers, massive investments and international recognition. Today, professional gamers compete in organized tournaments that rival traditional sports in excitement, scale and audience engagement. The rise of e-sports reflects broader changes in technology, culture and media consumption. With the growth of high-speed internet, advanced gaming systems and digital streaming platforms, gaming has moved beyond casual recreation to become a legitimate profession and spectator sport. This transformation highlights how digital innovation can reshape entire industries and redefine how people connect, compete and entertain themselves.

Origins of Competitive Gaming: The history of e-sports dates to the early 1970s, when the first known video game competition took place at Stanford University in 1972. Participants competed in a game called Spacewar! and although the prize was modest, the event marked the beginning of organized gaming competitions.

During the late 1970s and early 1980s, arcade gaming became extremely popular. Games such as Space Invaders introduced the concept of high scores, encouraging players to compete against one another for the top position. This simple feature laid the foundation for competitive gaming by creating measurable performance standards. As arcades grew in popularity, gaming companies began organizing tournaments to promote their products. These early competitions attracted large numbers of participants and demonstrated the potential of gaming as a social and competitive activity. Although the scale was limited compared to present day, these events played a crucial role in shaping the future of e-sports.

The Internet Era and Professionalization: The 1990s marked a turning point in the development of e-sports. With the rise of personal computers and the expansion of the internet, players could compete with others across different locations. This connectivity enabled the creation of online multiplayer games, which became the backbone of competitive gaming.

During this period, organized leagues such as the Cyberathlete Professional League (CPL) emerged, introducing structure, rules, and professionalism to gaming competitions. These leagues helped legitimize e-sports and paved the way for future growth. The early 2000s saw further advancements with the introduction of global tournaments like the World Cyber Games (WCG). These events brought together players from different countries, transforming e-sports into an international activity. The ability to compete globally increased the appeal of gaming and attracted a wider audience.

South Korea: The Pioneer of Modern E-Sports: South Korea played a vital role in the rise of e-sports as a mainstream activity. With widespread access to high-speed internet and the popularity of gaming cafes known as PC Bangs, the country became a hub for competitive gaming.

The real-time strategy game StarCraft gained immense popularity in South Korea, leading to the creation of

professional leagues and televised matches. Players became celebrities, and gaming was recognized as a legitimate career. This level of acceptance helped establish a model that other countries would later follow. Government support further strengthened the e-sports ecosystem in South Korea. By investing in infrastructure and promoting gaming as a cultural asset, the country positioned itself as a global leader in the industry.

India's Emerging E-Sports Landscape

India's e-sports ecosystem has also witnessed significant progress in recent years, reflecting a gradual shift in institutional recognition and public perception. A major milestone came with the Government of India officially recognizing e-sports as a sport under the Ministry of Youth Affairs and Sports, distinguishing it from the broader category of online gaming. This recognition strengthened the legitimacy of e-sports and created a stronger foundation for its organized growth. Another noteworthy development was the increasing engagement of national leadership with the gaming community. In April 2024, the honorable Prime Minister participated in a special interaction titled "Game On ft. NaMo", where he met leading Indian gamers and e-sports personalities and discussed issues related to gaming culture, technological innovation, youth participation, and the distinction between gaming and gambling. Such high-level engagement highlighted the growing importance of gaming and e-sports within India's broader digital and innovation landscape. Together with increasing investments, competitive platforms, and expanding digital initiatives, these developments indicate that India is gradually emerging as an important contributor to the global e-sports ecosystem.

Impact of Streaming Platforms: The 2010s marked a revolutionary phase in the growth of e-sports, largely driven by the rise of streaming platforms such as Twitch and YouTube Gaming. These platforms allowed fans to watch live matches from anywhere in the world, significantly increasing the accessibility of e-sports.

Streaming transformed gaming into a spectator-friendly activity. Viewers could interact with players, participate in live chats, and follow their favourite teams and tournaments. This level of engagement created a strong sense of community and contributed to the rapid expansion of the industry.

Popular games such as League of Legends, Dota 2, and Counterstrike attracted millions of viewers during major tournaments. The success of these games demonstrated that e-sports could compete with traditional sports in terms of audience reach and entertainment value.

Economic Growth and Business Models: E-sports has grown into a multi-billion dollar industry, supported by various revenue streams. These include sponsorships, advertising, media rights, merchandise sales, and ticketed events. Major companies invest heavily in e-sports to reach younger audiences who are increasingly shifting away from traditional media. Sponsorships remain the primary source of revenue, with brands partnering with teams and tournaments to promote their products. Media rights are also becoming increasingly important, as streaming platforms and broadcasters compete to secure exclusive access to popular events.

Global Expansion and Government Involvement: E-sports has expanded rapidly across the globe, with different regions adopting unique approaches to its development. In China, the government has recognized e-sports as a professional activity and invested heavily in infrastructure, including dedicated arenas and training facilities. European countries have taken steps to regulate e-sports and integrate it into educational systems. In North America, private companies and educational institutions have driven growth through investments and collegiate programs. The Middle East has also emerged as a key player, with governments investing in large-scale tournaments and facilities to attract global attention. These efforts highlight the growing importance of e-sports as both an economic driver and a cultural phenomenon.

Comparison with Traditional Sports: E-sports shares many similarities with traditional sports, including structured competitions, professional teams, and dedicated fan bases. However, it also differs in several key aspects.

Unlike traditional sports, e-sports is entirely digital, requiring players to rely on cognitive skills, reflexes, and strategic thinking rather than physical strength. Additionally, the barrier to entry is much lower, as players only need access to gaming equipment and an internet connection. While traditional sports continue to dominate in terms of revenue and viewership, e-sports is rapidly gaining ground, particularly among younger audiences. This shift in demographics has prompted traditional sports organizations to invest in e-sports to remain relevant.

The Rise of Mobile E-Sports: One of the most significant developments in recent years is the rise of mobile e-sports. With the widespread availability of smartphones and affordable internet, gaming has become accessible to a much larger audience. Mobile games such as PUBG Mobile, Free Fire, and Mobile Legends have created competitive ecosystems that rival traditional PC-based e-sports. These games are particularly popular in regions like Asia, Latin America, and Africa, where access to high-end gaming hardware may be limited. The growth of mobile e-sports has democratized competitive gaming, allowing players from diverse backgrounds to participate and succeed. This trend is expected to continue as technology improves and mobile gaming becomes even more sophisticated.

Career Opportunities and Player Ecosystem: E-sports has created a wide range of career opportunities beyond professional gaming. Players, coaches, analysts, commentators, and content creators all contribute to the ecosystem.

Top players can earn significant income through tournament winnings, sponsorships, and streaming. Educational institutions have begun offering e-sports programs and scholarships, providing students with opportunities to develop their skills while pursuing academic goals. These initiatives help create a more structured pathway into the industry.

Challenges Facing the Industry: Despite its rapid growth, e-sports faces several challenges that must be addressed for long-term success. Financial sustainability remains a key concern. Player health is another important issue. Additionally, the lack of standardized regulations across regions creates difficulties in maintaining fairness and consistency. Gender inequality is also a significant challenge. Addressing these issues will be crucial in ensuring the continued growth and inclusivity of e-sports.

Technological Innovations and Future Trends: Technology continues to drive the evolution of e-sports. Cloud gaming is expected to reduce the need for expensive hardware, making high-quality gaming accessible to a broader audience. Artificial intelligence is being used to enhance game design, improve training methods, and create personalized viewing experiences.

The expansion of 5G networks will further improve connectivity, enabling smoother gameplay and real-time interaction. Virtual reality and augmented reality technologies may also play a role in shaping the future of e-sports, offering more immersive experiences for players and spectators.

Outlook: The future of e-sports looks promising, with continued growth expected in both audience size and revenue. As technology advances and global interest increases, e-sports is likely to become an even more integral part of the entertainment industry.

There is also ongoing discussion about including e-sports in major international events such as the Olympics. While challenges remain, the increasing recognition of e-sports suggests that it may eventually achieve the same status as traditional sports. The rise of e-sports is a remarkable example of how technology and innovation can transform a simple pastime into a global industry. From its humble beginnings in university labs and arcade halls to its status as a billion-dollar enterprise, e-sports has come a long way. Today, it stands as a powerful force in entertainment, culture, and business, connecting people from different parts of the world through competition and shared passion. In India as well, e-sports is gradually becoming a mainstream avenue for youth engagement and career opportunities. As the industry continues to evolve, e-sports is set to play an even greater role in shaping the future of digital entertainment.

Mohammad Ibraheem
R.O., Rewa

प्रतियोगिता क्र. 177

एक छंद लिखे/ Write a verse

Contest No. 177

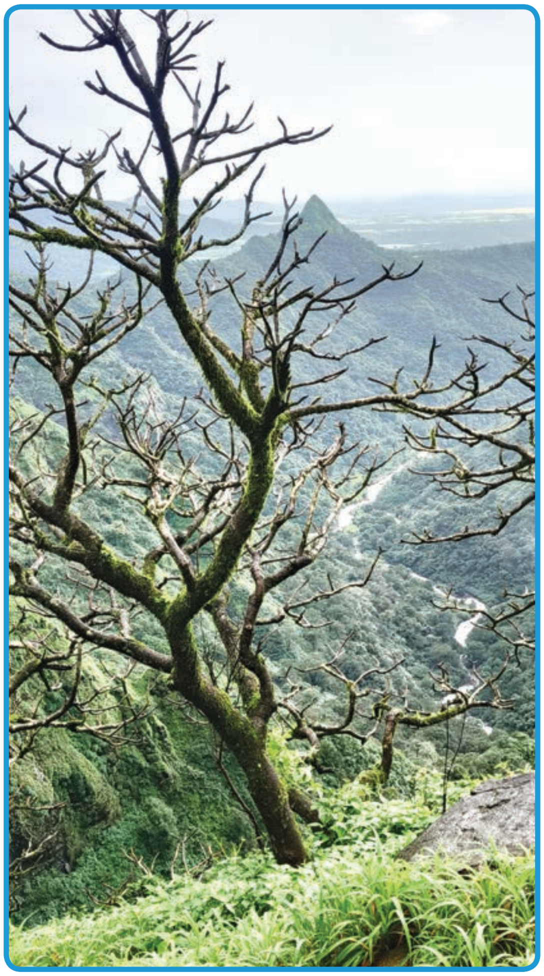

फोटो – कुमुद
क्षे.का., अमरावती

यूनियन धारा प्रतियोगिता क्र 176 - 'शीर्षक लिखें' के पुरस्कार विजेता

पुरस्कार	हिंदी श्रेणी
प्रथम	श्री राजेश्वर, क्षे.का., सेलम
द्वितीय	सुश्री चेतना पडेगांवकर, क्षे.का., रायपुर
तृतीय	सुश्री देबाश्री गौतम, क्षे.का., राँची
प्रोत्साहन	सुश्री निधि, क्षे.का., समस्तीपुर
पुरस्कार	**अंग्रेजी श्रेणी**
प्रथम	श्री मनीष कुमार, क्षे.का., रायपुर
द्वितीय	सुश्री पूजा रंजन, क्षे.का.,राँची
तृतीय	श्री अनुभव कुमार, क्षे.का., बेंगलूरु (उत्तर)
प्रोत्साहन	सुश्री शालिनी कुमारी, क्षे.का., धनबाद

एक छंद लिखे

क्या यह तस्वीर कोई पुरानी याद ताज़ा करती है, कोई छुपी हुई भावना को जगाती है, या आपकी कल्पना को उड़ान भरने पर मजबूर कर देती है? तस्वीर हज़ार शब्दों के बराबर होती है, लेकिन अगर आप अपनी बात कुछ ही शब्दों में कहना चाहें—तो चलिए, अपनी कलम को जादू बुनने दें और पल में थोड़ी मस्ती घोल दें!

इस चित्र के लिए 04 पंक्तियों (25-30 शब्दों) का एक छंद लिखें और अपने कार्यालय/क्षेत्र के संवाददाता के माध्यम से हमें प्रेषित करें

अपनी प्रविष्टि भेजते समय निम्नलिखित का ज़रूर ध्यान रखें:

- छंद अधिकतम 04 पंक्तियों (25-30 शब्दों) की ही हो.
- प्रविष्टि हिंदी या अंग्रेजी में भेजी जा सकती है. परिपत्र सं. 8303-2024 दि: 12.06.2024 के अनुसार दोनों श्रेणियों में अलग-अलग पुरस्कार दिए जाएंगे.
- **एक स्टाफ सदस्य एक ही प्रविष्टि प्रस्तुत कर सकते हैं, या तो हिंदी या अंग्रेज़ी में .**
- प्रतियोगिता केवल बैंक के सेवारत कार्मिकों के लिए ही है.
- सभी संवाददाता से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र से प्राप्त प्रविष्टियों को भाषावार सारणी में समेकित कर अंतिम तिथि तक uniondhara@unionbankofindia.bank.in पर प्रेषित करें. सारणी में प्रविष्टि के साथ स्टाफ का नाम, पदनाम, शाखा/कार्यालय का नाम, सोल आईडी की सूचना अवश्य दें.
- **प्रविष्टियां भेजने कि अंतिम तिथि 30 जून, 2026 है।**
- शब्द संख्या का ध्यान रखते हुए अंतिम तिथि तक प्राप्त प्रविष्टियों को ही प्रतियोगिता में सम्मिलित किया जाएगा।

Write a verse

Does this picture tug at an old memory, stir a hidden emotion, or set your imagination dancing? A picture may be worth a thousand words, but if you'd rather express your feelings in just a few—go on, let your pen work its magic and sprinkle some fun into the moment!

Write a verse of 04 lines (25-30 words) on this picture and send it to us through the correspondent of your office/Region.

Please ensure the following while submitting your entry:

- verse should be of maximum 04 lines (25-30 words) only.
- The entry may be sent in Hindi or English. In terms of circular no. 8303-2024 dt. 12.06.2024 separate prizes shall be awarded under each language category.
- **A staff member may submit only one entry, either in Hindi or in English.**
- This contest is open only for the staff members presently in service of the Bank.
- All correspondents are requested to consolidate the entries of their Region, language wise, in a tabular form, by the last date and send them to uniondhara@unionbankofindia.bank.in Invariably give details of Staff name, designation, branch/Office name, SOL ID along with the entries.
- **The last date for sending entries is 30 June, 2026.**
- Entries, duly, adhering to the specified word limit, received by the last date, shall only be included in the competition.

Futuristic Sports Experience

It's a warm evening. You settle into your couch—not to "watch" a match, but to step into it. With a simple gesture, your living room dissolves into a roaring stadium. The crowd hums around you, the grass stretches beneath your feet, and the players—life-sized, vivid, almost within reach—move with breathtaking realism. You are no longer just a viewer. You are present. This is not science fiction. This is the direction in which sports viewing is headed—a transformation so profound that it will redefine what it means to be a fan. In this new era, the boundary between reality and broadcast fades away. You can shift perspectives at will—stand beside the striker as they line up a decisive shot, or hover above the field to see plays unfold like a master tactician. Every heartbeat of the game is yours not just to observe but to experience. The connection deepens too. You don't just cheer for your team; you feel the tension in their movements, the urgency in their decisions, the electricity of the crowd as if it were your own pulse. Friends from across the world can join you in this shared space, celebrating, debating, and reacting together as though seated side by side.

What was once a passive pastime is soon becoming something immersive, personal, and alive. The future of sports isn't just about better screens or sharper images—it's about presence, emotion, and the powerful illusion of being exactly where the action is.

Beyond the Screen: Entering the Game: For decades, sports lived behind glass—television screens, smartphones, tablets. No matter how large or high definition the display, there was always a barrier between the fan and the field. The future tears that barrier down. Instead of watching a football match from a fixed broadcast angle, you might stand behind the goal, feel the tension before a penalty kick, or switch perspectives instantly to hover above the pitch like a drone. Want to follow a single player for the entire game? You can. Curious about a referee's decision? Step into their vantage point and see exactly what they saw. This shift isn't just technological—it's emotional. When you are placed inside the moment, your connection to the game deepens. Every pass feels sharper. Every near miss stings harder. The experience becomes personal.

A Stadium That Lives in Your Home: In the future, the concept of "going to the game" will evolve. Physical stadiums will still exist—electric, loud, irreplaceable— but they will no longer be the only place where magic happens. Your home will become a dynamic stadium. Walls may transform into panoramic displays. Sound systems will recreate the thunder of the crowd with uncanny precision. Even subtle details—the rustle of jerseys, the echo of a ball striking the post—will be rendered with life-like clarity. But the real revolution lies in flexibility. You might choose a front-row seat one moment, then float above the action the next. You might watch the same match from ten different perspectives, each revealing a new layer of the game.

The stadium will no longer be a place. It will be an experience—one that travels with you.

The Rise of the Intelligent Broadcast: Future sports broadcasts will not just show you what is happening—they will understand how you want to experience it. Artificial intelligence will quietly observe your preferences. Do you enjoy tactical analysis? The system will overlay formations and passing networks in real time. Do you prefer raw emotion? It will minimize data and focus on player reactions, crowd energy, and storytelling. Commentary itself will evolve. Instead of a single voice guiding millions, you might choose your narrator. A seasoned analyst, a former player, a comedian, or even a personalized AI voice that speaks in a tone you find most engaging. Over time, the broadcast becomes uniquely yours—shaped by your habits, your curiosity, your way of seeing the game.

Data That Feels Alive: Statistics have always been part of sports, but in the future, they won't sit quietly in

the corner of a screen. They will breathe. Imagine watching a tennis rally and seeing a faint trail behind the ball, revealing its speed and spin. Picture a cricket match where field placements glow subtly, showing strategic intent. Envision a marathon where each runner's stamina, pace, and fatigue unfold visually as the race progresses. Data will enhance the experience. It will help you understand not just what happened, but why it mattered. And for those who crave depth, entire layers of analysis will be available on demand. With a gesture or a voice command, you can dive deeper into patterns, probabilities, and predictions—turning every match into a rich, interactive narrative.

Watching Together, Even When Apart: At its heart, sports are about connection. It's about cheering, arguing, celebrating, and mourning—together. The future will preserve this spirit, even as viewing becomes more digital. You and your friends might gather in a shared virtual space, each appearing as life-like avatars. You will celebrate goals side by side, debate decisions in real time, and feel the collective pulse of the game—even if you are thousands of kilometres apart. Strangers, too, will become part of the experience. Fans from different countries, cultures, and backgrounds will converge in digital arenas, united by their love for the game. The geography of fandom will dissolve. The community will remain.

The Freedom of Time: One of the quiet revolutions in sports viewing will be the liberation from time. Missed the match? Instead of watching a replay you will relive it, step into key moments, experience them from multiple perspectives, slow them down, speed them up, or explore them interactively. Busy schedule? Watch a condensed version that captures the essence of the game in minutes, without losing its emotional arc. Want to revisit a legendary moment from years ago? Experience it as if it is happening now, with the same immersive intensity. Time will no longer limit your connection to sports. It will become a tool you can shape.

Gamification - The line between watching and playing will blur. During a live match, you might predict the next move, guess the outcome of a play, or participate in real-time challenges. Earn points, compete with friends, or climb global leaderboards—all while the game unfolds. Fantasy sports will evolve into something far more dynamic, integrating seamlessly with live action. Your decisions, predictions, and insights will feel more immediate, more meaningful. But beyond competition, there will be creativity. Fans might design their own highlight reels, create alternate commentaries, or even simulate "what-if" scenarios. Sports will remain unpredictable, but your interaction with them will become endlessly flexible.

Accessibility for All: As the future unfolds, one of the most important goals will be inclusivity. Technology will open doors for fans who have traditionally faced barriers. Real-time translations will make commentary accessible across languages. Audio descriptions will bring the action alive for visually impaired audiences. Customizable interfaces will adapt to different needs and preferences. The idea is simple but powerful: Everyone, regardless of ability or background, should be able to experience the thrill of sports in a way that feels natural and engaging.

The Ethical Balance: With great innovation comes great responsibility. As sports viewing becomes more personalized and data-driven, questions will arise. How is user data being used? Are experiences becoming too fragmented? Is the essence of the game at risk of being overshadowed by technology? There is also the delicate balance of gamification and betting. While these elements can enhance engagement, they must be handled carefully to avoid exploitation or harm. The future will require thoughtful design—ensuring that technology enhances the human connection to sports, rather than diluting it.

The Heart Remains the Same: For all the change that lies ahead, one thing that will not change isthe reason we love sports. It is not just about the technology, the data, or the spectacle. It is about the moments—the last-second goal, the impossible

comeback, the quiet resilience of an athlete who refuses to give up. No matter how advanced the viewing experience becomes, these moments will remain at the core. Technology will amplify these moments, bring us closer, help us understand them—but it will not replace the thrill.

A Future Already Beginning: The future of viewing sports is not a distant dream. It is already unfolding, piece by piece, in innovations we are beginning to see today. Each new development— whether it is immersive viewing, intelligent broadcasts, or interactive features—is a step toward a more connected, more engaging, more enhanced experience. The future of sports viewing is not about escaping reality. It is about deepening our connection with it.

Final Whistle: One day, the question will no longer be, "Did you watch the game?" Instead, it will be, "How did you experience it?" Did you stand behind the striker as they took the winning shot? Did you analyse every tactical move in real time? Did you celebrate with friends scattered across the globe, yet somehow right beside you?

In the future, every fan will have their own version of the same match—a unique journey shaped by curiosity, emotion, and choice. The screen will fade. The boundaries will dissolve; and sports, in all its raw, unpredictable beauty, will feel enthralling than ever before.

Balakrishna Cherukuri
R.O., Bengaluru (N)

An Unforgettable Victory

She Didn't Wait for a Chance-
She Created One
It doesn't begin in stadiums.

It begins quietly—in courage, in resistance, in a girl choosing not to stop.

And sometimes… it explodes into something unforgettable

There are victories—and then there are moments that feel like history shifting.

ICC Women's T20 World Cup triumph by India was one of those moments.

It wasn't just about winning. It was about how they won—

fearlessly, dominantly, unapologetically. Every boundary felt like a statement.

Every wicket felt like years of doubt being answered.

And when the final moment came…

it wasn't just a team celebrating. It was millions of girls seeing themselves—

not in the audience, but at the centre.

What made this victory different? It felt personal.

Because behind that win were years of quiet struggles—

empty practice grounds, unequal opportunities,

being overlooked, being underestimated.

And yet, when it mattered most, they didn't just compete—

they owned the stage.

This wasn't just a cricket match. It was a declaration:

We are not here to participate. We are here to dominate.

Not long ago, women's cricket matches were updates you had to search for. Today?

They are prime-time conversations.

The Women's Premier League, global tournaments,

rising stars—everything is changing.

But this T20 World Cup victory accelerated that change.

It made people stop scrolling. It made them watch.

It made them care. Across India, athletes have become symbols of belief—

calm, fierce, and unstoppable. This win whispers back:

Be bold. Be loud. Be unstoppable.

On the Olympic stage, young talents continue to rise,

quietly preparing to be the next headline.

Because this victory speaks
to someone far beyond the stadium.

To the girl who hesitates before joining a game.

To the one who's told to "be careful,"

"be proper," "be less."

Because the women who lifted that trophy?

They were once exactly where you are—undeniable.

victory doesn't just add a title to a record—

it adds belief to a generation, and another girl picks up a bat to win.

Hema Hariharan
UMFB Chalai Bazaar Branch,
R.O., Trivandrum

From Playground to Profit

On a match day at the Narendra Modi Stadium in Ahmedabad, the roar of over 100,000 fans tells only half the story. Outside the stadium, a massive business engine is in full gear. Hotels are fully booked, cab drivers are seeing record bookings, and local food stalls are selling a week's worth of stock in just one afternoon. What looks like a simple celebration of sports is a powerful flow of money that helps the entire city grow. In the past, India viewed sports mostly as entertainment or a hobby. Today, that has changed. Sports are now a formal industry, attracting huge investments and creating thousands of jobs. It is no longer just "playing a game". It is a key part of India's journey toward becoming a global economic powerhouse.

The $2 Billion Milestone - A Macroeconomic Shift

The commercial maturation of the Indian sports sector reached a historic inflection point in 2025. According to the latest WPP Media 'Sporting Nation' report, the domestic sports economy crossed the $2 billion threshold for the first time, reaching ₹18,864 crore ($2.13 billion). This represents a robust year-on-year growth of 13.4%.

More importantly for institutional investors, the industry has demonstrated structural resilience. It has nearly doubled in size from ₹9,530 crore in 2021, registering a compound annual growth rate (CAGR) of 18.6% over a four-year period.

Despite this rapid expansion, sports still contribute merely about 0.1% to India's gross domestic product. When contrasted with the global average of 0.5%, this gap does not represent a systemic failure, but rather a massive, under leveraged market ripe for capital allocation and financial deepening.

The Revenue Triad - Media, Sponsorships, and Equity. The architecture of India's sports revenue is primarily built on three distinct pillars:

- Media broadcasting rights
- Corporate sponsorships
- Athlete endorsements

Media investments are the undisputed lifeblood of the ecosystem, accounting for 51% of the total industry value in 2025. Total advertising investments hit ₹9,571 crore, growing at nearly 20% year-on-year. A critical trend for the Banking and tech sectors to monitor is the rapid pivot toward digital consumption. While traditional television advertising grew by a respectable 16.4% to ₹5,117 crore, digital media spends vastly outpaced it, surging 24% to reach ₹4,449 crore. This reflects a structural shift toward mobile first viewing habits, data driven marketing, and the rising power of digital streaming platforms.

Sponsorships generated ₹7,943 crore, making up 42% of the market. Interestingly, this 7% annual growth was driven not by an influx of new ad inventory, but by the premiumization and better monetization of existing assets. Brands are actively moving away from superficial, visibility led logo placements toward immersive, story-driven collaborations.

Athlete endorsements reached ₹1,350 crore in 2025, recording a 10.3% uptick. The nature of these financial arrangements is evolving rapidly. Top-tier athletes are transitioning from standard brand ambassadors to strategic commercial partners through equity linked deals and deeper integration into franchise ecosystems, signalling a shift toward institutionalized endorsement models.

The Cricket Premium - Any institutional analysis of India's sporting economy inevitably becomes a study of cricket's overwhelming monopoly. In 2025, cricket contributed an astounding 89% of the total sports industry revenue, an increase from 85% the previous year. In absolute financial terms, the sport generated ₹16,704 crore, growing at 17.9% annually. This dominance permeates every commercial layer - cricket commands

81% of all sponsorship capital, 87% of endorsement money, and a staggering 95% of media investments.

The Indian Premier League (IPL) remains the undisputed commercial anchor of this growth. From a corporate finance perspective, the league has transitioned from a recreational tournament into a highly lucrative asset class. According to Houlihan Lokey's 2025 valuation study, the IPL's business enterprise value surged 12.9% to reach $18.5 billion, while its standalone brand value climbed to $3.9 billion. Recent franchise acquisitions underscore this immense premium. Investors and private equity consortiums are drawn to the franchise model's predictable cash flows. With approximately 70% to 75% of a team's revenue secured via the Board of Control for Cricket in India's (BCCI) central media rights pool, franchises enjoy unprecedented financial visibility before a single match is even played.

The Microeconomic Multiplier - While billion-dollar franchise valuations capture the financial headlines, the true macroeconomic utility of sporting events lies in their localized multiplier effects. Mega events act as highly efficient geographic stimulators, triggering consumption clusters across host cities. During tournament seasons, cities witness aggressive spikes in travel and leisure spending. Studies and market data suggest that travel-related revenues can climb by up to 30% during major event windows. Equally vital is the employment generation capacity of this sector. Large scale sporting events demand massive, immediate labour mobilization, creating vital livelihood opportunities that span multiple skill levels.

Crucially, a substantial portion of this capital flows directly into the informal economy, providing inclusive growth and short burst income generation that traditional industrial policies often struggle to deliver.

Infrastructure and the Long-Term Dividend - Hosting international sports events acts as a powerful catalyst for municipal and national infrastructure development. The strict compliance requirements of global sporting bodies push governments to fast-track capital expenditure. This results in the modernization of stadiums, the expansion of urban mass transit transport systems, and critical upgrades to airport connectivity.

When planned through efficient public-private partnerships, these investments yield a long-term economic dividend. The infrastructure outlives the tournament, permanently improving urban efficiency and commercial productivity. For the banking sector, this presents lucrative avenues: from financing heavy infrastructure projects to structuring complex public private syndications.

Opportunities for the Banking Sector - For the banking and financial services sector, the rapid formalization of India's sports economy presents a multi-tiered revenue opportunity that extends well beyond traditional corporate sponsorships.

First, the sheer scale of modern media rights, exemplified by the IPL's massive $6.4 billion broadcast cycle, requires sophisticated syndicated lending, escrow mechanisms, and currency hedging to manage complex, multi-year cash flows.

Second, on the corporate advisory and M&A front, sports franchises have evolved into highly liquid mega-assets. With individual franchise enterprise valuations now hovering between $1.6 billion and $1.8 billion, there is surging demand for institutional debt restructuring, private equity stake sales, and specialized valuation services. Furthermore, the push for world-class facilities offers lucrative avenues for project finance. As the government and private sector collaborate to build the infrastructure required to support a projected $130 billion industry by 2030, Banks are uniquely positioned to underwrite municipal bonds and structure complex public-private partnership (PPP) debt.

Finally, private Banking and wealth management divisions face a rapidly expanding elite clientele. With

domestic athlete endorsements hitting ₹1,350 crore annually, structuring tailored family offices and wealth preservation portfolios for top tier athletes has become a high-yield, premium niche.

The Final Whistle: Looking toward the horizon, market projections suggest that the Indian sports sector possesses the macroeconomic tailwinds, rising disposable incomes, deep digital penetration, and rapid urbanization, to potentially scale to a $130 billion valuation by 2030. However, realizing this valuation requires a fundamental transition from an episodic, event driven model to an annuity-like, year-round ecosystem.

Government initiatives like "Khelo India" are laying the vital groundwork for grassroots talent development, but it will require sustained private capital to build out multi-sport league ecosystems in disciplines like Football, Kabaddi and Badminton.

For the modern Banking and Financial Sector, sports have categorically outgrown the entertainment pages. It is now a formidable engine of economic momentum, intrinsically linked to the nation's broader ambition of cementing a $5 trillion economy. From structuring media rights syndications and underwriting smart-city infrastructure to advising on private equity buyouts of franchise assets, the opportunities are increasingly sophisticated. The players on the pitch may still be fighting for a trophy, but the institutions backing them are playing for a much larger, and far more lucrative, economic dividend.

Dr. Deepak Kumar
ULA-Credit & Policy,
Lucknow

She is Creative; not Created

When the Lord of Universe Himself,
proclaimed and celebrated womanhood,
as He gave half of His self to Mother Parvathi.
As the feminine energy pervading
the Universe has taken the form of Prakriti
Celebration of Womanhood and
acknowledging her presence was subtly
embedded in unspoken ways
in the Universe from times immemorial.
As the times evolved and in the present day,
we started to celebrate Women’s Day.
But to acknowledge her accomplishment,
a day feels small,
for she is to be celebrated each day.
In current scenario,
let her know it is okay to not be able to
make it in all the 99 and odd things,
that it is okay to forget,
it is okay to stumble and fall sometimes.
We have seen many women
have written glorious history,
From Ruling and leading the nation as
Rani Lakshmi Bai
to soaring the skies as Sunitha Williams,
from building empires as entrepreneurs to
conquering Mt. Everest,
from being the Queens of the ground in sports to
heading financial institutions,
there is nothing she can't achieve.
Here as bankers contributing to this prestigious
organization with poise,
you ace every profession like a Queen!
beautifully playing the role as a daughter, sister,
wife, mother, friend, a woman and many more,
Just reinstating Woman is the radiance of God,
she is Creative; not Created.

S Kiranmayie Sai
ZO, Vishakhapatnam

उद्‌घाटन

आंचलिक लेखा परीक्षा कार्यालय,
हैदराबाद

सुंदरपदा शाखा,
क्षे. का., भुवनेश्वर

बाणेर शाखा,
क्षे. का., ग्रेटर पुणे

भरूच मुख्य शाखा,
क्षे. का., बड़ौदा

गीता निकेतन स्कूल, कुरुक्षेत्र शाखा,
क्षे. का., करनाल

यू.एम.एफ.बी. - II, पानीपत शाखा,
क्षे. का., करनाल

सिंहमोड़ क्षेत्र शाखा,
क्षे. का., रांची

अमरपुर शाखा,
क्षे. का., भागलपुर

दासरहल्ली शाखा,
क्षे. का., बेंगलूरु (उत्तर)

तिरुवांकुलम शाखा,
क्षे. का., एर्णाकुलम

कृषि ऋण केंद्र, खुदरा ऋण केंद्र एवं
एमएसएमई ऋण केंद्र का नया परिसर
क्षे. का., एलूरु

गंगिया शाखा,
क्षे. का., समस्तीपुर

नोएडा सेक्टर 132 शाखा, क्षे. का., गाजियाबाद

सत्तेनपल्ली रोड शाखा, क्षे. का., नरसरावपेटा

खुदरा ऋण केंद्र, क्षे. का., गुंटूर

मत्तिकेरे शाखा, क्षे. का., बेंगलूरु-उत्तर

बसवपुरम शाखा, क्षे. का., खम्मम

बुरहानपुरम शाखा, क्षे. का., खम्मम

वरूड़े शाखा, क्षे. का., ग्रेटर-पुणे

चिन्नकाकानी शाखा, क्षे. का., गुंटूर

एम्मीगनूर शाखा, क्षे. का., कर्नूल

शाह बाजार शाखा, क्षे. का., कलबुरगी

उप्पलपाडु शाखा, क्षे. का., गुंटूर

नंदिकोटकूर रोड शाखा, क्षे. का., कर्नूल

श्रीनगर कॉलोनी शाखा,
क्षे. का., गुंटूर

सय्यद खादिम रसूल 'ऐनी' - एक बैंकर और उर्दू साहित्यकार

दिनांक 11 नवंबर 2025 को विजयवाड़ा में आंध्र प्रदेश उर्दू अकादमी से लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित होने पर डॉ अब्दुल हक उर्दू विश्वविद्यालय, कर्नूल द्वारा सम्मान।

सय्यद खादिम रसूल 'ऐनी' यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय कर्नूल में मुख्य प्रबंधक के पद पर कार्यरत हैं। सैयद खादिम रसूल उर्दू साहित्य के बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इन्होंने अपनी उर्दू शायरी एवं साहित्य लेखन के माध्यम से साहित्यिक जगत में विशिष्ट पहचान स्थापित की है। उर्दू साहित्य के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जिनमें सामाजिक सरोकार, मानवीय मूल्य एवं बौद्धिक विमर्श का संतुलित समावेश देखने को मिलता है। वे साहित्य को समाज में जागरूकता, संवाद और सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते हैं। सय्यद खादिम रसूल ने साहित्यिक गतिविधियों के साथ-साथ शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी सक्रिय योगदान दिया है। उनकी लेखन शैली सरल, प्रभावशाली एवं चिंतनपरक है, जो पाठकों को विचार करने के लिए प्रेरित करती है। वे नई पीढ़ी के साहित्यकारों के लिए मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत के रूप में भी सम्मानित हैं। अपनी विद्वत्ता, विनम्रता तथा सामाजिक प्रतिबद्धता के कारण उन्होंने साहित्यिक समाज में विशेष स्थान प्राप्त किया है। समकालीन उर्दू साहित्य में इनका योगदान उल्लेखनीय एवं प्रेरणादायी है जो उन्हें एक विशिष्ट साहित्यिक व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है।

यूनियन धारा के संवाददाता श्री जावेद अर्शद के साथ आपकी बातचीत के कुछ अंश पाठकों के लिए यहाँ उद्घृत हैं:

एक बैंकर के रूप में आपकी पेशेवर पहचान और उर्दू साहित्यकार के रूप में आपकी पहचान इन दोनों यात्राओं की शुरुआत कैसे हुई?

साहित्य में रुचि बचपन से थी। अरस्तू से लेकर मिर्ज़ा ग़ालिब तक सबने यह कहा है कि कविता ईश्वर की देन होती है। शायरी में खूबसूरती स्वाभाविक रूप से आती है और यही मेरे साथ भी हुआ। जब मेरी उम्र 12 साल की थी, तब मैंने पहला शेर/ग़ज़ल कहा था। घरेलू माहौल उर्दू अदब का था। मुझे घर के बुज़ुर्गों से प्रेरणा मिलती रही।

मैंने उड़ीसा यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, भुवनेश्वर से बीएससी एग्रीकल्चर किया। वहाँ के सभी साथी बैंकिंग प्रोबेशनरी ऑफिसर की तैयारी में लगे रहते थे। मुझ पर भी माहौल का असर हुआ और मैंने बैंकिंग की तैयारी शुरू की। अंततः यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, मुंबई में 1994 में प्रोबेशनरी ऑफिसर के रूप में जॉइन किया। पहले 13 साल ट्रेज़री ब्रांच, मुंबई में पदस्थी रही। उसके बाद नियमित रूप से स्थानांतरण होता रहा। कभी दुबई, सिडनी तो कभी केरल, लखनऊ, गाज़ियाबाद, जलगाँव, कर्नूल में काम करने का अवसर मिला।

जब मेरी तैनाती लखनऊ में थी, वहाँ हिंदी अधिकारी ने हिंदी दिवस के लिए मुझसे हिंदी भाषा के शीर्षक पर एक ताज़ा कलाम लिखने का अनुरोध किया। मैंने 40 पंक्तियों की एक लंबी कविता लिखी। जब उसे मंच पर सुनाया तो श्रोताओं ने बहुत पसंद किया। हर शेर पर तालियाँ बजीं और अंत में सभी स्टैंडिंग ओवेशन दिया। इस घटना से मैं बहुत प्रभावित हुआ और उसके बाद यह सिलसिला चल पड़ा। अब तक हिंदुस्तान के कई शहरों में मुशायरे पढ़ चुका हूँ और मेरे कलाम प्रमुख अख़बारों/पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। देश-विदेश के लगभग 50 से अधिक साहित्यकारों ने मेरी शायरी की सराहना की। मुशायरों में भी जनता ने बहुत पसंद किया इससे मुझे उत्साह मिला और मेरी लेखन क्षमता को और मजबूती मिली।

आपके जीवन में साहित्य की ओर रुझान किस वजह से उत्पन्न हुआ?

मेरे जीवन में साहित्य की ओर रुझान स्वाभाविक तौर पर हुआ। बचपन में मैं अपने शहर भद्रक में गीत प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया करता था और प्रथम स्थान प्राप्त करता था। धीरे-धीरे शेर कहने लगा। मुझे उस्ताद अल्लामा क़ुदसी का साथ और मार्गदर्शन मिला। शेर व शायरी/ काव्य विन्यास का अध्ययन किया। क्लासिकल शायर—मीर, ग़ालिब, इक़बाल, अमीर मीनाई, सिराज औरंगाबादी आदि के रचनाओं से प्रभावित हुआ। उर्दू के अलावा हिंदी के कबीर, गुरु नानक, अमीर ख़ुसरो के दोहे भी बहुत पसंद आए। अंग्रेज़ी के कवि जॉन डन के मेटाफ़िज़िकल और वर्ड्सवर्थ के रोमांटिक कविताओं से भी प्रभावित हुआ।

क्या आपके पारिवारिक या शैक्षणिक परिवेश ने आपके साहित्यिक विकास में कोई विशेष भूमिका निभाई?

अल्लामा क़ुदसी एक साहिबे-ए-दीवान शायर हैं, वे मेरे बड़े भाई भी हैं और उस्ताद भी।

उनके सानिध्य और मार्गदर्शन की वजह से हमने शायरी के मुश्किल सफर तय किए। शायरी भले ही कुदरती होती है, लेकिन सही मार्गदर्शन के बिना इसका विकास संभव नहीं। मैं ख़ुशनसीब हूँ कि मुझे ऐसे उस्ताद मिले जिन्होंने हर क़दम पर मेरा मार्गदर्शन किया।

आपने बैंकिंग जैसे लक्ष्य-आधारित पेशे के साथ साहित्यिक सृजन को कैसे संतुलित कैसे किया?

बैंकिंग मेरा पेशा है और शायरी मेरा शौक। मैंने हमेशा पेशे को प्राथमिकता दी है क्योंकि बैंकिंग संस्था ने मुझे समाज में एक सम्मानित व्यक्ति का रुतबा प्रदान किया है और साथ ही वो सारी सुविधाएं प्रदान की है जो कि एक बेहतर जीवन जीने के लिए आवश्यक होती है। बैंकिंग पेशा लक्ष्य आधारित होता है। मैंने दुबई में रिलेशनशिप मैनेजर के रूप में तीन साल काम किया और हर महीने लक्ष्य हासिल किया। पिछले तीन साल से कर्नूल क्षेत्र में वसूली विभाग प्रमुख के रूप में कार्यरत हूँ और हर तिमाही लक्ष्य से आगे रहा हूँ। इसी तरह साहित्य भी लक्ष्य आधारित होता है। तरही (मिसरा) मुशायरों में एक पंक्ति दी जाती है और उसी पर पूरी ग़ज़ल कही जाती है। कभी-कभी आधे घंटे में 14 शेर की ग़ज़ल कहनी होती है। बैंकिंग और शायरी दोनों को संतुलित करना इसलिए संभव हुआ क्योंकि दिन में बैंकिंग और रात में शायरी करता हूँ। समय प्रबंधन को लेकर मैंने सहज नियम को अपने जीवन में लागू किया है। दिन में बैंकिंग और रात में शायरी। वैसे भी सुबह का समय सृजन के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। वास्तविक रूप से बैंकिंग और साहित्य इन दोनों क्षेत्रों में सफलता का कारण समय प्रबंधन ही रहा है। सुबह 5 से 7 बजे का समय सृजन के लिए सबसे उत्तम होता है।

बैंकिंग जैसे क्षेत्रों के लिए शायरी की दुनिया क्या महत्व रखती है?

बैंक और साहित्य एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। बैंक अपने कार्यालयों से हिंदी पत्रिका निकालते हैं जिनमें कविताएँ भी होती हैं। शायरी केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज की भलाई के लिए भी होती है। यह गद्य से अधिक प्रभावशाली होती है और लोगों के दिलों को छूती है। शायरी के माध्यम से बैंकर्स को प्रेरित भी किया जाता है। जी हाँ बिलकुल। विभिन्न लोगों से मिलने से अनुभव बढ़ता है, जिससे शायरी में गंभीरता और गहनता झलकता है। मैं मानता हूँ कि शायरी के तीन तत्व हैं – तथ्य, रुझान और उत्साह। ग़ज़ल की बात करें तो इसमें समाज, अर्थव्यवस्था और व्यक्तिगत भाव सब शामिल होते हैं। कॉर्पोरेट जीवन में सफलता के लिए नैतिकता बहुत ज़रूरी है। शायर अपनी रचनाओं के माध्यम से सही रास्ता दिखाता है और अपने लक्ष्य की ओर ध्यान केन्द्रित करने हेतु प्रेरित और प्रोत्साहित भी करता है।

उर्दू और हिंदी भाषा के संबंध में आपकी विचारधारा क्या है?

उर्दू और हिंदी में मैं कोई अंतर नहीं मानता। दोनों बहनें हैं, दोनों का जन्म और विकास हिंदुस्तान में हुआ। इन दोनों भाषाओं की क्रियाएँ और व्याकरण लगभग समान हैं, केवल लिपि का अंतर है। ये दोनों भाषाएँ एक-दूसरे की सहयोगी है।

आपकी रचनाओं के बारे में बताइए।

मेरी शायरी व ग़ज़लों में समाज, जीवन, व्यक्तिगत भावनाएँ और नैतिक संदेश होते हैं। हर शेर एक स्वतंत्र विचार होता है। उर्दू के अलावा मैंने हिंदी और अंग्रेज़ी में भी शायरी की है। अंग्रेज़ी की कविताएँ दिल्ली के अख़बार ट्रांस्परेंट न्यूज़ में प्रकाशित हुई है। हिंदी कविताएँ यूनियन बैंक की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।मेरी चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं: नूर-ए-मनाक़िब, रहमतों नूर की बरखा, उजालों के शजर और शाम व सहर पाँचवीं पुस्तक प्रकाशित करने की तैयारी में हूँ। छठी हिंदी में और सातवीं अंग्रेज़ी में प्रकाशित होगी।

आपकी प्रमुख उपलब्धियाँ क्या हैं?

बैंकिंग पेशा में तिमाहीवार लक्ष्य प्राप्त किया है और इसके लिए अंचल कार्यालय, तिरुपति से प्रशंसा प्रमाण पत्र भी मिला है। आंध्र प्रदेश उर्दू अकादमी से लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्राप्त हुआ। इसके अलावा अल्लामा इकबाल अवार्ड, मुजफ्फर हंफ़ी अवार्ड एवं गौसे आजम कर्नूल अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

कॉर्पोरेट संस्थानों में साहित्य को बढ़ावा कैसे दिया जा सकता है?

'साहित्य' हर क्षेत्र में एक सकारात्मक जीवन शैली प्रदान करने का कार्य करती है। कॉर्पोरेट संस्थानों में पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है इससे साहित्य को बढ़ावा मिलता है। ये पत्रिकाएँ यदि बहुभाषी हों जिसमें हिंदी, अंग्रेज़ी और स्थानीय भाषा भी शामिल हो तो लोग इसमें ज्यादा रुचि दिखाएंगे। पत्रिका में अपनी लेखनी के माध्यम से योगदान देने वालों को आकर्षक मानदेय के माध्यम से उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है।

एक सफल पेशेवर और साहित्यकार बनने के लिए क्या आवश्यक है?

सबसे पहले अच्छा इंसान बनना ज़रूरी है। आपके वक्तव्य और कर्तव्य समाज के लिए सकारात्मक हो। समय का सही उपयोग करें। सोशल मीडिया का विवेकपूर्ण इस्तेमाल करें। साहित्य के लिए समय निकालें। साहित्य ज़िंदगी है, इसे संजोकर रखें। इससे संस्कृति जीवित रहती है और सशक्त समाज का निर्माण होता है।

अर्शद जावेद
क्षे.का., कर्नूल

Derivatives in Detail

Derivatives as financial products have long been mystified and avoided by common people owing to its complex nature. The great recession of 2008 worsened the case which clearly made the Credit Default Swaps (CDS) a villain. Academicians, Investment Bankers have long known the benefits of Derivatives for hedging. It acts like an insurance guarding you against the uncertainties of future. In that way, derivatives may be complex, but they protect you like angels from the uncertainties of time.

FORWARD

A forward contract is essentially a "lock-in" agreement. It's an over the counter (OTC) deal between two parties to buy or sell an asset at a specific price on a future date, regardless of what the market price is at that time. Think of it to delete "price anxiety" from your future.

Scenario: The coffee company, "Pru" and the Farmer.

Pru needs 1,000 Kgs of coffee beans in six months. A Farmer expects to harvest those beans at the same time.

The Risk: Pru fears the price of coffee will skyrocket (making it too expensive to deliver their order). The Farmer fears the price will crash (making it impossible to cover his costs).

The Solution: They enter a forward contract.

This is how the Transaction Plays Out. They agree on a price today—let's say Rs. 300 per Kg—for delivery in exactly six months.

MARKET PRICE (in 6 months)	WHAT HAPPENS?	THE RESULT
₹ 500/ Kg (Price Rose)	Pru still pays ₹ 300/kg	Pru saves ₹ 2,00,000/-
₹ 100/ Kg (Price Dropped)	Pru still pays ₹ 300/kg	The farmer is saved from a loss of ₹2,00,000/-
₹ 300/ Kg (No Change)	The contract is fulfilled as agreed	Both parties had price certainty

Key Takeaways:

1. Customizable: Forward contracts are private and can be tailored to flexible amount or date.
2. Obligation: Both parties must fulfil the contract. There is no "opting out" if the market price moves against you.
3. Counterparty Risk: Since this is a private handshake (even if written), there is a risk that one party might default if they can't deliver the goods or the cash.

FUTURES

Futures are the organized, high-speed cousins of forward contracts. A futures contract is a standardized deal traded on a public exchange. Think of a Forward as a custom-tailored suit and a Futures as a suit you buy off the rack at a department store.

The Key Differences:

- Futures are traded on an exchange, they have some specific rules that make them safer and faster to trade than forwards.
- Standardization: You can not negotiate the details.
- Marked to Market (The "Daily Tab"): Unlike a forward contract where no money moves until the end, futures are settled daily. If you are winning, money is added to your account every night. If you are losing, money is taken out.
- The Clearing house: You never have to worry about the person on the other side "flaking" on the deal. The exchange acts as the middleman, guaranteeing that everyone gets paid.

A Real-World Example: Airline Fuel

Imagine an airline like Air India wants to lock in the price of jet fuel for the festive travel season to avoid a sudden price spike.

The Trade: Air India buys 100 "Crude Oil Futures" contracts at $80 per barrel for delivery in July.

The Margin: Air India does not pay

the full price upfront. They put down a "deposit" (called Initial Margin), say 10% of the total value.

The Daily Adjustment:

Day 1: Oil rises to $82. The exchange adds $2 per barrel to Air India's account immediately.

Day 2: Oil drops to $79. The exchange deducts $3 per barrel from Air India's account.

The Result: By the time October arrives, the net amount of money Air India has gained or lost in their trading account perfectly offsets the price they must pay for actual fuel at the airport.

Why use Futures instead of Forwards?

1. Liquidity: You can get in and out of a futures contract in a millisecond. With a forward, you are stuck with the other person until the contract ends.
2. No Credit Checks: Since the exchange clears the trade and requires a margin deposit, you do not need to know if the person you are trading with is trustworthy.

In futures trading, Margin is not a down payment. The price of the contract changes every day, the exchange needs to make sure you have the money to cover your potential losses.

This leads us to the most stressful phrase in derivatives business: The Margin Call.

How the "Danger Zone" Works

When you open a futures position, you must maintain a minimum amount of cash in your account, known as the Maintenance Margin. If your trade starts losing money and your account balance drops below that specific line, the exchange triggers a Margin Call.

A Live Example: Betting on Silver

Let's say you think Silver is going to go up. You buy one Silver Future contract.

Initial Margin: You deposit ₹10 lakhs to open the trade.

Maintenance Margin: The exchange says you must always keep at least ₹8 lakhs in your account.

The Market Moves Against You

Silver prices unexpectedly drop for three days straight. Your losses are "marked to market" daily:

Day 1: You lose Rs.1,00,000. Balance: Rs. 9,00,000 (Safe).

Day 2: You lose Rs. 1,50,000. Balance: Rs.7,50,000 (CRITICAL).

The Result

Because your balance (₹7.5 lakhs) is now below the Maintenance Margin (₹8 lakhs), you get the Call. You typically have two choices:

Add Cash: You must immediately deposit enough money to bring your balance back up to the Initial Margin (₹10 lakhs), not just the ₹8 lakhs.

Force Close: If you don't send the money, the exchange will instantly sell your position at the current loss and keep your remaining ₹7.5 lakhs.

The "Death Spiral" Effect

Margin calls are why market crashes sometimes happen so fast. If thousands of traders get margin calls at the same time and can not afford to add cash, the exchange force-sells their positions. This flood of selling drives prices even lower, triggering more margin calls for other people.

OPTIONS

While a forward or future contract is a commitment, an option is exactly what it sounds like: a choice. You pay a small fee upfront for the right to buy or sell something later, but if the deal does not benefit you, you can simply walk away.

EXAMPLE:

Imagine there is a massive Multi Starrer music concert for a famous band being announced in three months. You are not sure if the ticket prices will skyrocket or it will be a flop, because there maybe local body elections in your city during that time.

The Agreement: You pay a friend, who has early access a ₹50 premium today.

The Option: In exchange, your friend gives you the option to buy a front-row ticket from them for ₹500, the strike price, three months from now.

Two Possible Outcomes

1. The "Success" Route- Exercising the Option

The concert sells out in seconds, and tickets are being sold for ₹1,200.

Action: You use your option. You pay your friend the agreed ₹500.

Result: You just got a ₹1,200 tickets for a total of ₹550 (₹500 + ₹50 premium). You can keep it or sell it for a ₹650 profits.

2. The "Flop" Route- Letting the Option Expire.

The election date coincides with the concert date, the concert timing is reduced to 2 hours from 5 hours, and tickets are selling for only Rs. 200 on the open market.

Action: You choose not to use your option. Why pay your friend Rs.500 for something worth ₹200?

Result: You walk away. You lose the Rs. 50 fee you paid upfront, but you are not stuck buying an overpriced ticket.

In the stock market, these tools are used to bet on or protect against a company's future price.

EXAMPLE:

Let's use L&T Technology Services (LTTS), which is currently a massive focus for AI investors.

Imagine LTTS is trading at Rs. 120 today.

1. The Call Option (The Choice)

You think LTTS', new AI chips will be a hit, but you don't want to risk ₹12,000 to buy 100 shares.

The Trade: You buy a "Call Option" with a Strike Price of ₹130 expiring in one month.

The Cost: You pay a ₹5 premium per share (Total: ₹500).

Two possible outcomes:

- LTTS', stocks hit ₹150 after a month. You exercise your call option, and you get the stocks at agreed strike price of ₹130. You can sell them at a profit of ₹15 per share (₹150 – {₹130+₹5})
- LTTS', stocks hit ₹80 after a month. You can choose NOT to exercise your call option and in that case your loss is only ₹500, the premium amount.

2. The Put option

Now, we shift from being an optimistic buyer to a cautious investor. A Put option is essentially price insurance—it protects you from a drop in value.

Imagine you currently own 100 shares of LTTS, trading at ₹120. You have made a great profit, but you are nervous that a new competitor might announce a better AI chip, causing LTTS', stock to crash.

The Strategy: Buying a Put Option

You buy a "Put Option" with a Strike Price of Rs. 110 that expires in one month.

The Cost: You pay a ₹5 premium per share (Total: ₹500).

The Right: You now have the guaranteed right to sell your shares(put) at ₹110, even if the market price drops to zero.

Two Possible Outcomes

- The "Crash" Scenario- The Insurance Pays Off. A rival company releases a revolutionary AI chip, and LTTS', stock price plummets to ₹80.

  Your Move: You "exercise" your Put option.

  The Result: While everyone else is forced to sell at ₹80, you sell your shares at your locked-in ₹110. The Math: You saved ₹30 per share. After subtracting the ₹5 fee you paid; you are ₹2,500 better off than if you didn't have the option.
- The Other Scenario (The Insurance Expires). The fear was unfounded. LTTS announces a massive new contract, and the stock price jumps to ₹150.

  Your Move: You let the Put option expire worthless. Why would you sell at Rs. 110 when the market is paying Rs. 150?

  The Result: You still own your shares which are now worth much more. You simply lose the Rs.500 fee you paid for the peace of mind.

The Takeaway: A Call is a bet on the "upside" wanting to buy low and sell high), while a Put is a bet on the "downside" wanting to sell high even when the market is low.

SWAP

A Swap is the fourth major pillar of derivatives. While forwards, futures, and options are usually about a one-

time transaction, a Swap is a recurring exchange of cash flows over several years. Think of it as trading "conditions" with someone else because they have something you want, and vice versa.

The Most Common Example: The Interest Rate Swap

Imagine two companies that both want to borrow $1 million for 5 years, but they have different preferences for their interest rates.

Company A (The Conservative): Has a "floating" rate. They are terrified that the interest rates will rise, so they want a fixed rate for peace of mind.

Company B (The Risk-Taker): Has a "fixed" rate of 5%. They believe interest rates are going to drop significantly and want a floating rate to save money.

How the Swap Works

They don't pay off each other's loans. Instead, they sign a contract to swap the interest payments only.

Company A agrees to pay Company B a fixed 5%.

Company B agrees to pay Company A the floating market rate (e.g., Secured Overnight Financing Rate, SOFR).

Why do people use Swaps?

Swaps are like a financial "bridge." They allow companies to:

- Manage Risk: Turn an unpredictable expense into a predictable one.
- Get Better Rates: Sometimes a company is so well-known that they get a great "fixed" rate deal from a bank, but they wanted a floating rate. They take the fixed deal and "swap" it with someone else to get the floating rate they desired at a cheaper cost than the bank offered.

The Credit Default Swap (CDS) is essentially an insurance policy on a loan. It became infamous during the 2008 financial crisis because it allowed people to bet on whether others would go bankrupt.

The Scenario: The Lender and the Insurer

Imagine Bank A lends $10 million to a large Construction Company.

The Fear: Bank A is worried the Construction Company might go bankrupt and never pay the money back.

The Solution: Bank A goes to an Insurance Fund (or another Bank) and buys a Credit Default Swap.

This works exactly like car insurance:

The Premium: Bank A pays the Insurance Fund a yearly fee (e.g., $100,000) to keep the "policy" active.

The "Credit Event": If the Construction Company stays healthy and pays its debts, the Insurance Fund simply keeps the premiums. Bank A loses a bit of money (the fee) but gains total peace of mind.

The Default: If the Construction Company goes bankrupt:

The Insurance Fund must pay Bank A the full $10 million (the "Face Value").

In exchange, Bank A hands over the "worthless" loan documents to the Insurance Fund.

The 2008 Twist:

The reason CDS became a "villain" in financial history is that you do not have to own the loan to buy a swap on it. Imagine you see your neighbour driving recklessly. In the world of finance, you could buy "insurance" on your neighbour’s house even though you don't live there. If the house burns down, you get the insurance check.

Speculation: Thousands of traders bought CDS on subprime mortgages they didn't own. They were essentially betting that the housing market would collapse.

Systemic Risk: When the houses did burn down (the mortgages defaulted), the companies that sold the insurance (like AIG) suddenly owed trillions of dollars they did not have.

Derivatives have stood the test of time, and have stood as shield between risk and return for long. It is for our benefit that we take interest in the same and master the skills of using derivatives to minimise risk and maximise returns.

Arka Chakraborty
R.O., Ernakulam

विभिन्न जागरूकता अभियान/ वित्तीय साक्षरता अभियान

क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम

क्षेत्रीय कार्यालय, बोरीवली

क्षेत्रीय कार्यालय, मचिलीपट्टनम

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण)

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, गुंटूर

क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्लम

कारोबारिक समीक्षा बैठक का आयोजन

दिनांक 18.02.2026
अंचल कार्यालय, दिल्ली

दिनांक 18.02.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर

दिनांक 02.02.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, गुंटूर

दिनांक 01.01.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण)

दिनांक 09.01.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, गुंटूर

दिनांक 05.02.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, श्रीकाकुलम

दिनांक 11.02.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, मचिलीपट्टनम

दिनांक 26.02.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, तृश्शूर

दिनांक 14.01.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु

दिनांक 26.02.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण)

दिनांक 11.02.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

दिनांक 24.02.2026
क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्लम

अतीत के झरोखों से

जिल्द 11 अंक 03, Vol 11, issue 03, 1989

टोकन

"टोकन नंबर चार", हमारे लेखाकारजी चिल्लाए "टोकन नंबर चार" लेजरकीपर चिल्लाया और उनके साथ ही "टोकन नंबर चार" दरवाजे पर खड़े वाचमैन ने भी आवाज लगाई और एक नवयुवक अंदर हाज़िर हुआ। उसने अपना टोकन लेखाकार महोदय को दिखाया –

"तो यह दस्तखत आपने किए हैं?" उन्होंने आहरण फार्म आगे सरकाकर पूछा।

"जी हां" वह बोला।

"कैसी दस्तखत करते हो? चलो ठीक से करो, सब गलत काम करते हो. आप लोगों को बस हर काम की जल्दी रहती है। बैंक का काम है। शांति से करना चाहिए। चलो ठीक से करो। उन्होंने कहा।

उसने अपना दस्तखत किया और जाने लगा। उन्होंने वापस बुलाया और तपाक से बोले

"फिर वही गलती की! अरे भई कौनसी कक्षा में पढ़ते हो, अपना दस्तखत भी याद नहीं है? भगवान इस देश का क्या होगा?" उनकी ट्रेन एक बार शुरू होती है तो रूकने का नाम ही नहीं लेती. "चलो इस कार्डपर जैसा किया है वैसा ही करो"।

"जी मैं ऐसा नहीं कर पाऊंगा" उसने कहा।

"क्यों नहीं, फिर बैंक में खाता ही क्यों खोला? बैंक कोई मनोरंजनगृह है, या टाइम पास। चलो ठीक इसी प्रकार से दस्तखत करो। कैसा लड़का है, मेरा कीमती समय बरबाद हो रहा है. अब चुपचाप खड़े रहने से काम नहीं चलेगा जनाब, करो इस प्रकार से दस्तखत। उन्होंने स्पेसिमन कार्ड दिखाकर कहा। लेकिन वह अपनी जगह बुत बनकर खड़ा रहा।

"अब क्या है? हे भगवान सुबह-सुबह कैसे ग्राहक से पाला पड़ा! मेरे बाप, इस तरह से दस्तखत क्यों नहीं करते आप?" लेखाकारजी अपने सिर के बाल खींचते हुए बोले।

"जी मैं ऐसी दस्तखत हरगिज नहीं कर पाऊंगा" वह सहमकर बोला।

"क्यों नहीं?" उनका क्रोध अब काबू के बाहर हो गया।

"जी यह दस्तखत...."

"हां हां बोलो" "यह दस्तखत.... मेरी नहीं है" उसने कहा।

"तो क्या मेरी है?" लेखाकारजी ने उठ खड़े हो कर पूछा।

"जी नहीं यह मेरे पिताजी की है" उसने बात पूरी की और लेखाकारजी अपनी कुर्सी में गिर पड़े।

"तो क्यों तुमने उनकी जगह दस्तखत किए?" वे एकदम बरस पड़े।

जी मैं हमेशा ही उनकी दस्तखत कर के पैसे निकालता हूं, उन्हें अपने कारोबार के सिलसिले में बाहर जाना पड़ता है। समय ही नहीं मिलता" उसने सहज स्वर में कहा।

"चलो भागो यहां से। अपने पिताजी को भेज दो। हे भगवान! बचे हुए पांच साल ठीक मे गुज़रेंगे कि नहीं? सरकार स्वैच्छिक सेवा-निवृत्ति भी नहीं लाती।" वह बुदबुदाये।

"अरे ओ! जाता किधर है?" वे चिल्लाए उसने कहा "जी, पिताजी को बुलाने।"

"तो टोकन तो ला। ओ गॉड पिक मी अप" उन्होंने कहा। इस तरह सुबह का पहला अंक खत्म हुआ, कारोबार शुरू हुआ। ग्राहकों की कतार बढ़ती जा रही थी। काउंटर पर भीड़ बराबर बनी हुई थी अंदर केबिन में प्रबंधक साहब के साथ बैठे लोगों की इस तरह बातचीत हो रही थी मानों किसी चीज का "सेल" हो रहा है। उधर कुलर से हवा कम और आवाज ज्यादा जा रही थी इसलिए पासवाले से भी ऊंचे स्वर में बोलना पड़ रहा था। हमेशा की तरह आज भी वो तीन लिपिकों ने अवकाश लेने का अपना हक अदा किया था। लाइन में खड़े पेन्शन वालों का टेन्शन बढ़ता जा रहा था।

अरे नामदेव कहां है?" स्क्रोलवाले। एकदम चिल्लाया।

"क्या बात है भाई, ऐसे चिल्ला रहे हो जैसे कुम्भ मेले में खो गया हूँ।" कैश-प्यून नामदेव जो शाम को टोकन लगाता है बोला।

"तुम वहां खो जाते तो हमें राहत होती। देखा आज फिर वही गलती की यह 6 नंबर पर 9 नबर टोकन लगाया है" स्क्रोलवाले ने तिलमिलाकर कहा

"यह कैसे हुआ? मैंने तो टोकन ठीक से लगाए थे" नामदेव का जवाब था

"अच्छा! तो 9 नंबर की तरक्की हुई होगी और 6 नंबर मात खा कर नीचे गया होगा यही न?" स्क्रोलवाले ने व्यंग किया।

"यह तो ऊपर वाला ही जाने" नामदेव ने ऊपर देखकर भक्तिभाव से कहा।

"हां हां, तुम भी एक दिन मुझे ऊपर भेजनेवाले हो, ऐसा लगता है।" स्क्रोलवाला बोला।

उधर कैश काउंटर पर खड़ा ग्राहक लगातार टोकन बजा रहा था। उसकी संगीतकला से क्षुब्ध हो कर प्रधान खजांची के गले से तीखा स्वर निकल पड़ा।

"देख रहा हूं मैं आपको और सुन भी रहा हूं, बार-बार याद दिलाने की जरूरत नहीं।" सामने वाले ने अपना टोकन जेब में डाल लिया और प्रधान खजांची सुबह-सुबह सुनी हुई तान गुनगुनाने लगा।

इतने में एक आदमी सहमता हुआ अंदर हाज़िर हुआ और सीधा लेखाकार के सामने खड़ा हुआ।

"क्या है?" लेखाकारजी ने तीखे स्वरों में "हमारी ही सर्वोत्तम ग्राहक सेवा" पेश की।

"बात यह है कि...."

"हां हां बोलते जाइए, रूक क्यों गए? हे भगवान! कैसे-कैसे लोग आते हैं बैंक में। ठीक से बोलते भी नहीं। ऐसे खड़े रहते हैं जैसे मैं अंतर्ज्ञानी हूं। अब बोलोगे भी या मुहूर्त निकालना है?" लेखाकारजी शुरू हो गये।

"जी बात यह है कि...." वह फिर खामोश हो गया।

"जो भी है कह डालो। क्यों अपना, हमारा और देश का कीमती समय बरबाद कर रहे हैं"।

"जी कैसे कहूं समझ में नहीं आता?" उसने कहा।

"कैसे भी कहो प्यार से कहो, गुस्से में कहो। यहां सब चलता है। जो भी हो जल्दी कहो।"

"जी बात यह है कि टोकन नंबर एक गुम हो गया है" उसने कहा।

"क्या?" लेखाकारजी अपनी कुर्सी से खड़े हो गये। कैसे आदमी हैं आप, एक टोकन भी नहीं संभाल सकते तो इस देश को कैसे संभालेंगे? जाओ ढूंढकर लाओ"

"जी सब जगह ढूंढा लेकिन मिलता ही नहीं" वह नजर झुकाकर बोला।

"तो जाओ चार बजे आना अभी काम का समय मत बरबाद करो।" लेखाकार जी ने उसे बिदा किया।

"50 नंबर पहले से गुम था। अब एक नंबर भी गया यानि पहला और आखिरी बल्लेबाज आऊट हो चुका है।" स्क्रोलवाले ने कॉमेन्ट्री की।

"मुझे तो इसमें विदेशी शक्तियों का हाथ दिखाई देता है।" हमारे जासूस दफ्तरी ने कहा।

"बहुत हो गया! अब आप अपने वाऊचर नंबरिंग का काम देखो।" लेखाकारजी ने उसे डांटा। इतने में एक सज्जन उनके पास आये और उन्होंने ढेर सारे टोकन उनकी टेबलपर रख दिये।

"यह क्या हो रहा है? यह कोई मनोरंजन टेबल नहीं है" लेखाकारजी भड़क उठे।

"इतने सारे टोकन मैं कब तक संभालूंगा?" उसने कहा।

"तो क्या आपने इस काम के लिए मुझे चुना है?" लेखाकारजी का गुस्सा और बढ़ गया।

"मैंने ऐसा तो नहीं कहा। मुझे सिर्फ इतना कहना है कि इतने सारे टोकन देने के बजाय सिर्फ एक टोकन नहीं दे सकते हैं आप।" उस व्यक्ति ने कहा।

"जी नहीं आपके जितने चेक हैं उतने ही टोकन मिलेंगे आपको" लेखाकारजी ने समझाया।

"लेकिन दूसरे बैंक में एक ही टोकन मिलता है चाहे कितने भी चेक प्रस्तुत करो।" उसने कहा।

"ठीक है, तो यह एक टोकन आप सभी बैंकों के लिए समझें और बाकी टोकन हमारी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा का प्रतीक यानी "टोकन ऑफ लव" समझें।" लेखाकारजी ने मुस्कराकर समझाया

उससे यह सज्जन भी ठहाका मारकर हंस पड़े और अपने सभी टोकन उठाकर चल दिये।

दिलीप गणपत खैरनार
लिपिक
मालेगाँव, नाशिक

जिल्द 11 अंक 03, Vol 11, issue 03, 1989

Rural Posting can be Fun

Vasantha Peter, Officer, Kalkere Branch, Bannerghatta Bangalore, Karnataka

I have been posted at Kalkere, a rural branch 15 Kms, out of Bangalore City. This picturesque branch is situated in the Sylvanic sprawling grounds of UBI Staff College, Bannerghatta. I am one of those few officers lucky enough to acquire "Rural Experience" while residing in town with my family.

Not only is daily routine at the branch exciting and new, but also each day brings with it the satisfaction of doing some service to the illiterate population of rural India. The other day, Shri Chikkavenkatswamy, son of Shri Doddamunivenkatappa called at the branch. He was dirty, smelly and unkempt- "want to keep Rs 10.000/- in Fixed", he said Unbelievingly I said, "Is that so?" At the same time, I didn't want to lose a good deposit, so very patiently and politely I described the various schemes and rates of interest for different periods - "Okay" he says. "I want to keep Rs. 10,000/- in my grandson's name for 10 years I have brought his photo. "Very politely I explain that little "Ramesh" will grow very different in 10 years, so his photo is not necessary, but could he, Shri Chikkavenkatswamy, give me his own photo and put his thumb impression on the form? He is shocked. "But the money is not for me, it is for my grandson. I don't want to give my photo" After much explanation and due argument, Shri Chikkavenkatswamy puts his own thumb impression on the card, promises to bring his photo but insists that his grandson's photo be kept on record (A deposit in a rural branch regardless of the amount is a much sought after prize which we welcome with open arms and don't mind agreeing to minor idiosyncrasies like keeping a photo of an infant along with the card) Now the voucher is ready and I requested the gentleman to pay the cash, secretly wondering from where this smelly villager would fish out the money. First Rs 1,000/- from his left inner vest pocket and another Rs 1,000/- from the right. Then, he nonchalantly lifted his dhoti and pulled out another amount from the pocket of his underpants. Then the folds of his sleeve cuffs unfurled some more. Thus, he took Rs 10.000/- soiled, sweat-smelling notes from off his person and deposited it. The FDR made, the gentleman thanked me profusely and left the branch with a grateful "Namaste", as if I had helped him do the impossible.

Then there was the day an important customer had asked us to keep Rs. 75.000/- cash ready as he had a big payment to make. Our small rural branch with less cash holding, so the manager asked me to bring Rs 75.000/- from Jayanagar, our nearest branch in town. Early morning I went to Jayanagar on my Kinetic Honda and requested the manager. He agreed but not before frightening the daylights out of me by enumerating how dangerous it was for me, a woman to take so much on a two-wheeler on the lonely country road etc. etc. etc. I listened, nervousness growing within me, but the manager would be annoyed if I didn't get it. So, I insisted, and he directed me to the accountant. The latter after duly warning me again, gave me the voucher and I collected the amount from the cashier in the strong room to avoid being noticed in the public, loaded the money in my handbag and came out flanking it with my knitting and lunch box and left the branch.

After carefully looking around. I started the scooter on the long ride to kalkere, sure that every man on the road is after my money. As I was happily riding along, I noticed one motorcycle follow me. A man with a green helmet. I went fast and in the rear-view mirror I noticed that he also sped, I slowed down, and the man slows down too. Heavens! he was after the money. I raced on and he came after me. Then at a crossroad, I lost him. Yippee! I am free; I thought and happily left the town road and got into the empty countryside road. At a lonely spot, I noticed, a motorbike parked ahead of me and a man with the green helmet "pretending to repair it. Wow! Like a Hadley chase novel? I began sweating, though it was a cold November morning. I was sure the man with the green helmet was planning an ambush. There was no help in sight. I prayed fervently and raced past him. The poor

gentleman had genuine engine trouble and did not even glance at me. I raced on to the branch and quickly gave the cash to the cashier.

Another heart-warming experience is the complete trust and childlike faith of the average rural customer. Smt. Gowramma, wife of late Chennabasappa, address Coconut tree, Sakalvara post and village, Anekal taluka, came to us the other day. Her only son rummaging through her belongings and wanted to steal her Rs. 2.000/-which she had saved over the years from her earning of flower selling "Could you please keep the money" she says. "I don't trust them at home." So her savings account has been opened and she comes to us every now and again to deposit or withdraw cash, with a long tale of woe about her son each time. Each time she leaves. she closes her eyes and gives a warm "namaste", as if to say how happy she feels to be relieved of her worries and to know that her money is safe with us.

Of course, there are frustrating moments when a customer deposits Rs. 10,000/- today, takes a loan of Rs. 500/- the next, Rs. 400/-the next Rs. 300/- the next day and so on and on in little amounts, till we are forced to ask him to close the deposit before maturity. Then there is the customer who comes so regularly that from the door itself he gives a loud salute to all and enters the branch. Yes, rural banking is truly a satisfying. exciting experience, not to mention the beautiful countryside and fresh air thrown in as bonus.

जिल्द 11 अंक 03, Vol 11, issue 03, 1989

First Day in the Office

M.S. Subramanya, Stenographer, ZAO, Bangalore

Being unemployed, with only a science degree to my name. I often used to feel that past good deeds only can manifest in wonderful things as finding a job. Naturally, my joy knew no bounds on the day I received the appointment order of our Bank. Feeling great, dressed neat and tidy, I cycled to the Office to be there well within the scheduled time. After completion of the usual duty-report formalities, I was asked to sit before a lifeless, most innocuous object TYPEWRITER. Though a Stenographer, I was also given manuscripts for typing. The work was started with the only aim of getting praise for my work, by typing letters quickly and of course, without exhibiting any nervousness of being new.

Of the manuscripts given for typing on that eventful day, there was a process note of a Credit proposal from a manufacturing unit drafted by a Sr Officer (C.A.). Thinking of getting a pat on the back, I took extra care to see that there should be no spelling or over-typing mistakes. The typing of that process note was completed very cautiously.

Expecting many good words for my work. I personally took that very quickly & neatly-typed-Note to that Sr. Officer As though after a big task very successfully completed. I returned to my seat only to be called by that Sr. Officer immediately. I ran to his seat and stood very humbly before him. And politely uttered, "Did you call me, Sir?

Nodding his head, he asked, "Since when are you in our Bank? I said, "Sir, this is the first day". A moment of silence elapsed which made me very uncomfortable. He suddenly started to grin from ear to ear. I became more confused. He stopped laughing and questioned. "How exactly is the abbreviation RM used? Pat came my reply "REGIONAL MANAGER as if I was well informed about the Bank on the first day itself. Remarking "Good", my attention was drawn to a paragraph which had been typed as under:

"The Regional Manager's consumption during the quarter ended is on the higher side compared to the previous quarter. The sales and finished goods figures do not compare favourably with Regional Manager's consumption……

The fact that the abbreviation R.M. is also used to mean raw material came to light only then. This first day learning experience in the office remains indelibly printed in my memory.

उच्च प्रबंधन द्वारा खेल गतिविधियों को प्रोत्साहन

दिनांक 24.10.2025 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, श्री श्रीनिवास वरदराजन, चेयरमैन, कार्यपालक निदेशक गण श्री नितेश रंजन, श्री एस.रामसुब्रमणियन, श्री संजय रुद्र की उपस्थिति में भुवनेश्वर में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया महिला हॉकि टीम एवं स्पोर्ट्स हॉस्टल राउरकेला महिला हॉकि टीम के बीच एक्सिबिशन मैच का आयोजन किया गया, जिसमें बैंक की महिला हॉकि टीम विजेता रही।

दिनांक 13.12.2025 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की उपस्थिति में जयपुर अंचल के स्टाफ सदस्यों हेतु 'स्पोर्ट्स मीट 2025- जयपुर अंचल' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री अजय कुमार, अंचल प्रमुख सहित उप अंचल प्रमुख एवं अंचल के समस्त क्षेत्र प्रमुख उपस्थित रहे।

दिनांक 24.12.2025 को केंद्रीय कार्यालय में श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की अध्यक्षता में बैंक में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु स्पोर्ट्स मीट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री सुरेश चंद्र तेली, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं), श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं) तथा बैंक के क्रिकेट, कबड्डी एवं हॉकी खिलाडी, एथलीट तथा स्टाफ सदस्य उपस्थिति रहे।

दिनांक 25.12.2026 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की उपस्थिति में मुंबई अंचल में 'यूनियन बैंक चैम्पियन लीग' मैच का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशकगण श्री नितेश रंजन तथा श्री एस. रामसुब्रमणियन, श्री अजय कुमार सिंह, सीवीओ, श्री सुरेश चन्द्र तेली, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक, श्री बिरजा प्रसाद दास, अंचल प्रमुख सहित केन्द्रीय कार्यालय तथा मुंबई अंचल से अन्य कार्यपालकगण एवं स्टाफ उपस्थित रहे।

दिनांक 08.02.2026 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा ठाणे हाफ मैराथन का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक तथा श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशक, मिलिंद सोमान, मुख्य अतिथि सहित बैंक के अन्य कार्यपालकगण, स्टाफ सदस्य सहित अन्य रनर उपस्थित हुए।

दिनांक 08.03.2026 को अंचल कार्यालय, दिल्ली द्वारा श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की उपस्थिति में क्रिकेट मैच आयोजित किया गया, जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली- दक्षिण की टीम विजेता रही साथ हैं श्री संजय नारायण, अंचल प्रमुख तथा अन्य कार्यपालक एवं स्टाफ सदस्य।

दिनांक 22.03.2026 को अंचल कार्यालय, वाराणसी द्वारा "रन फर क्लीन गंगा" मैराथन का आयोजन किया गया। मैराथन के विजेताओं के साथ मुख्य अतिथि-अभिनेता श्री मिलिंद सोमन तथा श्री बैजनाथ सिंह, अंचल प्रमुख।

दिनांक 14-19.02.2026 को गोवा, नावलिम में आयोजित अखिल भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र फुटबॉल टूर्नामेंट–2026 में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की टीम ने उप विजेता स्थान प्राप्त किया।

समाचार केंद्र से

गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर राष्ट्र ध्वज फहराते हुए श्री नितेश रंजन तथा श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशकगण। साथ हैं श्रीमती वल्लूरु माधवी, महाप्रबंधक तथा लेफ़्टिनेंट कर्नल संजय कुमार, मुख्य सुरक्षा अधिकारी।

दिनांक 28.01.2026 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ ने श्री योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश से शिष्टाचार भेंट किया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश में विकासात्मक पहलों तथा बैंक की विकास रूपरेखा पर विचार विमर्श किया गया। साथ हैं श्री राजेश कुमार, अंचल प्रमुख, लखनऊ तथा डॉ राजेश कुमार, सहायक महाप्रबंधक, कें.का.।

दिनांक 07.03.2026 को केंद्रीय कार्यालय, मुंबई में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह में विशेष अतिथियों के साथ हैं श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ तथा कार्यपालक निदेशकगण श्री नितेश रंजन, श्री एस. रामसुब्रमणियन, श्री संजय रुद्र, श्री अमरेश प्रसाद और श्री अजय कुमार सिंह, सीवीओ।

दिनांक 10.01.2026 को भारतीय बैंक संघ द्वारा आयोजित 21वें वार्षिक बैंकिंग प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2025 में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को "बेस्ट टेक्नॉलोजी बैंक ऑफ द इयर" के प्रतिष्ठित पुरस्कार सहित 4 श्रेणियों में सम्मानित किया गया। श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक ने मुख्य महाप्रबंधकगण तथा महाप्रबंधकगण के साथ पुरस्कार प्राप्त किए।

दिनांक 06.01.2026 को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा चंडीगढ़ में आयोजित सम्मेलन में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को कृषि अवसंरचना कोष योजना के अंतर्गत "शीर्ष संवितरणकर्ता बैंक" के रूप में सम्मानित किया गया है। बैंक की ओर से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री ए. के. विनोद, मुख्य महाप्रबंधक तथा श्री मनोज कुमार, महाप्रबंधक।

दिनांक 28.03.2026 को बैंक को प्रतिष्ठित स्कॉच बीएफएसआई अवार्ड 2025–26 से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार खुदरा ऋण के अंतर्गत हरित वित्तपोषण, खुदरा ऋण में वृद्धि, क्रेडिट कार्ड्स के लिए डिजिटल जर्नी एवं दृष्टिदिव्यांगों हेतु स्पर्श क्रेडिट, जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस श्रेणी में प्राप्त हुआ। बैंक की ओर से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्रीमती रेणु के नायर, महाप्रबंधक तथा श्री संजय नारायण, अंचल प्रमुख, दिल्ली ।

दिनांक 17.02.2026 को श्री राजेश कुमार, अंचल प्रमुख, लखनऊ द्वारा किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ के साथ कर्मचारियों के वेतन खातों के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर।

दिनांक 30.01.2026 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने सी2एफओ फैक्टरिंग सोल्यूशन प्राईवेट लिमिटेड के साथ मास्टर फाइनेंसर एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किया है । इस अवसर पर श्री अभिजीत बसाक, मुख्य महाप्रबंधक, श्री सिद्धार्थ मुजुमदार, महाप्रबंधक, श्री प्रसाद रामस्वामी, महाप्रबंधक सहित अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे।

दिनांक 22.01.2026 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा भारतीय बैंक संघ एवं भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान की एक डिजिटल पहल के अंतर्गत, पीएसबी अलायन्स प्र.लि. तथा नेशनल ई गवर्नेंस सर्विसेज लिमिटेड द्वारा विकसित डिजिटल बैलेंस कन्फर्मेशन पोर्टल के साथ एकीकरण हेतु समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर श्री रविशंकर, श्री अभिजीत बसाक, श्रीमती शलिनी मेनन, महाप्रबंधकगण उपस्थित रहे।

समाचार (उत्तर)

दिनांक 16.02.2026 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा श्री काशी विश्वनाथ मंदिर शाखा का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर श्री सुरेश चन्द्र तेली, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री बैजनाथ सिंह, अंचल प्रमुख तथा अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे।

दिनांक 10.02.2026 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी के संयोजन में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के माननीय सदस्य श्री लव कुश कुमार की अध्यक्षता में रॉबर्ट्सगंज, सोनभद्र (उत्तर प्रदेश) में सभी बैंकों के क्षेत्र प्रमुखों के साथ बैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर श्री शैलेंद्र कुमार, क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी उपस्थित रहे।

दिनांक 29.01.2026 को वाराणसी में श्री बैजनाथ सिंह, अंचल प्रमुख, वाराणसी द्वारा मिशन सुरक्षा ड्राइव के अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु, 218 बैंक मित्रों को सम्मानित किया गया।

दिनांक 18.03.2026 को श्री कमलेश प्रसाद सिंह, उप महाप्रबंधक, कें.का. द्वारा अंचल कार्यालय भोपाल का दौरा किया गया। इस अवसर पर श्री राजीव कुमार झा, अंचल प्रमुख सहित अन्य कार्यपालक एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

दिनांक 25.02.2026 को श्री अनुज कुमार सिंह, क्षेत्र प्रमुख, रायपुर तथा राज्य सरकार की विशेष सचिव (वित्त) श्रीमती शीतल शाश्वत वर्मा द्वारा छत्तीसगढ़ शासन के कर्मचारियों हेतु विशेष वेतन खाता पैकेज के एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए।

दिनांक 18.02.2026 को श्री राजेश कुमार, अंचल प्रमुख, द्वारा लखनऊ सचिवालय प्रशासन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ के साथ कर्मचारियों के वेतन खातों के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

दिनांक 10.02.2026 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने उत्तराखंड पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड के साथ निगम के कर्मचारियों हेतु विशेष वेतन खाता पैकेज हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

समाचार (पूर्व)

दिनांक 24.02.2026 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी का दौरा किया गया। साथ ही इस अवसर पर नवीनीकृत गुवाहाटी मुख्य शाखा का शुभारंभ किया गया। साथ हैं श्री दिलीप मिश्रा, अंचल प्रमुख, श्री अभिनव भट्ट, क्षेत्र प्रमुख, गुवाहाटी, श्री पिंकु शर्मा, शाखा प्रमुख ।

दिनांक 22.01.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, ब्रह्मपुर द्वारा चुनिन्दा ग्राहकों हेतु एमएसएमई मेगा आउटरीच कैंप का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री हरेकृष्णा दास, अंचल प्रमुख तथा श्रीमती लूसी संगीता कुजूर, क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य स्टाफ एवं ग्राहक उपस्थित रहे।

दिनांक 13.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, ब्रह्मपुर द्वारा टीपीएसओडीएल के साथ वेतन खाते के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर श्री हरेकृष्णा दास, अंचल प्रमुख, श्रीमती लूसी संगीता कुजूर, क्षेत्र प्रमुख, श्री संदीप खूंटिया, सहायक महाप्रबंधक सहित टीपीएसओडीएल के स्टाफ भी उपस्थित रहे।

दिनांक 04.02.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, ब्रह्मपुर में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन वाले स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) को श्रीमती लूसी संगीता कुजूर, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री बिभूति भूषण, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा सम्मानित किया गया।

समाचार (पश्चिम)

दिनांक 07.02.2026 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा अंचल कार्यालय गांधीनगर में एमएलपी एवं आरएलपी, गांधीनगर के नए परिसर का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर श्री अखिलेख कुमार, अंचल प्रमुख सहित अन्य कार्यपालकगण एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

दिनांक 16.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे मेट्रो में स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री अमरेश प्रसाद, कार्यपालक निदेशक। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन वाले शाखा प्रमुखों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री मयंक भारद्वाज, क्षेत्र प्रमुख, श्री विकास शिंदे, उप क्षेत्र प्रमुख तथा श्री अभिषेक कुमार, एमएलपी प्रमुख सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे ।

दिनांक 04.02.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, बोरीवली द्वारा म्हाडा, गृहनिर्माण भवन कलानगर, बांद्रा में श्री संजीव जायसवाल (आई.ए.एस) सीईओ, म्हाडा, श्री मुकेश कुमार बब्बर, क्षेत्र प्रमुख, बोरीवली की अध्यक्षता में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर म्हाडा के मृत कर्मचारियों के नामित परिजनों को बीमा दावा चेक प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री सावन शिव, उप क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य म्हाडा कार्यपालक तथा स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

दिनांक 20.02.2026 को श्री लोकनाथ साहू, महाप्रबंधक, कृषि कारोबार विभाग, केंका, मुंबई द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा का दौरा किया गया। इस अवसर पर कृषि कारोबार कैंप तथा शाखा प्रमुखों की विशेष कारोबार समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। साथ हैं श्री आशीष सुवालका, क्षेत्र प्रमुख तथा अन्य कार्यपालक।

दिनांक 07.02.2026 को अहिल्यानगर क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय कृषि मेला 2026 के आयोजन के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, अहिल्यानगर द्वारा स्टाल लगाया गया। इस अवसर पर श्री सुनील कुमार यादव, क्षेत्र प्रमुख तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

दिनांक 14.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर के उमरेड शाखा द्वारा राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शाखा प्रमुख, अन्य स्टाफ तथा ग्राहक उपस्थित रहे।

दिनांक 21.01.2026 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने जिला परिषद, नासिक के साथ API आधारित भुगतान एकीकरण को लागू करने हेतु साझेदारी की है, जिसका उद्देश्य 1400 से अधिक ग्राम पंचायतों में निधियों के वितरण को सरल और सुव्यवस्थित बनाना है। इस अवसर पर श्री ओमकार पवार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद, नाशिक तथा श्री प्रभात कुमार, क्षेत्र प्रमुख, नाशिक सहित अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे ।

समाचार (दक्षिण)

दिनांक 23.01.2026 को राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री एन. चंद्रबाबु नायडु, मुख्यमंत्री, आंध्र प्रदेश, श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, श्री सी. वी. एन. भास्कर राव, अंचल प्रमुख, सहित अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे ।

दिनांक 23.03.2026 को श्री ए. रेवंत रेड्डी, मुख्यमंत्री, तेलंगाना द्वारा टीएसएसपीडीसीएल के दिवंगत कर्मचारी के उत्तराधिकारियों को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के यूनियन सुपर सैलरी अकाउंट बीमा योजना के अंतर्गत ₹1 करोड़ का चेक सौंपा गया। इस अवसर पर श्री मल्लू भट्टी विक्रमार्क, उप मुख्यमंत्री, श्री रविंद्र बाबु, अंचल प्रमुख, हैदराबाद, श्री जितेश वी. पाटील, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, टीजीएसपीडीसीएल (आईएएस), श्री टी. कामेश्वर राव, उप अंचल प्रमुख, श्री आर. सत्यनारायण, क्षेत्र प्रमुख, महबूबनगर, श्री सरोजा नेथागनी, शाखा प्रबंधक, मेट्टुगड्डा सहित अन्य स्टाफ उपस्थित रहे।

दिनांक 12.01.2026 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु के नवीकृत परिसर का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर श्री राजेंद्र कुमार, अंचल प्रमुख, मंगलूरु, श्रीमती तेजस्विनी वी.सी., क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य कार्यपालक एवं स्टाफ उपस्थित रहे ।

दिनांक 06.02.2026 को चेन्नै में चेन्नै मेट्रो में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के ब्रांडिंग का उद्घाटन श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री विट्ठल बनशंकरी, अंचल प्रमुख सहित अन्य कार्यपालक एवं स्टाफ उपस्थित रहे ।

दिनांक 26.02.2026 को केंद्र सरकार के प्रमुखों के साथ आयोजित कार्यक्रम के दौरान श्री एम. रविंद्र बाबू, अंचल प्रमुख द्वारा श्री किशन रेड्डी, केंद्रीय मंत्री से शिष्टाचार भेंट की गई ।

दिनांक 20.01.2026 को श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशक का अंचल कार्यालय, बेंगलूरु में स्वागत करते हुए श्री कल्याण वर्मा, अंचल प्रमुख, बेंगलूरु। इस अवसर पर श्री एच. जी. अरविंद, उप अंचल प्रमुख, श्री सी. वी. सुधीर, उप अंचल प्रमुख, श्री असीम कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु दक्षिण तथा श्री महेश जे., क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु पूर्व उपस्थित रहे।

दिनांक 23.01.2026 को श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशक द्वारा अंचल कार्यालय, बेंगलूरु परिसर में स्वच्छता पखवाड़ा के उपलक्ष्य में वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर श्री विपन सिंह, मुख्य महाप्रबंधक – लेखापरीक्षा एवं निरीक्षण, श्री विपिन कुमार शुक्ला, अंचल प्रमुख, पुणे; श्री कल्याण वर्मा, अंचल प्रमुख, बेंगलूरु, श्री एच. जी. अरविंद, उप अंचल प्रमुख, श्री सी. वी. सुधीर, उप अंचल प्रमुख, श्री राम प्रसाद, क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु उत्तर सहित अन्य कार्यपालकगण तथा स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

दिनांक 07.02.2026 को अंचल कार्यालय, हैदराबाद द्वारा टीजीएसआरटीसी (वानपर्थी शाखा एवं मौलाली शाखा) के दिवंगत कर्मचारियों के उत्तराधिकारियों को ₹1.00 करोड़ की यूएसएसए मृत्यु बीमा दावा राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर श्री अमरेश प्रसाद, कार्यपालक निदेशक, श्री एम. रविंद्र बाबू, अंचल प्रमुख, श्री वाई. नागी रेड्डी, प्रबंध निदेशक, टीजीएसआरटीसी (आईपीएस) उपस्थित रहे।

दिनांक 13.02.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, श्रीकाकुलम द्वारा श्री शांतनु कुमार दाश, महाप्रबंधक, कें. का., की अध्यक्षता में कासा, रिटेल एवं एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री पैडि राजा, क्षेत्र प्रमुख उपस्थित रहे ।

दिनांक 06–08.02.2026 को हैदराबाद में आयोजित क्रेडाई प्रॉपर्टी शो में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा स्टाल लगाया गया। इस अवसर पर श्री एम. रविंद्र बाबू, अंचल प्रमुख सहित अन्य कार्यपालक एवं स्टाफ उपस्थित रहे ।

दिनांक 26.02.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण) के श्री कल्याण वर्मा, अंचल प्रमुख तथा कर्नाटक राज्य न्यायिक विभाग के मुख्य न्यायाधीश एवं जस्टिस जयप्रकाश जी के मध्य वेतन खाता हेतु एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर श्री सुधीर, उप अंचल प्रमुख, श्री भृंगेश एम., क्षेत्र प्रमुख उपस्थित रहे ।

दिनांक 20.02.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (उत्तर) के सहकारनगर मुख्य शाखा में जोश 2.0 रीटेल ड्रिज़ल कैंप का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री कल्याण वर्मा, अंचल प्रमुख श्री जी. रामप्रसाद, क्षेत्र प्रमुख श्री लक्ष्मीनारायण भट्ट, आरएलपी प्रमुख तथा श्री हरेराम, शाखा प्रबंधक तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

दिनांक 25.02.2026 को श्री रिषु श्रीवास्तव, सहायक महाप्रबंधक, कें. का., ने क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (उत्तर) का दौरा किया। इस अवसर पर मल्लेश्वरम 18 वाँ क्रास शाखा में जोश 2.0-रीटेल ड्रिजल कैंप बैठक का आयोजन किया गया तथा क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (उत्तर) के शीर्ष 03 शाखाओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री कल्याण वर्मा, अंचल प्रमुख, श्री जी रामप्रसाद, क्षेत्र प्रमुख तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

दिनांक 13.01.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण) के ग्राहक पद्मश्री श्री के एस राजण्णा को श्री असीम कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख द्वारा सम्मानित किया गया। श्री के एस राजण्णा, ने 2002 में पैरालिंपिक्स में दो मेडल प्राप्त किए थे।

दिनांक 11.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम द्वारा चयनित शाखाओं के ग्राहकों हेतु ग्राहक बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री नरेश कुमार वाई, क्षेत्र प्रमुख, श्री दीपक चार्ली, उप क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य स्टाफ एवं ग्राहक उपस्थित रहे।

सुश्री निरंजना सुपुत्री श्री अजीतकुमार के. बी., वरिष्ठ प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय तृश्शूर का चयन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में वैज्ञानिक के पद पर हुआ है। सुश्री निरंजना, इसरो के GSLV Mk III (बाहुबली) एवं ब्लूवर्ड 2 जैसे महत्वपूर्ण उपग्रह प्रक्षेपण अभियानों की टीम की सदस्य रही हैं। इस उपलब्धि के लिए उन्हें दिनांक 13.01.2026 को श्री जयदेव नायर, उप अंचल प्रमुख एवं उप महाप्रबंधक द्वारा सम्मानित किया गया।

आपकी पाती

यूनियन धारा गृह-पत्रिका के अक्टूबर–दिसंबर 2025 अंक को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। यह अंक विषय-वस्तु, प्रस्तुति, विचारों की समृद्धि तथा गहनता की दृष्टि से अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायक है। इस अंक में बैंकिंग क्षेत्र से जुड़े समसामयिक विषयों, विशेष रूप से ई-कॉमर्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल सेवाओं, आंतरिक लेखा-परीक्षण, व्यवसाय एवं वित्त से संबंधित लेखों के साथ-साथ कविताओं, यात्रा-वृत्तांतों तथा विभिन्न क्षेत्रों एवं अंचलों/ क्षेत्र कार्यालयों की विशेष गतिविधियां और रोचक सामग्री का समावेश किया गया है। इससे पत्रिका ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ पठनीय और आकर्षक भी बन गई है। यह पत्रिका बैंक के शीर्ष प्रबंधन की नीतियों, रणनीतियों एवं पहलों को कर्मचारियों तक पहुँचाने के साथ-साथ उनकी रचनात्मक अभिव्यक्तियों को भी प्रभावी मंच प्रदान कर रही है। पत्रिका की भाषा-शैली तथा द्विभाषी स्वरूप इसकी व्यापक पहुँच और समावेशी दृष्टिकोण को और अधिक सुदृढ़ बनाते हैं। यूनियन धारा ने न केवल बैंकिंग एवं प्रशासनिक विषयों पर सार्थक जानकारी प्रदान की है, बल्कि संवैधानिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना तथा राष्ट्र निर्माण में सहभागिता की भावना को भी प्रोत्साहित किया है।

इस उत्कृष्ट अंक के सफल प्रकाशन हेतु यूनियन धारा की संपादकीय टीम एवं सभी योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आशा है कि भविष्य में भी यह पत्रिका इसी प्रकार ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं सार्थक सामग्री प्रस्तुत करती रहेगी।

कल्याण वर्मा

अंचल प्रमुख, अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

आपकी तिमाही पत्रिका 'यूनियन धारा' की प्रति हमें प्राप्त हुई। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद। 'यूनियन धारा' पत्रिका के प्रकाशन के स्वर्णिम 50 वर्षों की आपको हार्दिक बधाई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ 'यूनियन धारा' के 50 वर्षों की यात्रा को अत्यंत आकर्षक रूप से प्रदर्शित कर रहा है। इस द्विभाषी पत्रिका में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी के भी उत्कृष्ट लेखों को सम्मिलित किया गया। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही सुंदर है एवं चित्रों और सामग्री का संयोजन बहुत ही बहतरीन ढंग से किया गया है। 'यूनियन धारा' पत्रिका के इस अंक में विभिन्न विषयों पर सामयिक लेखों को समाहित किया गया है। पत्रिका के इस अंक में 'बैंकिंग में सतर्कता – हमारी प्राथमिकता', 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता', 'प्रदूषण की समस्या एवं वाहनों का बीएस-VI मानक' आदि अत्यंत ज्ञानवर्द्धक लेखों में से एक हैं, वहीं 'बदल गया है जमाना' और 'छोड़ के आया हूँ' कविताओं ने पत्रिका को बहुत ही रोचक बना दिया है। इसके अतिरिक्त, 'समाचार केंद्र स्तंभ' में बैंक के विभिन्न कार्य और गतिविधियों को सचित्र प्रदर्शित किया गया है। 'शांत, सुकूनदायक और सुरम्य - माथेरान' एक अद्त लेख है जो हमें प्रकृति के सामीप्य का अनुभव कराता है। खेल के क्षेत्र में भुवनेश्वर में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, महिला हॉकी टीम की जीत अत्यंत सराहनीय है। 'मिसेज इंडिया (लीगेसी) - 2025' की विजेता कीर्ति सरंगल का साक्षात्कार काफी प्रेरणादायक है। 'मिलिए "अंकुश" के लाल्या से', वर्ष 1988 में दीपक कीर्तन द्वारा सुहास पलशीकर के साक्षात्कार के माध्यम से आपके बैंक की विशिष्ट प्रतिभा से जुड़ने का सुखद अवसर प्राप्त हुआ। बैंकिंग और प्रौद्योगिकी के विभिन्न विषयों से संबंधित अंग्रेजी लेख अत्यंत सूचनात्मक और शिक्षाप्रद है। 'यूनियन धारा' पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सृजनात्मक लेखों हेतु रचनाकारों को अनंत शुभकामनाएँ एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। आगामी अंकों हेतु अशेष शुभकामनाएँ,

डॉ. हेमलता

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा एवं प्रभारी), यूको बैंक

यूनियन धारा" का दिसंबर 2025 अंक "स्वर्णिम वर्ष विशेषांक" के रूप में प्रकाशित होना हम सभी के लिए अत्यंत गर्व और प्रसन्नता का विषय है। केंद्रीय कार्यालय द्वारा प्रकाशित यह द्विभाषी तिमाही पत्रिका केवल बैंक की उपलब्धियों का दस्तावेज नहीं, बल्कि हमारे संगठन की विचारशीलता, रचनात्मकता एवं प्रगतिशील सोच का सशक्त प्रतिबिंब भी है। इस विशेषांक में बैंकिंग, तकनीक, अनुपालन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल परिवर्तन, श्रम संहिताओं, पर्यावरण, वित्तीय समावेशन तथा सामाजिक विषयों पर विविध लेखों का समावेश किया गया है। साथ ही कविताओं, प्रेरणादायी रचनाओं एवं साहित्यिक अभिव्यक्तियों ने इस अंक को और अधिक समृद्ध एवं संवेदनशील बनाया है। यह विविधता दर्शाती है कि यूनियन बैंक केवल वित्तीय सेवाओं तक सीमित नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और सामाजिक चेतना के विकास हेतु भी सतत प्रतिबद्ध है। स्वर्णिम वर्ष की यह यात्रा बैंक के लाखों ग्राहकों के विश्वास, कर्मचारियों की निष्ठा तथा प्रबंधन के दूरदर्शी नेतृत्व का परिणाम है। 50 वर्षों की यह गौरवपूर्ण उपलब्धि हमें अपनी समृद्ध विरासत पर गर्व करने के साथ-साथ भविष्य की चुनौतियों के प्रति और अधिक सजग एवं उत्तरदायी बनने की प्रेरणा देती है। मुझे विशेष प्रसन्नता है कि इस अंक में समकालीन विषयों जैसे "Artificial Intelligence", "DPDP Act 2023", "Digital Valuation and Digital Title Search" तथा "Architecture of Invisible Finance" जैसे लेखों को स्थान दिया गया है, जो बैंकिंग क्षेत्र में तेजी से हो रहे परिवर्तन और नवाचार को रेखांकित करते हैं। साथ ही साहित्यिक रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं को जीवंत बनाए रखने का महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। पटना अंचल की ओर से केंद्रीय कार्यालय, संपादकीय मंडल तथा सभी लेखकों एवं रचनाकारों को इस उत्कृष्ट विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आशा है कि "यूनियन धारा" भविष्य में भी ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं रचनात्मक सामग्री के माध्यम से हम सभी को नई दिशा प्रदान करती रहेगी तथा बैंक की गौरवशाली परंपराओं को और अधिक सुदृढ़ बनाएगी।

गुणा नंद गामी

अंचल प्रमुख, अंचल कार्यालय, पटना

Union Dhara, R.N.27989/76

पंबन ब्रिज, रामेश्वरम
दासरी प्रसाद राव
अं.का., विशाखपट्टणम

Printed and Published by Gayathri Ravi Kiran on behalf of Union Bank of India, Printed at M/s. Printrade Issues (INDIA) Pvt. Ltd., Plot No. EL-179, TTC Industrial Area, Electronic Zone, Mahape, Dist. Thane - 400 710, Maharashtra and Published from Union Bank of India, Union Bank Bhawan, 239, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021. Editor - Gayathri Ravi Kiran.